अक्टूबर-दिसम्बर, 2023 (वर्ष-4 अंक-14)

ISSN : 2436-5017

हिंदी की गूँज

जापान से निकलने वाली प्रथम
हिंदी साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका

हिंदी की गूंज

हिंदी की गूंज

हिंदी की गूंज

अंतरराष्ट्रीय पत्रिका

हिंदी की गूंज

हिंदी की गूंज

रमा शर्मा
संस्थापक एवं मुख्य संरक्षक, जापान

हिंदी की गूंज की देशी और विदेशी शाखाएँ
संरक्षक इंद्रजीत शर्मा जी
1. न्यूयार्क
129–15, 101 एवेन्यू, रिमंड हिल, न्यूयार्क
9172739744

मॉस्को, रशिया में
सुश्री श्वेता सिंह उमा
Address office:-
Proezd zavoda, Serp 1 Molot
10 BC, Integral, Moscow
Russia-111250
Phone : +79254027789

लंदन में
शामलाल पुरी
16 UPPER WOBURN PLACE,
LONDON WC1H 0AF
Phone number-+44 7432 220184

ऑस्ट्रिया में
सुश्री सुनीता चावला
Laaerberg Straße 32/2/71
1100 vienna (Austria)
फोन नं. +43 650 6741006

प्रभारी उत्तराखंड में
डा. सतीश कुमार शास्त्री
अंतरराष्ट्रीय संस्कृति प्रचारक
शास्त्रीय भवन अलावलपुर, हरिद्वार,
उत्तराखंड, भारत, Pin-247671

भारत पानीपत में
सुश्री कंचन सागर
1094, सेक्टर 13/17, हुड्डा, पानीपत
(हरियाणा) भारत
फ़ोन–93554 72819

संपादक मंडल

संस्थापक
रमा शर्मा, जापान

संरक्षक
रमा शर्मा, जापान
इंद्रजीत शर्मा, न्यूयार्क (अमेरिका)
डॉ. विदुषी शर्मा, नई दिल्ली, भारत

संपादक
प्रोफ़ेसर स्वाति पाल (नई दिल्ली)
विनोद पांडेय (ग़ाज़ियाबाद)

सह संपादक
कविता गुप्ता (उत्तर प्रदेश)
विवेक शर्मा (नई दिल्ली)

वरिष्ठ परामर्श दाता
डॉ हरीश नवल
डॉ स्नेहसुधा नवल

विदेशी प्रतिनिधि
शामलाल पुरी, लंदन
श्वेता सिंह उमा, मॉस्को
मोनी बिजय, नेपाल
सुरेश पांडेय, स्वीडन
सुनीता चावला, ऑस्ट्रिया

भारतीय प्रतिनिधि
डॉ सतीश शास्त्री, हरिद्वार
कंचन सागर, पानीपत
विजयापंत तुली,उत्तराखंड
मनीषा जोशी, नोएडा
प्रशांत अवस्थी प्रखर, कानपुर
अंशु जैन, देहरादून

स्वास्थ्य प्रतिनिधि
सुनीता चाँदला, अमेरिका

विशेष सहयोगी
ओमप्रकाश सपरा
राकेश छोकर
डॉ सुनीता चौहान
(बोध गया विश्वविद्यालय)

सैन्य परिशिष्ट प्रतिनिधि
तृप्ति मिश्रा, माहू

ज्योतिषाचार्य
डॉ विनय भारद्वाज, बोधगया विश्वविद्यालय

रक्षा कवच प्रतिनिधि
श्री जयप्रकाश मिश्रा (पुलिस अधीक्षक)
पटना बिहार

मुख्य कार्यालय
टोक्यो जापान
व्हटसअप नंबर
जापान
00818061658299
भारत
9289641577

Twitter @hindikigoonj

Instagram @hindikeegoonj
@punjabidigoonj

YouTube @HindikiGoonj, Tokyo Japan
YouTube @Punjabidigoonj, Tokyo Japan

Facebook Page @ हिंदी की गूंज,
टोक्यो जापान

पत्रिका की सदस्यता लेने, रचना भेजने हेतु संपर्क करें
9289641577

संपादन, संचालन, प्रकाशन एवं सभी सदस्य अवैतनिक हैं। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। संपादक एवं प्रकाशक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित रचनाओं के मौलिक होने का उत्तरदायित्व लेखक पर होगा। पत्रिका जापान के ISSN नंबर के साथ हर तीन माह बाद प्रकाशित होगी। प्रकाशित होने की कोई विशेष तिथि नहीं है, पत्रिका त्रैमासिक है।

अनुक्रम

संपादक मंडल–1

संपादक की कलम से

विनोद पांडेय (संपादक)–3
रमा शर्मा, जापान (संस्थापक एवम् मुख्य संरक्षक)–3

बधाई संदेश

डॉ विदूषी शर्मा –4

कविता / गीत / ग़ज़ल

नही रहना मुझे पिंजरबद्ध /डॉ शिप्रा मिश्रा – 4
सच्चाई / इंदु नांदल, इंडोनेशिया – 5
प्रवास / विश्वास दूबे, नीदरलैंड – 5
पांच प्राण / डॉ नीतिन उपाध्ये, दुबई – 7
प्रेम ज्योति / ललिता मिश्रा ललित – 7
हमने विदेश में अपना देश बसाया / नीलू गुप्ता, कैलिफोर्निया – 8
अपने भारत से शान है अपनी / असलम बेताब – 10
वीरों की गाथा / ऐश्वर्या संपन्ना,मुंबई – 10
गूंज हमारी हिंदी की / निधि कुमारी सिंह – 10
उजड़ा प्यार बसी दुनिया/कर्नल डॉ गिरिजेश सक्सेना – 11
नवप्रभात / डॉ विनय कुमार श्रीवास्तव – 11
मैं आदमी का सार हूं / कविता गुप्ता – 12
मॉरीशस / अंजू घरभरन, मॉरीशस – 12
पीपल को छांव/ अभिषेक त्रिपाठी आयरलैंड – 13
मेरी अंतिम सांसों तक क्या / संजय शुक्ल, कोलकाता – 14
यसुदा नंदन नंद दुलारे / डॉ सुमन सुरभि – 17
ऐ मेरी क़लम/रमा शर्मा, जापान–17
आज़ादी के मतवाले / उषा किरण "मानव" – 17
प्रवासी / आशीष मिश्रा , लंदन – 18
ख्याल / आशीष मिश्रा – 18
ग़ज़लें / जयप्रकाश मिश्रा – 19
रब की मर्ज़ी, हर ख्वाहिश के ऊपर है/ विनोद पाण्डेय – 20
तेरी याद ,ग़ज़ल/ अतीश मिश्रा बुन्नू , बिहार – 24
बन गए आंसू मेरे / गीतेश्वर बाबू घायल – 25
कविता में कहानी / पारुल सिंह, नोएडा – 25
कितने प्रश्न मुंह बाए खड़े हैं / अरुण भगत – 26
क्षणिकाएं/ मिथलेश दीक्षित – 32
आकांक्षा/ सिमरन गिरधर , हरियाणा – 48
खरी बात कहने वाले सीधे होते हैं / कर्नल आदि शंकर मिश्र "आदित्य" लखनऊ – 50
बाजारू औरतें/ तृप्ति मिश्रा मदू – 51
श्री राम मंदिर / राजीव नंदन मिश्र – 51
जल है तो कल है/ शिव्या पटेल – 66

कहानी / लघुकथा

लगन / प्रीति मिश्र , शिकागो – 6
तर्पण/ डॉ उर्मिला सिन्हा – 6
अंश / प्रगति गुप्ता – 8
पति – पत्नी / शशि महाजन , नाइजीरिया – 9
दौड़ / डॉ रामनिवास मानव – 12
अपराधी कौन है? / डॉ अंकिता बाहेती, कतर – 13
हां मैं पाकिस्तानी हूं / सुशील कुमार आजाद – 14
खाने का डिब्बा / सीमा वर्णिका, कानपुर – 16
घरौंदा – भाई दूज / माधुरी भट्ट – 22
सहारा / सरोज आहूजा, हरियाणा भारत – 33
घर में बहुत शांति पसरी हुई थी / अंशु जैन देहरादून – 48

शोध आलेख / लेख / आलेख

अभिज्ञान शाकुन्तलम में नैतिक मूल्य / डॉ गायत्री पाण्डे – 20
अधिकार / दीक्षा तिवारी – 27
जीवन का यथार्थवादी सौंदर्य/ डॉ अम्बे कुमारी– 31
कुरआन के आईने में धर्म और वैश्विक समाज / डॉ सी एल सोनकर, प्रयागराज – 53
खजुराहो – काम ऊर्जा का राजपथ / रामा तक्षक, नीदरलैंड – 59

दोहे / हाइकु

'वे' / राजीव नामदेव "राना लिधौरी" टीकमगढ़ – 18

धारावाहिक उपन्यास

तलाश अस्तित्व की, भाग –3 / अजय शर्मा – 23

संस्मरण

मेरी आपबीती एक सीख / कंचन सागर, हरियाणा – 34
हमारी मातृभाषा / ज्योत्स्ना गर्ग, हरियाणा – 35

स्वास्थ्य लेख

मस्तिष्क और आंत/ सुनीता चाँदला– 52

पुस्तक समीक्षा

आतप जीवनम् / डॉ अम्बे कुमारी – 28

बच्चों की चित्रकारी

कवर पेज/आन्या रॉय – 65, अंशिका शर्मा – 12, शर्वी चहल – 13, शिव्या पटेल –18, तमन्ना – 24, नमस्वी पांडेय – 26, धैर्या चौहान – 28, रिदम ठाकुर – 30, आरजू गर्ग – 50, आराध्या सागर – 66, ईशाना – 66, नीना गायत्री बदलानी – 66,जसविंदर कौर – 66,वैष्णवी पाण्डेय प्रयागराज – 66, खुशी कौशाल – 66, ध्वनि गुप्ता – 66, अथर्व अमर देशमुख – 66, आर्यन अतुल देशमुख – 66, वाणी झा – 66

सम्मान समारोह

हिंदी की गूंज अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका वार्षिक सम्मान समारोह को झलकियां व विचार – 36
हिंदी साहित्य परिषद कोलकाता का अंतर्राष्ट्रीय काव्य महोत्सव सह सम्मान समारोह – 46
अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, गाज़ियाबाद – 62
टू मीडिया,भागीरथी साहित्य सम्मान, हरिद्वार – 63
हिंदी की गूंज पत्रिका पानीपत में – 65

v DVwoj &fnl Ecj] 2023 (o'kZ&4 vad&14)

संपादक की कलम से

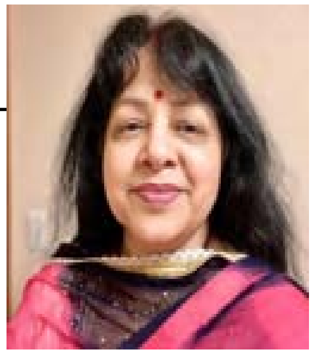

दिसंबर में हिंदी की गूँज का वार्षिकोत्सव हमने धूमधाम से मनाया, जिसमें पत्रिका के सभी सदस्यों और ग़ैर सदस्यों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। अध्यक्षता माननीय बी एल गौड़ जी ने की और मुख्य अतिथि के रूप में आदरणीय सच्चिदानंद जी पधारे और जाने माने हिंदी के सितारों नें कार्यक्रम को चार चाँद लगाए। सबसे पहले इस अंक में हमें सभी का दिल से धन्यवाद करना है। फलस्वरूप आयोजन ऐतिहासिक हो गया। इस आयोजन की सफलता से अभिभूत होकर हम अगले अंक की तैयारी में लग गये। देर तो थोड़ी हो ही रही थी लेकिन हिंदी की गूंज की गूंज चारों ओर गूज रही थी और सारा संपादक मंडल और सदस्य बहुत उत्साहित थे।हम सब कार्यकर्ता हिंदी की गूँज परिवार के सभी सदस्यों से मिले प्यार और खुशी में डूब रहे थे कि हमारी खुशियों को किसी की नजर लग गयी। अगर हम इस विषय पर अधिक बात करूँ तो थोड़ा व्यक्तिगत हो जायेगा लेकिन हिंदी की गूँज के सभी सदस्य जब हमारे परिवार के अंग हैं तो उनसे अपनी खुशी और अपना दुःख भला क्यों न शेयर की जाए ? यही सोच कर आप सभी से साझा करना चाह रहे हैं।

एक सप्ताह के भीतर पत्रिका की संस्थापक सुश्री रमा शर्मा जी की माँ और ससुर जी एक सप्ताह के भीतर ही इस नश्वर संसार को छोड़कर चले गए। जिनका आशीर्वाद हमेशा सम्बल देते रहते थे हिंदी की गूंज को। यह दुःख जीवन भर के लिए हो गया लेकिन धीरे धीरे हमें उबरना तो पड़ेगा ही। आप सब ने इस बीच बहुत सहारा दिया रमा शर्मा जी को और हिंदी की गूंज को। अब उन्हीं सहारों के साथ फिर से वह उठ खड़ी हुई हैं। आप सब का बहुत बहुत आभार।

संपादक
विनोद पांडेय
hindikeegoonj@gmail.com

इस बार जीवन के दोनों रंग एक साथ देखने को मिले मुझे। पहला रंग हिंदी की गूंज कार्यक्रम की अत्यंत सफलता और फिर एकाएक मम्मी और ससुर जी का साया सर से उठ जाना।

अपने व्यक्तिगत दुःख से मैंने बहुत कुछ सीखा। जीवन में दुःख और सुख का आना जाना चलता रहता है। लेकिन जो मैंने महसूस किया वो यह कि दुःख की घड़ी बहुत लम्बी प्रतीत होती है और सुख की छोटी। दुःख में अगर आपके अपने साथ नहीं है तो दुःख से पार पाना बड़ा ही मुश्किल है। अपने लोगों को साथ–साथ मुझे साहित्य से भी बहुत सहारा मिला। साहित्य ने मेरे दुःख को धीरे धीरे कम कर मुझे उठने में मदद की। इस संसार में हर कोई दुखी है, सदैव सुख विरले को ही संभव है। सुख और दुःख पर विजय प्राप्त करने वाला महान हो जाता है। कहानी में, कविता में, संस्मरण में ,उपन्यास में ऐसे उदहारण मिल जाते हैं। सुख दुःख ही जीवन है। हर साहित्य का यही सार है। समाज और साहित्य एक दूसरे के पूरक हैं। आज भी जब समाज में अच्छी बुरी कोई हलचल होती है तो साहित्य जगत से प्रतिक्रिया आनी शुरू हो जाती है। सोशल मीडिया जब नहीं था तब समाज में हुई हलचलों को फैलने में बहुत समय लगता था लेकिन आज समाज में जरा भी हलचल हो तो हंगामा हो जाता है। सोशल मीडिया पर सामाजिक घटनाएँ फैलती जल्दी हैं लेकिन स्थाई नहीं रह पातीं इसके विपरीत अगर कोई सामाजिक घटना साहित्य लेखन में शामिल हो गयी तो उस घटना को स्थायित्व मिल जाता है और फिर ऐसी घटनाएँ इतिहास की हिस्सा हो जाती है। खैर हम हिंदी की गूँज का इतिहास बनाने के लिए प्रयत्नशील है और यह कारवाँ आगे बढ़ता ही जा रहा है। यह अंक आपको सौपते हुए बहुत अच्छा प्रतीत हो रहा है। पत्रिका पहले से बेहतर है लेकिन इसे और बेहतर बनाना है। आप सभी से निवेदन है कि कुछ सुझाव जो हमें और बेहतर बनाएं हम सब पहुँचाने की कोशिश करें। एक बार फिर आप सभी से इस अंक के प्रकाशन में हुई देरी के लिए माफ़ी चाहती हूँ और उम्मीद करती हूँ इस अंक को भी हर अंक की तरह आप सभी का भरपूर प्यार मिलेगा।

संपादन मंडल से विमर्श के बाद आप सभी को एक सूचना देना चाहते हैं कि सभी सदस्यों की सदस्यता 3 महीने के लिए बढ़ा दी गयी है।

संस्थापक एवं मुख्य संरक्षक
रमा शर्मा, जापान
hindikeegoonj@gmail.com
संपर्क– 9289641577

v DVwj&fnl Ecj] 2023 (o'kZ&4 v ad&14)

बधाई संदेश

डॉ विदूषी शर्मा

हिंदी की गूंज पत्रिका टोक्यो, जापान का वार्षिक सम्मान समारोह इस वर्ष 03 दिसंबर 2023 को हिंदी भवन में आयोजित किया गया। इस आयोजन में मुख्य अतिथि डॉ सच्चिदानंद जोशी जी (सदस्य सचिव इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) रहे। कार्यक्रम अतिथि श्री बी एल गौड़ जी (गौड़ संस्था के संस्थापक एवं प्रतिष्ठित साहित्यकार) हैं, इंद्रजीत शर्मा जी, अनीता कपूर जी, ओमप्रकाश सपरा जी, सुदर्शन रत्नाकर एवं अन्य बड़े साहित्यकार देश–विदेश से इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए पहुंचे थे। डॉ रमा पूर्णिमा शर्मा, (हिंदी की गूंज पत्रिका, टोक्यो, जापान संस्थापक एवं संरक्षक, संस्थापक हिंदी कल्चरल सेंटर जापान) ने सभी का हार्दिक अभिनंदन किया एवं कार्यक्रम निश्चित समय पर विधिवत रूप से प्रारंभ किया गया। सभी मुख्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलन किया और महू से आई तृप्ति मिश्रा ने मां सरस्वती की आराधना की। इसके बाद विनोद पांडे जी ने विधिवत रूप से अध्यक्ष महोदय की अनुमति के साथ कार्यक्रम को आरंभ किया। प्रस्तुत कार्यक्रम में हिंदी की गूंज पत्रिका, गूंज उठी हिंदी, प्रत्याशित सोच पुस्तकों का लोकार्पण किया गया एवं क्रमानुसार सभी अतिथियों, मुख्य अतिथियों अध्यक्ष इत्यादि का सम्मान पुष्पमाला, स्मृति चिन्ह आदि देखकर किया गया। हिंदी की गूंज के सभी सदस्यों का सम्मान स्मृति चिन्ह, सर्टिफिकेट के साथ किया गया। इसी के साथ–साथ कुछ विशिष्ट पुरस्कार भी बच्चों के लिए, युवाओं के लिए रखे गए थे जो हिंदी की गूंज के लिए प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े हुए हैं।

प्रस्तुत कार्यक्रम में अल्पाहार की भी उचित व्यवस्था थी जिसका आनंद उपस्थित सभी अतिथियों ने भरपूर उठाया। कुल मिलाकर कार्यक्रम बहुत सफल रहा। सभी ने इस कार्यक्रम का भरपूर आनंद उठाया एवं एक दूसरे से मिलकर सभी ने इन अनमोल पलों को कमरे में कैद किया। हिंदी की गूंज पत्रिका के वार्षिक समारोह से जहां तक मुझे उम्मीद है सभी अपने साथ भरपूर मधुर स्मृतियां ही लेकर गए हैं क्योंकि आयोजक मंडल के द्वारा सभी का भरपूर आदर सत्कार किया गया था।

आशा है यह कार्यक्रम इसी प्रकार अनवरत चलता रहे और अगले वर्ष भी हिंदी की गूंज का यह परिवार और बड़ा और समृद्ध हो यही कामना है।

किसी भी कार्यक्रम की सफलता के लिए पूरी टीम वर्क का होना बहुत आवश्यक है। इस कार्यक्रम में भी प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से सम्मिलित सभी सदस्यों, पारिवारिक सदस्यों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। अंत में केवल इतना ही कि प्रभु से कामना है अगले वर्ष भी हिंदी की गूंज पत्रिका का यह है वार्षिक सम्मान समारोह और अधिक धूमधाम से हो वह इसके सदस्यों की संख्या दिनों दिन इसी प्रकार बढ़ती रहे। धन्यवाद

कविता

डॉ. शिप्रा मिश्रा

नहीं रहना मुझे पिंजरबद्ध
कोरे दंश में लिप्त, आबद्ध
न मेरे जनमने का कोई उत्सव
न मेरे मरण का कोई शोक
तुम सब के चेहरे उतरे थे
जैसे नग्न हो गए चौराहे पर
पीड़ा के घने कोहरे में,लिपटी मायूस
मेरी बेबस आँखें,कोई संबल, कोई ठौर
जैसे ढूँढ रही हो निरर्थक
एक हतभागी जो,
भ्रूण हत्या की नाकामी के परिणाम स्वरूप
संजीवनी की तरह, सदेह आँखें खोलती है
तमस से बाहर निकल ,ज्योतित होकर भी
पुनः तिमिर में,लौटने के लिए जैसे हो अभिशप्त
फिर ऐसी अवांछित कन्या का,कन्यादान कर
तुम गंगा कैसे नहा लोगे?
क्या कोई वस्तु हूँ मैं जो
यहाँ दोगे वहाँ दोगे?
और सुनो!
धान का पौधा भी, नहीं मैं! जो मेरी ही
मिट्टी से उखाड़ कर ,अन्यत्र लगा दोगे!
बड़ी मजबूती से ,अपना पोषण मैं
स्वयं कर लूँगी,जूझते हुए
गर्भस्थ तिमिर से निकल पड़ी
तो अपने हिस्से का सूरज
और अपनी मुठ्ठी का चाँद
मैं स्वयं छीन लूँगी
तुम्हारे खाद–पानी की
भीख नहीं चाहिए मुझे
छोड़ दो मुझे अबला
और निरीह समझना
और नहीं मानती मैं
स्वयं को खूँटे की गाय,जिसे बला समझ तुम,
बाँध आओ किसी
निरंकुश, निर्दयी, खूँसट, धन लोलुप, स्वार्थी
के पल्ले
उस पति को ,कभी परमेश्वर भी
नहीं मानूँगी,जो प्रताड़ना के अतिरिक्त, कोई भेंट
दे ही नहीं सका
जो मेरा साथी न बन सका
वह भला सात जन्मों के
जीवन का साथ
भला क्या निभाएगा?
वह परमेश्वर तो ,कभी बन ही नहीं सकता
क्योंकि इतनी उसकी, कूबत ही नहीं
वह तो स्वयं आश्रित , और निर्भर है
अपनी कुल वृद्धि के लिए, मुझ पर सदियों से
नहीं मानती तुम्हारे, तर्क – कुतर्क
आधारहीन दलीलें,नहीं दूँगी मैं कभी कोई,
निरर्थक अग्नि परीक्षा
इस अग्नि में
अब तुम्हें लेने होंगे अपनी
गरिमा और विश्वसनीयता
के अटूट संकल्प
नहीं मानूँगी मैं
तुम्हारे ढपोरशंख वाले
कपोल–कल्पित
एकपक्षीय शास्त्र
मेरी डोली भले ही तुमने
मेरी मिट्टी से उठा ली हो
लेकिन अर्थी तो, मेरी मिट्टी से ही
पूरे धमक से उठेगी
चुनौती है मेरी, और ललकार भी
मेरे हिस्से की मिट्टी
रोक सको तो रोक लो!
बड़े दुस्साहस से, आज तोड़ती हूँ
अपने चरित्र पर उठती
उन अगणित ऊँगलियों को
अगर साहस हो तो दो
पहले स्वयं की अग्नि परीक्षा
सिद्ध करो विश्वसनीयता
फिर करना मेरा परित्याग
मैं फिर कहती हूँ–
नहीं रहना मुझे पिंजरबद्ध
कोरे दंश में लिप्त, आबद्ध

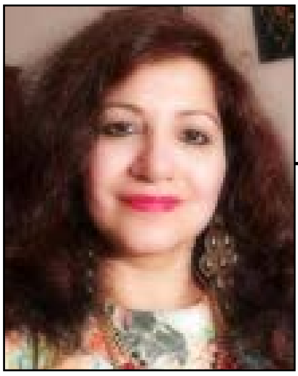

इंदु नांदल (विश्व रिकॉर्ड होल्डर) इंडोनेशिया

कविताएं

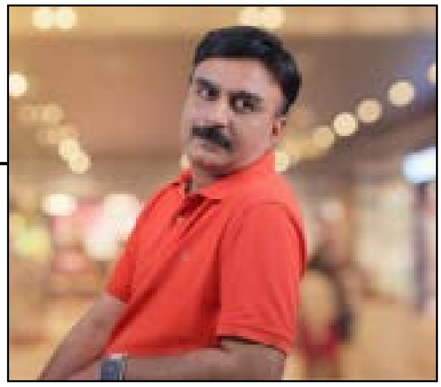

विश्वास दूबे
नीदरलैंड

सच्चाई

कलम मेरी लिखती सच्चाई
डूब सच की स्याही में
देखती है जो वो जग में
वही बताए ...

गाड़ी से धुआँ निकले
धुआँ मिले हवा में
हवा मिले साँसों में
आयु घटाए ...

धरती हो गई परेशान
मानव के लालच से
सूख गई है उसकी नमी
अन्न कैसे उगाए ...

झूठ भटके दर दर
आत्मग्लानि में
सत्य जैसे दीया मंदिर में
कोई बुझा ना पाए ...

भूली सब कुछ मीरा
कृष्ण प्रेम में
बस जाएँ प्रभु जिस मन में
उन्हें कोई और ना भाए...

इक इक तारे को जानते
जो करते मेहनत रातों में
सपने लाखों आँखों में
जो हर पल जगाएँ...

दुनिया भर का कचरा
आए नदियों में
अमृत सा पानी बदले विष में
मरने से कौन बचाए...
डोले मन पल पल मेरा
सखी इंतज़ार में
एक होते लाखों में
जो मैत्री निभाए...

कभी अपने हो जाते अनजाने
कभी बनते अनजाने अपने पल में
क्या है किसके दिल में
कोई समझ न पाए...

हैं बोल उसके कोयल से
चले जैसे मोरनी बागों में
प्रेम सागर लिए नैनों में
दिल में रही समाए ...

सोए न बालक
कहानी के इंतज़ार में
मोबाइल है हर हाथ में
कहानी कौन सुनाए...

कलम मेरी लिखती सच्चाई
डूब सच की स्याही में
देखती है जो वो जग में
वही बताए ...

प्रवास

हर प्रवास के पीछे एक आस है
कुछ पाने की
ज़माने को दिखाने की
अपना संजोए रखकर
नया कुछ अपनाने की
हर प्रवास के पीछे कुछ अधूरा है
सब कुछ मिलकर भी नहीं हुआ पूरा है
दर्द अपनो से दूरी का
पांव जमाने की मजबूरी का
अकेले में रोने का
सब होकर भी खोने का

हर प्रवास के पीछे एक विश्वास है
कुछ मिलेगा इसकी आस है
नई मिट्टी नई जमीन का एहसास है
अपनों से दूर नए नाते आस–पास है
नई भूमि पर जो मिला वह खास है

हर प्रवास के पीछे इक ख़्वाब पला है
अनकही खानाबदोशी की ख़ला है
बहुत खोकर थोड़ा कुछ मिला है
मुसलसल इंतज़ार जो हर बार टला है

हर प्रवास के पीछे कुछ त्याग है
हर पल निरंतर जलती आग है
जहां होना था वहां आए नहीं
कुछ रिश्ते हमने निभाए नहीं

गिरते उठते संभलते कट ही गया है
उस और इस देश में बराबर बंट ही गया है
शुरुआत से शुरू कर, यहाँ पहचान बनाई है
कुछ जानते, मानते हैं, यही बस मेरी कमाई है
उसने बनाया, इसने संवारा है
वो तो मेरा है ही, ये देश भी मुझे प्यारा है।

v DVwj &fnl Ecj] 2023 (o'kZ&4 v d &14)

लघुकथाएं

प्रीति मिश्रा
शिकागो

"लगन"

देवधर जी का पूरा परिवार कृष्ण भक्त था, उन्हें कृष्ण पे अटूट आस्था और विश्वास था। उन्हें खुद से ज़्यादा अपने प्रभु पे भरोसा था। देवधर जी गांव के एक मंदिर में पुरोहित का काम किया करते थे, वो स्वभाव से बहुत ही विनम्र और ईमानदार थे। पूरा परिवार मंदिर की सेवा में दिन रात लगा रहता। गाव के लोग भी उन्हें प्यार और सम्मान दिया करते थे। देवधर जी हमेशा भगवान से प्रार्थना करते कि यदि मेरी कोई संतान हुई तो उसे मैं आप को सौंप दूँगा वो भी आप की सेवा में निरंतर लगा रहेगा। प्रभु कृपा से देवधर जी के घर बच्चे की किलकारी गूंजी। उन्होंने बच्चे का नाम माधव रखा। माधव बड़ा ही प्यारा बच्चा था वो पूरे गाव के आँखों का तारा बन चुका था। माधव अपने बाबा के साथ मंदिर जाता और अपनी तुतली बोली में भजन की सेवा भी करता जिसे सुन सभी बहुत हर्षित होते और माधव भी बहुत खुश होता। देवधर जी का सपना मानो सच हो रहा था कि माधव को भी प्रभु से उतना ही प्रेम है जितना कि प्रभु को अपने भक्तों से।धीरे धीरे माधव भी बड़ा होने लगा। जैसे जैसे वो बड़ा होने लगा उसकी रुचि संगीत में भी बढ़ने लगी। वो संगीत की शिक्षा ले सके इतना तो सामर्थ्य नहीं था देवधर जी में लेकिन उनकी ये कमी माधव के रास्ते में नहीं आ पायी। माधव अपनी लगन में कोई कसर नहीं छोड़ता वो जो भी गाता दिल से गाता। माधव के भजन के साथ ही सुबह सवेरे लोगो की आँखें खुलती सूरज देव बाद में निकलते पर माधव की तान पहले छिड़ती मानो सूरज देव भी प्रतीक्षा करते माधव के सुरीली आवाज़ की।

उसके आवाज़ में साक्षात् सुर की देवी सरस्वती का वास था। दूर दूर के गाव में माधव के आवाज़ की चर्चे होने लगी। दूर दूर से लोग उसे सुनने आते और जाते जाते ढेरों आशीर्वाद देते जाते।इसी तरह दिन बीतते गए और एक शाम भजन संध्या में माधव के संगीत की तान किसी संगीतकार के कानों में परी। उस ज़ौहरी ने माधव जैसे हीरे को पहचान कर उसे एक मौक़ा दिया और माधव रातों रात भजन की दुनिया का एक चमकता हुआ सितारा बन गया। जब माधव से उसकी कामयाबी का राज़ पूछा गया तो उसने बड़े सरल भाव में मुस्कुराकर प्रभु कृपा और माता पिता के साथ साथ पूरे गाँव का आशीर्वाद बताया। पर सच तो ये भी है कि यहाँ तक पहुँचने में माधव के लगन ने उसका पूरा साथ निभाया। अगर लगन सच्ची हो तो कोई भी कमी किसी का रास्ता नहीं रोक सकती।

–डॉ उर्मिला सिन्हा

तर्पण

"साहब छुट्टी चाहिये... एक सप्ताह के लिए! "

"दिमाग खराब हो गया है... एक सप्ताह... यहाँ का काम कैसे चलेगा"साहब का गुस्सा सातवें आसमान पर था।

रघु याचना करता रहा साहब झिड़कते रहे... रघु की दृढता देख नरम हो पूछ बैठे, "क्या काम है! "

"जी गयाधाम जाकर माता–पिता का पिंडदान करना है... बस एक सप्ताह की छुट्टी। "रघु चला गया।

साहब सोच में पड़ गये। उन्होंने न जीते जी अपने माता–पिता की परवाह की और न मरने पर कभी तर्पण किया।

लाखों में खेलते हैं लेकिन पति–पत्नी ने वृद्ध अशक्त माता–पिता का जीना हराम कर दिया था। अच्छा खान–पान के लिए तरसते माता–पिता ...उनकी मगरूर पत्नी के तानों से सटके दोनों... आसभरी नजरों से इकलौते बेटे की ओर देखते... किंतु साहब अनदेखी कर चल देते।

और आज यह चंद रुपये पानेवाला अनपढ़ गंवार उनका नौकर माता–पिता का पिंडदान करने हजारों रुपये खर्च कर गयाधाम जा रहा है।

"डैड, हमारा पॉकेट मनी बढाईये... इतना से काम नहीं चलता...वरना "आज सुबह ही उनके दोनों बिगड़े हुये बेटा–बेटी धमकी दे रहे थे।

"वरना... वरना क्या "वे कहते–कहते रुक गये।

"जब मैंने सामर्थ्यवान होते हुये अपने माता–पिता को खून के आंसू रुलाये... जीते जी उनकी कद्र नहीं की तो ये मेरे संस्कार हीन बिगड़ैल अपनी बदमिजाज़ मां और अहंकारी पिता के नक्शेकदम पर चलने वाले बच्चे भला हमारा क्या हश्र करेंगे ...यह शीशे की तरह साफ है। "

साहब नदी किनारे पहुंच हाथ में अक्षत फूल पिंडी धूपदीप लेकर भारी ह्रदय पश्चाताप की ज्वाला में धधकते अकेले ही अपने माता–पिता का पिंडदान करने पहुंचे... पंडित जी का मंत्रोच्चार और माता–पिता का उदास उपेक्षित चेहरा आपस में गड्डमगड्ड होने लगा।

तर्पण करना था पितरों का और वे तर्पण कर रहे थे अपने अक्षम्य अपराधों का जो उन्होंने अपने माता–पिता की अवहेलना कर की थी।

गीत और लघुकथा

डॉ. नितीन उपाध्ये, दुबई

पंच प्राण : देश भक्ति गीत

यह शाम सुहानी आई है
अपनों को संग में लाई है
हम इक माता के हैं बच्चे
भोले भाले सीधे सच्चे
तुम साथ में मेरे लब खोलो
भारत माता की जय बोलो
हम सब को साथ में मिल जुलकर इतिहास नया इक गढ़ना है
हम सब को आगे बढ़ना है, बस आगे आगे बढ़ना है

बीते कल का अपना गौरव
सोने की चिड़िया का कलरव
गंगा जल की निर्मल धारा
शिक्षा का फैला उजियारा
स्वउद्यम की ज्योति जागी
आशा की लगन मन में लागी
एक हाथ से दस को काम मिले
हम सबको ऊंचा नाम मिले
हो स्वावलम्बी सब, पाठ यही बच्चे बच्चे को पढ़ना है
हमको तो आगे बढ़ना है, बस आगे आगे बढ़ना है

घनघोर कोरोना की आंधी
जिसने सारी दुनिया बांधी
जो अपने पर इतराते थे
वो ठौर कोई न पाते थे
हमने भी था प्रण उठा लिया
न बुझने देंगे इक भी दीया
हमने था टीका खोज लिया
लाचार थे जो उनको भी दिया
उस बार भी हम सब जीते थे,आगे भी हमको लड़ना है
हमको तो आगे बढ़ना है, बस आगे आगे बढ़ना है
जहाँ आधी दुनिया भूखी है
दुःख दर्द जहाँ चहुँ मुखी है
हमने आंधी को मोड़ा है
कालिया के फन को तोड़ा है
इस महामारी के बाद भी हम
है सबल, सुरक्षित और सक्षम
सुख हर घर में पहुचाएंगे
श्रीअन्न को हम उपजायँगे
हलधर के हल को आज हमें सोने चांदी से मढ़ना है
हमको तो आगे बढ़ना है, बस आगे आगे बढ़ना है

अब अगले पच्चीस साल कहो
आया है अमृत काल अहो
हमें करना है विकसित भारत
करे गर्व है ऐसी विरासत
रहे एकजुट रहे एकता
कर्तव्य पूर्ति की शुद्धता
हम सब की ऐसी युक्ति हो
गुलामी सोच से मुक्ति हो
हमें पंच प्राण की शपथ उठाकर उच्च शिखर पर चढ़ना है
हमको तो आगे बढ़ना है, बस आगे आगे बढ़ना है

यह शाम सुहानी आई है
अपनों को संग में लाई है
हम इक माता के हैं बच्चे
भोले भाले सीधे सच्चे
तुम साथ में मेरे लब खोलो
भारत माता की जय बोलो

ललिता मिश्रा ललित (आबूदाबी)

प्रेम ज्योति

प्रीत मेरे मन मंदिर के देव, तुम ही मेरा प्यार हो। तुम ही मेरी प्रेरणा हो, तुम ही तो श्रृंगार हो। तुम मिले तो पूर्णता की, छा गई हैं रश्मियाँ तुम से ही तो है सजी, प्रीति की नई शोखियाँ। नयन मेरे है बसी, तेरे प्रेम की अठखेलियाँ। तेरे ही संग प्यार की मैंने, हैं जलाई ज्योतियाँ तुम अलौकिक ऊर्जा के स्नेह का संचार हो। तुम ही मेरी प्रेरणा हो। तुम ही तो श्रृंगार हो। मुस्करा उठती हूँ तुझको, देख अपने संग प्रियम। भावनाओं से भरा मन, खिल उठा है दीप सम। काँधे रखा शीश मेरा, ढूँढती फिरुँ चंद्रमन। तुझसे निश्चल प्रेम को, साकार करती राधा बन। न कोई बंधन सजन, बस आत्मा का साथ हो। तुम ही मेरी प्रेरणा हो, तुम ही श्रृंगार हो।

❖❖❖

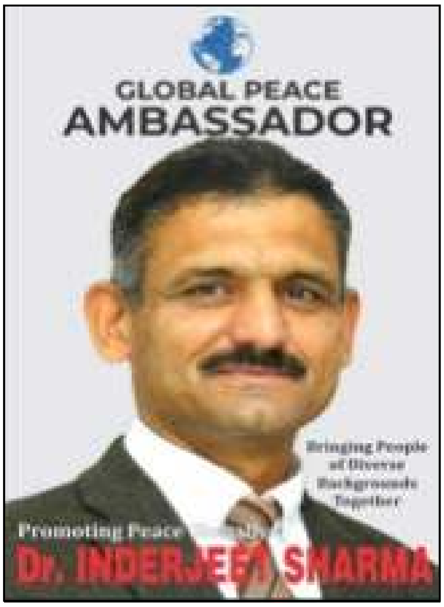

कविता

नीलू गुप्ता, कैलिफ़ोर्निया

हमने विदेश में अपना देश बसाया

हमने विदेश में आकर अपना देश बसाया
हम इधर के भी रहे हम उधर के भी रहे
सत्यं शिवं सुन्दरं हम दोनों ही ओर के रहे
हमने दोनों ही देशों का वर्चस्व बढ़ाया

पिज़्ज़ा बर्गर भी खाया छोले भटूरे भी खाए
एक हाथ में रस मलाई एक हाथ में एप्पल पाई
हमने दोनों खाकर खुशियाँ खूब मनाई
हमने विदेश में आकर अपना देश बसाया

हमने होली दिवाली भी खूब मनाई
हमने क्रिसमस त्योहार भी खूब मनाया
विदेश का पहरावा अपनाया
पर अपने देश का पहरावा ना भुलाया

अमेरिका ध्वज लहराया अपना ध्वज भी फहराया
दोनों ही देशों का राष्ट्रगान है गाया
अमेरिका की अँग्रेजी भी हमने अपनाई
अपनी मातृभाषा हिन्दी को ना भुलाया

जननीजन्मभूमिश्च स्वर्गादपि को न हम भूले
वसुधैवकुटुम्बकम् को भी गले लगाया
हमने वैश्वीकरण की दुन्दुभि भी खूब बजाई
उधर के संस्कार हम लेकर आए
इधर की अच्छाइयाँ भी हमने अपनाई
हमने विदेश में आकर अपना देश बसाया
हम इधर के भी रहे हम उधर के भी रहे
सत्यं शिवं सुन्दरं हम दोनों ही ओर के रहे
हमने दोनों ही देशों का वर्चस्व बढ़ाया

लघुकथा

प्रगति गुप्ता

अंश

छोटी की सवेरे चार बजे की ट्रेन थी। बड़ी बहन को ट्रेन में ले जाने के लिए खाना बनाते देख छोटी रसोई की सीढ़ियों पर निःशब्द खड़ी रह गई। जैसे ही बड़ी ने उसे पलटकर देखा बहुत प्यार से बोली–

"बच्चों और तेरे लिए पूड़ी और आलू की सब्जी बना दिये हैं। ट्रैन में बाहर का कुछ मत खाना। पता नहीं कैसा बना हो?... कुछ और भी बनाऊँ? बच्चों ने मुझे रात में ही बोल दिया था.. "मौसी हमारी पसंद की पूड़ी–सब्जी बना देना।"

छोटी को चुपचाप खड़ा देख बड़ी ने वापस पूछा–

"क्या हुआ है?..किस सोच में पड़ गई तू?... मन नहीं है तो आज मत जा.. चार दिन बाद मैं भी निकलूँगी, तब ही निकल जाना।"

बड़ी की बात सुनते ही छोटी सुबक पड़ी–

"दी! आपको रसोई में खड़ा देख माँ की याद आ गई। हर बार पीहर से ससुराल लौटते समय माँ का पूड़ियाँ उतारना याद आ गया।... आज माँ को गए हुए तेरह दिन हो गए हैं, और तुम हर उस जगह खड़ी दिखाई दे रही हो, जहाँ माँ खड़ी होती थी।"

माँ की तेरहवीं में इकट्ठी हुई बहनों को अकस्मात दो भावज़ों के होते हुए भी मायका छूटता हुआ महसूस हो रहा था। एक ही नाव पर सवार बेटियों के दुःख साझे थे। शायद तभी...

बड़ी ने रसोई से निकलकर छोटी के आँसुओं को पोंछते हुए कहा–

"छोटी! जब मन करे, मेरी ससुराल मिलने आ जाना। बड़ी बहन का घर मायका ही होता है। मुझे तुझमें माँ का अंश दिखता है, तुझे मुझमें दिखता है। शेष उम्र गुज़र जाएगी। अब खुश होकर अपने घर जा। जब मन परेशान हो, फ़ोन पर बात कर लेना।"

अपनी बात बोलकर बड़ी ने छोटी के माथे को चूम लिया।

लघुकथा

शशि महाजन (नाईजिरीया)

पति – पत्नी

सुधांशु बहुत खुश था, बिज़नेस में फायदा हुआ था, और अपनी शादी की तीसवीं वर्षगांठ पर, पत्नी आभा को बढ़िया सा उपहार देना चाहता था, उसने ऑफिस से फ़ोन किया,
"सुनो आज शाम को खाना बाहर खाएंगे।"
"क्यों ? "
"क्यों क्या, बहुत दिन हो गए हैं बाहर नहीं गए इसलिए।"
"अरे, अभी परसों तो तुम बाहर गए थे।"
"पर तुम्हारे साथ तो नहीं गया था, वो बोरिंग बिज़नेस मीटिंग थी, आज हम दोनों रिलैक्स करेंगे।"
"रिलैक्स घर में करेंगे, दाल रोटी खाएंगे, लम्बी सैर पर जायेंगे, फिर बिस्तर में रूमी पढ़ेंगे।"
"ठीक है दाल के साथ आलू की सब्जी बना देना मेरे लिए।"
"बन जायगी।"
"और पापड़ भी।"
"ठीक है।"
"सुनो"
"हाँ।"
"सहगल वाले कॉन्ट्रैक्ट में मुझे पूरा पचास लाख का फायदा हुआ है। "
"वाह।"
"तो मैं सोच रहा हूँ, इस बार मैरिज एनिवर्सरी पे तुम्हें तीन कैरेट के सोलिटेयर खरीद दूँ।"
"क्यों
"पहनना, और किसलिए ?"
आभा हस दी, "तो अब मैं तुम्हारी फ़ाइनेंशियल स्टेटमेंट बनी घूमूंगी।"

यह सुनकर सुधांशु को हसी आ गई। आभा भी हस दी और दोनों ने फ़ोन नीचे रख दिया।
रात को रूमी पढ़ते हुए आभा ने कहा, "मैरिज एनिवर्सरी पर मेरे लिए एक कविता क्यों नहीं लिखते।"
सुधांशु इस ख्याल से ही डर गया।"
"नहीं, अब यह सब मुझसे नहीं होगा।"
"अच्छा ठीक है, एक चिठ्ठी ही लिख दो।"
"ठीक है ईमेल भेज दूंगा।"उसने मुहं बनाते हुए कहा।
"अच्छा, इतना कष्ट मत उठाओ, ऐसा करो, बोल दो, में रिकॉर्ड कर लूँगी।"
"ठीक है, तुम मेरे लिए ग्रीन टी बना के लाओ, तब तक मैं रिकॉर्ड करता हूँ।"

आभा जैसे ही वापिस आई सुधांशु ने उसे फ़ोन पकड़ा दिया,"लो सुन लो।"
आभा ने बिस्तर पर बैठते हुए खुशी से बटन दबाया,
"प्रिय आभा,
मैं तुम्हें उतना प्यार करता हूँ, जैसे कोई मरने वाला जिंदगी से करता है, अब सुनकर हसना मत, उस कवि के विचार मेरे विचार से मेल खाते हैं, इसमें मेरी कोई गलती नहीं।"
आभा यह सुनकर मुस्करा दी।"
"अब आगे सुन, ओन ए सीरियस नोट, तुमने मेरे लिए बहुत सेक्रीफाइसिस किये, अपना कैरियर छोड़ा, मेरे माँ बाप की सेवा की, मुझे बिज़नेस में सपोर्ट किया, बच्चों के भविष्य का निर्माण किया.।"
अभी वह कह ही रहा था कि आभा ने फ़ोन बन्द कर दिया।
"क्यों अच्छा नहीं लगा ? "सुधांशु ने कहा।
"ये प्रेमपत्र है या सब्जीवाले का हिसाब ?"
"मुझे तो बस इतना ही आता है।" यह कहकर सुधांशु चद्दर तान कर सो गया और थोड़ी देर में खर्राटे भी भरने लगा।

आभा को बहुत गुस्सा आया, उसे लगने लगा उसका जीवन कितना अकेला है, बच्चे बड़े हो गए हैं, सास ससुर रहे नहीं, और सुधांशु को बिज़नेस के आलावा कुछ नहीं आता। वह धीरे धीरे उदास मन लिए सो गई।

सुबह उठी तो उसकी नाराजगी जारी थी। सुधांशु नहा धोकर तैयार होकर ऑफिस चला गया, जैसे वो आभा को जानता ही नहीं। अब तो आभा ने तय कर लिया कि शाम को जब सुधांशु लौटेगा, उससे पहले कामवाली को चाबी देकर वह घूमने चली जायगी।

इसी गुस्से में तमतमाए वह सोफे पर बैठ गई, अचानक उसकी नजर मेज पर पड़े लिफाफे पर पड़ी, जिस पर एक गुलाब रखा था।

उसने मुस्कराकर उसे खोला तो उसमें एक कविता थी,

तुमसे जीवन के सारे अर्थ मिले
चाँद सूरज सबके स्पर्श मिले।

पढ़कर आभा का मन खिल उठा। इतने में फ़ोन बजा,
"अच्छा लगा ?"
"हाँ, बहुत।"और आभा हस दी।
"अब इससे ज्यादा मैं नहीं लिख सकता।"
"इतना काफी है। "आभा की मुस्कराहट से घर दमक उठा, और ऑफिस जा रहे सुधांशु का मन खिल उठा।

गज़ल

कविताएं

असलम बेताब

भारत की शान

अपने भारत से शान है अपनी
इस तिरंगे में जान है अपनी

अपनी ताक़त है अपनी यकजहती
एकता में ही आन है अपनी

दोस्ती प्यार और वफ़ादारी
बस यही आन–बान है अपनी

चाहे मन्दिर हो, चाहे मस्जिद हो
शंख अपने, अज़ान है अपनी

सारी दुनिया सलाम करती है
इतनी मीठी ज़ुबान है अपनी

चाइना हो कि हो वो अमरीका
सबसे ऊँची उड़ान है अपनी

और क्या चाहिए है जीने को
अपना घर है, दुकान है अपनी

❖❖❖

ऐश्वर्या संपन्ना (मुंबई)

वीरों की गाथा

१८५७ में जो उठी चिंगारी थी
मंगल पांडे, तात्या टोपे, लक्ष्मीबाई
उसके प्रज्वलित अंगारे थे
अंगारे जो दहके ज्वाला मे जब बदले
भगतसिंह, खुदीराम ने किया न्यौछावर प्राण
वहीं सुखदेव, राजगुरु हंसते हंसते हुए कुर्बान
ना जाने कितने सपूतों ने दिया अपना बलिदान
अहिंसा के पुजारी का हुआ पदार्पण
पराधीन सपनेहुं सुखनाही का मर्म था समझाया
अंग्रेजों भारत छोड़ो का दृढ़ हुआ था नारा
आजादी के दीवानों ने
अकीर्तित नायकों ने
प्राणों की बाजी लगा
आजादी हमें दिलाई
ऐसे वीरों की गाथा सुन
कोटी कोटी प्रणाम कर
शीश हम नवाते हैं।।

❖❖❖

निधि कुमारी सिंह

हिंदी की गूंज

गूंज हमारे हिंदी की
सुनहरे शब्दों का जादू,
हिंदी में बोलचाल।
अपने देश की भाषा में,
विश्व को करें संवाद।

सपनों की ऊँचाईयों को
छूने का है यह सफल रास्ता,
हिंदी की साहित्य में छुपे
विश्व उन्नति का रहस्य

एक ज्ञानगंगा के
पोटली के समान है हिंदी
जिसे खोलना है हमारी जिम्मेदारी
वहाँ, जहाँ हिंदी की कविता गूंजती है,
हर विचार अमर होता है,
हर भावना अच्छी होती है।

हिंदी की भावना,
हिंदी की आज़ादी,
इसमें ही हमारी
विकास की भविष्य है बसी
यही हमारा सपना है
और यही हम हिंदी भाषियों का संकल्प है।

❖❖❖

कविताएं

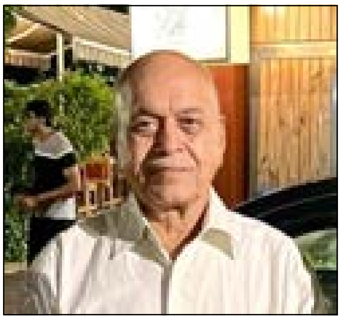

कर्नल डा गिरिजेश सक्सेना

।।उजड़ा प्यार बसी दुनिया।।

१.
मैंने उन्हें देखा,मुझे प्यार हो गया।
प्यार करना मेरा व्यवहार हो गया।
नज़रों ने ज़माने से कर दी शिकायत –
ज़माने की नज़र में प्यार गुनाह हो गया।

२.
जो ज़माना पोसता था,उसने कोसा मुझे।
तन से मन से भावनाओं से झिंझोड़ा मुझे।
मेरा प्यार ज़माने की परवान चढ गया–
अनजान मेहरबान से जबरी ब्याहा मुझे।

३.
हर दिन हर रात उनके आगे मैं बिछती रही।
ज़माने से लड़ न पाई खुद की नज़र गिरती रही।
मन ने चाहा न चाहा तन पर वो मसलता रहा–
उनके लिये अपने तन से संतानें उगलती रही।

४.
चाहत के लिये बेवफ़ा, अनचाहे को बावफ़ा।
क्या पूछी किसी ने मुझसे मेरे मन की दशा।
चाहे से थे अनचाहे से थे, उनका का क्या दोष–
मॉ का ऑचल मॉ की ममता उनके हिस्सेरहा।

५.
आज अचानक संयोग वो मेरे समने खड़े थे।
सामने मेरा प्यार बफ़ा के टूटे सपने पड़े थे।
मैनें मन भटकन को झटका आंचल समेटा –
जीवन की सच्चाई सामने पति मेरे बच्चे खड़े थे।

६
हर उलझन को सिरे से झटकना ही साहिल था।
जो हक़ीक़त है उसको समझना ही हासिल था।
जो टूट गया इक सपना था इक मृगतृष्णा थी–
खंडहर को क्या रोना जो जीता जीने काबिल था।

❖❖❖

डॉ. विनय कुमार श्रीवास्तव

नव प्रभात

नव प्रभात की नई रश्मियाँ, नववर्ष में सपने सजाने।
नव बहार बन कर आई, सब को अपने गले लगाने।।

सभी पुराने गिले शिकवे,किस्से दिल से दूर भगाने।
वर्ष 2023 सकुशल बीता, प्रभु का आभार जताने।।

दस्तक दे नववर्ष आया,मंगलमय हो ये नव विहान।
नए विश्वास नई ऊर्जा,नए संकल्पों संग भरें उड़ान।।

स्वस्थ सुखी निरोग तन हो, मानव होठों पे मुस्कान।
दया धर्म परोपकार बने,यह सुख समृद्धि की खान।।

मन कर्म वचन से किसी को,दुःख कष्ट ये मत देना।
दीन हीन के कष्ट निवारक,बन कर पीड़ा हर लेना।।
मानव तन में जन्मे जीव, धर्म कर्म मानव के करना।
लक्ष्य यही जीवन के हों,दैत्यों–सा कुकर्म न करना।।

भाई–बहन भार्या बच्चे,सबको शुभ हो नव विहान।
मात–पिता कुल कुनबा,मित्र सम्बन्धी सब विद्वान।।
जीवन सुखी रहे सब का, हों चिरंजीवी आयुष्मान।
उन्नति प्रगति सफलता का, ईश्वर दो नूतन वरदान।।

नववर्ष के स्वागत में हम, सब पलक बिछाए बैठे।
उर में उमंग मन हर्षित है, स्वागत में हम सब बैठे।।

धूम–धाम से खुशी मनाएँ, रहें न क्रोधित और ऐंठे।
करें पार्टी मित्रों संग जाएँ, साथ बड़े भी आएँ बैठें।।

ध्यान रहे हर मर्यादा का, ये शुभदिन मंगलमय हो।
सुख समृद्धि खुशी दे हमको, नववर्ष मंगलमय हो।।

दुःख कष्ट निवारक हो,सब के लिए मंगलमय हो।
नूतन वर्ष मंगलमय हो, ये नूतन वर्ष मंगलमय हो।।

❖❖❖

कविता

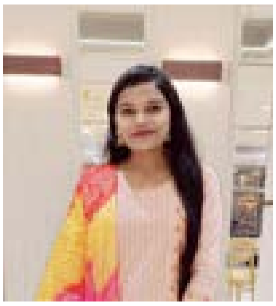

कविता गुप्ता (गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश)

मैं आदमी का सार हूं

स्वप्न में मिला था जो उसी की अब पुकार हूँ...
मैं लिख रही। वो कह रहा।..” सुनो मैं एक उचार हूँ...”

ना चोर हूं ना संत हूं, मैं आदमी का सार हूं
जो लड़ रही है भूख से, वो चीखती पुकार हूं।

मैं डीठ भी उदार भी, तो कर्म से ख़राब हूं
न पाप से डरूं कभी, मैं पुण्य का किनार हूं।

हूँ जन्म भी,मरण भी हूं, मैं सबका इंतजार हूं
मैं रोज मर रहा हूं ज्यों धरा की एक दरार हूं।

गरीब हूं गुलाम हूं,व्यथा का एक सार हूं
है राह कंटकों भरी ,गुलों की इक बौछार हूं।

करार हूं फरार हूं, मैं आदमी बीमार हूं
जो मुस्कुरा के जी रहा, दुखों का वो संसार हूं।

मैं शांत हूं मैं शोर हूं, मैं नस्ले–इश्तिहार हूं
यूं जात पात धर्म से, खड़ा मैं दरकिनार हूं।

मैं शीघ्र हूं विलंब भी, तो शक्ल से अखबार हूं
जो बह रही अनन्त से, समय की एक धार हूँ

ना चोर हूं ना संत हूं, मैं आदमी का सार हूं
जो लड़ रही है भूख से,वो चीखती पुकार हूं।

❖❖❖

कविता

अंजू घरभरन (मॉरीशस)

मॉरीशस

वर्षों पहले
भारत के कुछ लाल
एग्रीमेंट पर लाये गए
गिरमिटिया कुली कहलाये वे
उपनिवेशी था वह काल
नंबर थी एकमात्र पहचान
खून–पसीना भरपूर बहाया
हड्डियां भी तुड़वायीं अपनी
सहते रहे वे अत्याचार
पाया सब ने विषाद अपार
पीकर गरल सहे अपमान
फिर भी कभी न मानी हार
कोड़ों की बरसात ने
हौंसले किए और बुलंद।
कहने को तो गन्ना बोया
पत्थर उलटे सोना पाया
मॉरीशस को पूर्णतःअपनाया
चारों ओर से घिरा ये खारा
हिन्द महासागर की लहरों में
बिंदु–सा चमकता यह तारा
मॉरीशस प्यारा देश हमारा
प्यारा सा यह देश हमारा!

लघुकथा

डॉ रामनिवास मानव

दौड

मैं काफी देर से उसकी गतिविधियों को देख रहा हूं। वह हर आते–जाते वाहन को रुकने का संकेत करता है, लेकिन रुकना तो दूर, कोई उसकी ओर देखता तक नहीं। उसके हाव–भाव से स्पष्ट है कि वह देश के किसी दूर–दराज इलाके से आया कोई अनपढ़ ग्रामीण है, जो संभवतः पहली बार मुंबई जैसे महानगर में आया है और इसके तौर–तरीकों से बिल्कुल अनजान है।

मुझे लगता है, वह कोई व्यक्ति नहीं, देश का अति पिछड़ा गांव है, जो तेज रफ्तार से दौड़ते महानगर से जैसे कह रहा है–”प्रगति की इस दौड़ में कुछ दूर तक मुझे भी साथ ले चलो महानगर!”लेकिन कुछ देर के लिए ठिठककर उसके संकेतों को देखे, उसकी भावनाओं को समझे, इसकी फुर्सत कहां है महानगर के पास! फिलहाल मेरा चिंतन, उस ग्रामीण का प्रयास और महानगर की दौड़ जारी है।

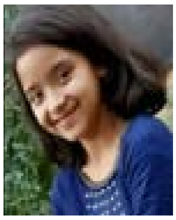

अंशिका शर्मा
कक्षा–8
बुलंदशहर

लघुकथा

इं. अंकिता बाहेती (दोहा, क़तर)

अपराधी कौन?

जेठ की तपती दुपहरी का समय था. अनेक श्रद्धालुओं की भीड़ मंदिर में जाने को आतुर, पंक्ति में खड़ी थी. एक बेटा अपनी मां और परिवार संग, मंदिर में दर्शन करने आया था. मां के घुटनों में अब दर्द रहने के कारण वह धीमे–धीमे चल रही थी. अंततः मंदिर के विशालकाय परिसर में पहुंचे वहां छाया में थोड़ा आराम कर पुनः प्रभु दर्शन करने चल पड़े। मुख्य मंदिर में प्रवेश से पहले चप्पल उतार कर जाना था.

मां ने बेटे से कहा, "तुम सब दर्शन कर आओ मैं, नहीं सीढ़ियां चढ़ पाऊंगी, सो दूसरे द्वार पर प्रतीक्षा करूंगी"बेटा बोला,"मां, यहां तक आई हो, अंदर भी चलो, हो जाएगा, धीरे धीरे चलना"मां के मना करने पर वह आगे बढ़ा, पर मन ना माना. वापस आकर, मां का हाथ पकड़कर बोला "मैं, ले चलता हूं, धीरे धीरे"चप्पल बाहर कोने में रख दिये, वहां, मंदिर का सेवादार भी था, उससे बोला "भैय्या, ध्यान रखना, हम अभी आते हैं"

मां को दर्शन करवा कर, धीरे धीरे वे दोनों बाहर आए, और चप्पल लेने पहुंचे। बेटे ने अपनी चप्पल पहनी और मां की चप्पल कहीं नहीं मिल रही थी। वे दोनों खोजते रहे। मां बोली "रहने दे, कोई ले गया होगा, चल चलते हैं". बेटे ने कहा "मां, मंदिर से बाहर तक का रास्ता लम्बा है और इतनी तेज धूप में बिना चप्पलों के कैसे चल पाओगी, तपती ज़मीन पर?"मां असहाय सी इधर उधर "अपनी"चप्पलों को ढूंढने का प्रयास करने लगी. बेटे ने किसी और की चप्पल लाकर रख दी और पहनने को कहा, मां संकुचित होते हुए मना करने लगी. बेटा नहीं माना. मां ने आखिरकार चप्पल पहनी और धीमे–धीमे वहां से चलने लगी. तभी वो सेवादार आया और पीछे से आवाज़ देकर रोका और बोला "मां जी, ये आपकी चप्पल है?"बेटा ने तपाक से पूछा "क्यों?"सेवादार रोब से बोला "मैंने देखी थी इनकी चप्पल. ये वो नहीं है."बेटा बोला "अच्छा, तो जो है वो लाकर दो पहले. बोलकर गए थे आपको"वो गुस्से में बोला "वो मुझे नहीं पता, पर ये चप्पल मां जी की नहीं है. सीसीटीवी में दिखाऊं?"बेटा भी तमतमाया "हां, जाओ, सीसीटीवी में देखकर मेरी मां की चप्पल लाकर दो पहले"सेवादार ने ज़ोर से कहा "मां जी आप क्यों पहनकर जा रहीं हैं ये? ये अपराध आपको शोभा देता है क्या? ये मेरा काम है कि मैं यह गलत ना होने दूं। सो आप अभी इसे यही उतारे।"

बेटा बोला "तो मेरी मां की चप्पल लाकर दो। हम कौन सा किसी और की चप्पल पहनकर जाना चाहते है, अगर तुम्हारा काम है, तो जो मेरी मां की चप्पल पहनकर गए उन्हें क्यों नहीं रोका? वो गलत नहीं था?"

बूढ़ी मां के कानों में "अपराध"ये शब्द गूंजने लगा. मैं, जो अबतक हर चीज ये सोचकर करती आई हूं, कही किसी को भी गलती से बुरा ना लगे, वो अपराधी हो गई? पति थे तब भी और उनके गुजर जाने के बाद भी, सब संभालकर चली और आज एक चप्पल के कारण, यहां मंदिर में मैंने अपराध... नहीं नहीं"वो अपने विचारों से बाहर आई. बहस बढ़ने लगी, आते जाते लोग देखने लगे।

इस बीच रूआसी मां ने चप्पल खोल दी और सेवादार चप्पल उठाए बिना जवाब दिए चला गया। बेटे ने अपनी चप्पल मां को जबरदस्ती दी, और वे दोनों परिवार के अन्य लोगों के पास पहुंचे.

मैं जो इस पूरे घटनाक्रम को देख रही थी, समझने का प्रयास करने लगी, इन सबमें अपराधी कौन? वो बूढ़ी मां जिनकी चप्पल खो गई, वो बेटा जो मां को मंदिर लाया, शायद मां को घर में अकेले ना छोड़ना चाहता हो, वो सेवादार जिसकी सेवा की अपनी परिभाषा है या वो जो उस मां की चप्पल पहन चले गए?

कविता

अभिषेक त्रिपाठी, आयरलैंड

पीपल की छाँव

नैन तुमसे मिले तो ये सोचा न था
स्वप्न ऐसे खिले मैंने सोचा न था
मैं भगीरथ सा तपता रहा व्योम में
मुझको गंगा मिलेगी ये सोचा ना था

प्रेम की हो कहानी ये सोचा ना था
होगा आंखों में पानी ये सोचा न था
मेरी बगिया में खुशबू बिखेरेगी वो
मैं बनूं उसका माली ये सोचा न था

ऐसे महके कली ये तो सोचा ना था
मेरे आँगन खिली ऐसा सोचा ना था
दीप्ति जो अवतरित होती आकाश में
मेरी छत पर ढली ये तो सोचा न था

इस समंदर में मिलती नहीं कोई नाव
सौ शहर से भी प्यारा है इक मेरा गांव
इस शहर की तपिश अब सताती नहीं
गेसूओं में तुम्हारे है पीपल की छांव।।

शर्वी चहल
कक्षा–छठी
आयु–ग्यारह वर्ष

कविता

रचनाकार : संजय शुक्ल कोलकाता

मेरी अंतिम सांसों तक क्या, मेरा साथ निभाओगी।। ?
गीत खुशी के गाओगी तुम जीवनराग सुनाओगी।।

जीवन के हर गीत हैं जिंदा, ये जीवन संगीत है जिंदा
तुम मेरी सांसों से लिपट के, गीत मिलन के गाओगी।।

दुनिया की दीवारें सारी, खत्म हुई सब दुनियादारी
दुनिया की सारी रस्मों को तोड़ मेरे घर आओगी।।

मिलने की सारी तय्यारी, अब आई मिलने की बारी
सारे शिकवे गिले भुला कर मुझको गले लगाओगी।।

सांसों की रफ्तार हुई नम, तेरी मीठी याद नहीं कम
अपनी सांसों को देकर क्या जीवन गीत सुनाओगी।।

अब आई मिटने की बारी, टूटे कंगन बारी बारी
तोड़ के सारे जग के बंधन, मेरी प्रीत निभाओगी।।

मेरा जब अहसास न होगा, तेरे कोई साथ न होगा
ऐसे अंजाने रिश्तों को आखिर तक ले जाओगी।।

संजय के अरमान हैं गहरे, बहक गयी सागर की लहरे
मेरी ठंडी राख पे तुम क्या अंतिम दीप जलाओगी।।

❖❖❖

कहानी

सुशील कुमार आज़ाद

हाँ मैं पाकिस्तानी हूँ

उस दिन हम इटली के रोम में थे। आज सुबह से ही धूप तेज थी। एक मैट्रो में सुबह सुबह घूमने और धूप से कुछ देर बचने के इरादे से सफर कर रहे थे। रोम में भी गर्मी और आवादी मुझे ज्यादा ही लगी। मैट्रो में मैं और मेरा मित्र कुमार विनायक सभी को देख रहे थे। उनकी दिनचर्या को समझ रहे थे। वहीं कौने में एक भारतीय चेहरा नजर आया वह गुमसुम और काफी तनाव में लग रहा था। मैं उसकी तनी हुई भौंहो को कुछ सामान्य करने की जुगत में मुस्कुराया लेकिन उसकी आँखों ने मेरी मुस्कुराहट को एक बारगी भी न देखा न ही पहचाना लेकिन वह जब भी बीच बीच में मुझे देखता मैं जरूर मुस्कुराता क्योंकि उसका चेहरा मोहरा भारतीय था। इस उम्मीद में भी कि वह परिचित तो नहीं लेकिन मुस्कुरा जरूर देगा मगर ऐसा हुआ नहीं। भीड़ बढती जा रही थी और वो सिकुड़ता सा जा रहा था। वह मेरी सीट के पास आ गया था। मैंने उसे नॉर्मल करते हुए 'इंडिया' कहा। मेरे मित्र ने उसका झटाझट मूल्यांकन करते हुए कहा कि देखो यह कितना खडूस लग रहा है यार विदेश में आकर भी इनकी टेंशन कम नहीं हुई। मैंने भी इस बात को सहज स्वीकार कर लिया था। दरअसल वह किसी मानसिक चिंता में पड़ा सफर कर रहा था। मेरा मित्र उसके करीब जाकर बातें करने लगा और न जाने कैसी कैसी बातें विनायक ने की होंगी उसके चेहरे का रंग और टेंशन की लकीरें छू मंत्र हो गई। हम लोग ट्रमिनी (ट्रमिनल यानि बड़ा रेलवे स्टेशन) के पास ट्राम से उतर गए। वह भी उतर आया। मेरे दोस्त विनायक ने उससे विदाई हाथ मिलाते हुए मेरा परिचय दिया। वह अब पूर्णरूप से हमारे सान्निध्य में आश्वस्त और प्रसन्न मुद्रा में था। मैंने उसे अभिवादन किया और उसने गर्म जोशी से हाथ बढाया। उसका नाम सैफुल्ला था। उसने कहा हम बाई बाई (भाई भाई) हैं। उसके इस बात से उसका भारतीय होना मेरे लिए तय हो गया था। मैं अभी भी भारतीयता की संकुचित विचारधारा से ग्रस्त था जो आगे चलकर महसूस हुई, जिसका मुझे अंदाजा भी न था। हम अलग होने की मुद्रा में उसे हैलो कहने ही वाले थे कि

उसने हम लोगों के सामने बहुत ही आर्द्र शब्दों में कहा कि क्या आप मेरे साथ उस होटल में नहीं चलोगे मैं पानी पिलाना चाहता हूँ। हमने उपरी तौर पर मना किया लेकिन वह बार बार विनित से विनित भाषा में आग्रह करने लगा जिसे हम चाह कर भी मना नहीं कर सके। मुझे अभी तक उसके देश, जाति, भाषा और कार्य के बारे में शून्य भी पता नहीं था जो भी बातें हुए विनायक से ही हुई थी। हाँ एक बात थी कि उसकी कटी पर छोटे–छोटे बालों वाली मूँछें उसकी दाढ़ी के अनुपात में मुसलमान होनें का संकेत सा कर रही थी यह मुसलमान वाली बात भी मेरे जहन में अवचेतन में होगी जिसे मैं हल्का हल्का अपने लिए ही कह रहा था ऐसा लगा। उसने सलवटे पड़ी पेंट और लाईनदार छोटे चेक की शर्ट पहन रखी थी, पैरों में सैंडल जो आगे से मिट्टी और मैल से भरी थी पहन रखी थी। छोटी आँखे नींद के पूरी न होने का संकेत दे रही थी, सिर के बाल चिढ़े से रूखे से थे। धीरे धीरे बोलना और नपेतुले शब्दों की श्रृंखला उसकी पहचान थी। वह आगे आगे ट्राम की लोहे की बीच सड़क बनी लाइन को पार कर रहा था और हम पीछे पीछे थे। नए शहर में नए आदमी पर बिना विचारे विश्वास कर हम जीवन और जगत को नए सीरे से पढ़ने का चाव लिए थे। चलते हुए मुझे तमाम वो आध्यात्मिक और सांसारिक बातें याद आ रही थी जिसमें मुझे यह सुनने और पढ़ने को मिली कि "दुनिया में सब बे–ईमान नहीं होते"। वह हलाला नामक एक माँसाहारी होटल में ले गया और मैं शाकाहारी होने के बावजूद भी चला गया। हम लोग एक मेज के पास रखी कुर्सियों पर बैठ गए। उसने बातचीत शुरु की मैंने और मेरे मित्र ने कई तरह के प्रश्न किए जो उसके यूरोप आने, काम करने, संघर्ष करने और वर्तमान की स्थिति सहित उसके देश की बात पर हम आ टिके थे। जनाब "मैं पाकिस्तानी हूँ"– इस एक वाक्य से एकबार तो मैं भी आश्चार्य चकित हुआ। इस आश्चार्य के पीछे पाकिस्तानी होना कम, हमारा बार बार इंडियन कहना और उसका कोई प्रतिक्रिया न करके बल्कि अति हर्ष से बातचीत को आगे बढाना ज्यादा रहा। मैंने पहली बार अपनी बुद्धि, समझ को संकीर्णता व पूर्वाग्रह ग्रस्त पाया। उसके पाकिस्तानी कहने मात्र से मेरे जहन में बहुत कुछ ईर्ष्या, द्वेष,भय और बहुत कुछ एक क्षण में उभर आए थे। मगर वह बहुत सहज था। उस होटल में उसका दोस्त सलमान भी आ गया था। उसने इशारे से दुकान में सेवा करने वाले को एक बड़ी बोतल कोकाकोला लेकर आने का आदेश दिया जो दो या ढाई यूरो की आई होगी मंगवाई। उसके व्यवहार में बहुत शरीफी और नेकदिली उभर आई थी। उसकी तरफ से किंचित मात्र भी यह संकेत नहीं था कि वह एक ऐसे देश का वासी है जिस देश में भारत के प्रति नफरत या हिंसा का भाव प्रचुर मात्रा में फैलाया जाता है। उससे मिलकर पाकिस्तानी लोगों के प्रति भरे हुए मेरे क्षोभ के भाव जो अखबार या वजारत के माध्यम से कभी कभार आ जाती थी लोप हो चुकी थी। उसने आगे सभी वो बातें शुरु की जो मैं और मेरा मित्र केवल सुनते ही रह गए पलट कर कुछ नहीं कह पाए। वो बोला... हम बाई बाई थे, है और रहेंगे..अम इंसान पहले है.......ये जो भारत और पाकिस्तान के मस्ले हैं वो सियासती है जी मुझे खुशी है आप यआं गूमने आए ह, मेरा फर्ज ह आपकी खिदमत करना। मैं गरीबआदमी हूँ यआं कई सालों से मजदूरी कर रा हु...अब अपने मुल्क में भी जाकर क्या करूंगा ...मैं एक होटल में चादरे प्रैस करता हूँ.... अब यहाँ कुछ खास काम नहीं बचा इटली में। मेरे वालिद लोगों के कुछ रिश्तेदार अभी वी इंडिया में है ..वो लोग नहीं आ पाते... बहुत समय बी हो गया......दोनों मुल्कों की आवाम में तो इकलास है ....दुख जरूर होता है पाकिस्तान भारत दोनों एक ही सरजमीं है पता नी क्यों ऐसी हबा चली....एक ही खानपान..रेनसेन...कानपान एक....। वह बोलता जा रहा था जिसमें इस बात को प्रतिपादित करने का प्रबल हौंसला था कि मेरे प्रेम को देश की सीमाओं और देशों की संज्ञाओं में लपेट कर मत देखना। मेरी आत्मा और बुद्धि उसके भावों के अतिरेक को सन 1947 से पीछे तक के इतिहास को महसूस कर रही थी जिसमें अश्फाकउल्ला खाँ, मौलाना मंजूर अहसान, डॉ.मगफूर अहमद अजाजी, अली मौलाना शौकत, खाँ शाहनवाज, बेगम हजरत महल, खान अब्दुल बख्तिखार खाँ साहब आदि की याद आई। समय बीतता गया न जाने किस घडी इस मुल्क के ये लोग अपने हिंदु मुसलमान के इस सांझे व्यानों को अलग अलग कर देखने लगे। मुझे यह भी लगता है कि जब इन दोनों मुल्कों के लोग अपने वतन से दूर किसी अंजानदेश की धरती पर मिलते हैं तो एक सहज अपनत्व का भाव तो पैदा होता ही है उसमें गजब का खींचाव भी होता है। मुझे मेरे देश की आन–बान–शान का अहसास है लेकिन कितना अच्छा होता हम सब वसुधैव कुटुम्बकम के इस वाक्य से पूरे विश्व को अपना बना लेते। सोचता हूँ सरहदे कितनी घातक हो गई हैं जो हमें विस्तारपूर्वक सोचने नहीं देती। काश ! हम इंसान से पहले पक्षी, बादल या हवा हो जाएं तो शायद ये संकीर्णताएं मानवता के रूप में रूपांतरित हो पाएं.......अभी भी याद है उसका ये वाक्य ...हाँ मैं पाकिस्तानी हूँ...लेकिन उससे पहले इंसान हूँ....अम बाई बाई हैं...। काश ! सभी कह पाते दिल से...। लेकिन हद तो प्रेम और भाईचारे की तब हो गई जब उसने आधे से ज्यादा बची हुई कोकाकोला की बोतल मेरे हाथों में थमा दी और वियोग की करूणा से छलकते हुए उसने कहा कि ये मेरी तरफ से एक पाकिस्तानी का भारतीय को तोहफा है। मैं आपके लिए ओर कुछ नहीं कर सकता केवल यही मेरा नजराना समझ लें। मैं उसकी इस भावना के आगे तरबतर हो गया और अहसास हुआ कि हमारे दोनों मुल्कों के बीच आज भी वह जज्बा और हमदर्दी है जिसे भारत–पाक का सांझा रिश्ता कहा जाता है। यह कोकाकोला नहीं, मेरे जीवन, मेरे हिंदु–मुसलमान,मेरे भारत–पाक की एकता का अमृत था... जो एक गरीब ने अपनी मेहनत की कमाई से खरीद कर मुझे दी थी। जो धीरे धीरे मेरे खून में समा गई।

v DVwoj&fnl Ecj] 2023 (o'kZ&4 vad&14)

कहानी

सीमा वर्णिका, कानपुर

खाने का डिब्बा

नंदू दरवाजे की ओट से अम्मा बाबू की बातें सुन रहा था।

"नंदू के बाबू तुम एक खाने का डब्बा ..काहे नांहि लै लेत ..रोज खाना लिये बिगैर काम पर जात हौ "अम्मा कह रही थीं।

"अरे काहे पाछै परी रहती हो.. घरै से खाके तो जात हैं,"बाबू ने जवाब दिया।

"कानी कौड़ी बचती नहीं डब्बा लई लो,"बड़बड़ाते हुए नंदू का बाबू घर से बाहर निकल गया।

थोड़ी देर में नंदू भी सड़कों पर घूमने लगा।

"का करूं पल्ले नहीं पड़ता..पइसा कमाय लागूं "नन्हा नंदू उधेड़बुन में लगा था।

उसे दूर एक लड़का एक आदमी का जूता साफ करता दिखा कुछ सोच कर उसकी आँखों में चमक आ गई। उसने फुर्ती से अपनी कमीज़ उतारी।

"साहब जूता साफ करा लो,"नंदू गिड़गिड़ाया।

"भाग यहाँ से.. नहीं साफ कराना जूता,"आदमी ने दुत्कारते हुए कहा।

नंदू निराशा में डूबा फिर भटकने लगा। कुछ दूर एक गाड़ी आकर रुकी वह उधर लपका।

"बाबूजी ! गाड़ी साफ कर दे,"वह दयनीय स्वर में बोला।

"अरे रे.. नहीं करानी साफ ..,"झल्लाकर कार मालिक बोला।

नंदू की आँखों में ऑसू आ गए। यह देख साथ बैठी महिला को दया आ गई।

"आओ साफ कर दो गाड़ी,"वह नंदू से बोली।

नंदू उत्साह से गाड़ी साफ करने लगा।

दस का नोट बढ़ाते हुए महिला बोली,"अब खुश"।

नंदू मुस्कुरा दिया।

दिन भर वह जुगत लगाता रहा.. उसकी अम्मा परेशान उसे ढूँढती ढूँढती वहाँ आ गई।

"क्यों रे ..खाना–वाना नहीं खावन का है का.. कब से राह देखत हैं तोहार .. ससुरा यहाँ बोराया घूम रहा.. घरै चल,"अम्मा गुस्से में बोली।

नंदू अपनी जेब संभालते हुए अम्मा के पीछे पीछे चल दिया।

उसने घर में किसी को कुछ नहीं बताया अभी उसके पास पचास रूपये हुए थे। उसे अभी कुछ और रुपए चाहिए थे। अब रोज ही नंदू धीरे से बाजार निकल जाता और छोटे–मोटे काम करके पैसा जोड़ता।

चार पाँच दिन बीत गए।

"भैया खाने का डब्बा लेना था,"उसने डरते डरते दुकानदार से पूछा।

"क्या चाहिए ..डब्बा,"दुकानदार ने उसे घूरते हुए पूछा

"सौ रूपये का है पैसे लाए हो,"दुकानदार ने नंदू की ओर देखते हुए कहा।

"हाँ भैया.. यह लो..,"कहते हुए नंदू ने टुड़े मुड़े दस बीस के नोट उसे पकड़ा दिए।

नंदू डब्बा लेकर बहुत खुश था। वह दूसरी दुकान पर गया।

"भैया अम्मा के लाने धोती लेनी थी,"वह धीरे से बुदबुदाया।

"कित्ती वाली चाहिए,"दुकानदार ने लापरवाही भरे लहजे में पूछा।

नंदू ने अपनी मुट्ठी के सारे पैसे दुकानदार के सामने रख दिए।

"इत्ते ही हैं भैया.. एक धोती दे दो.. अम्मा की धोती फट गई है, "कहकर सुबक पड़ा नंदू।

दुकानदार ने पैसे गिने डेढ़ सौ के करीब थे। उसने एक रंगीन धोती नंदू को थमा दी।

नंदू उत्साह से तेज तेज कदम चलते हुए घर जा पहुँचा।

अम्मा बाबू बैठे कुछ बात कर रहे थे।

"अम्मा.. अम्मा ..बाबू ..देखो हम का लाएँ हैं तोहार खातिर,"नंदू खुश होकर बोला।

उसने सारा सामान उनके सामने रख दिया।

एक झन्नाटेदार तमाचा उसके गाल पर पड़ा वह अकबका गया।

"काहे चोरी करना सीख गया बे,"बाबू चिल्ला रहे थे।

"तभी सारा दिन सड़क पर मारा मारा फिरता था,"अम्मा ने सुर मिलाया।

नंदू फूट–फूट कर रो रहा था। तभी पड़ोस वाले तिवारी उधर से निकले

"अरे ! काहे मार रहे हो लड़के को,"वह चिल्लाए।

"अरे ! तिवारी बाबू ..हम दिन भर जान होमते अउर यह लरका चोरी करना सीख रहा,"सामान की ओर इशारा करते हुए नंदू का बाबू बोला।

नहीं भाई ..पगलाओ न.. यह तुम्हारा लड़का चोर नहीं हीरा है, "तिवारी बोले।

पिछले चार दिनों से भूखा प्यासा बाजार में छोटे–छोटे काम करके पैसे जोड़ रहा था..कहता था अम्मा बाबू के लिए कुछ जरूरी सामान लेना है और तुम ..

हे भगवान!हम नाशपिटे ठहरे ..अपन फूल से बचवा पर हाथ छोड़े, "पछताते हुए नंदू का बाबू सिर पकड़ कर बैठ गया।

अम्मा ने नंदू को बाहों में भर लिया।

आज नन्हा नंदू बड़ा हो गया था अब उसे मार का दुख नहीं हो रहा था बल्कि खुशी की कि उसके बाबू अब खाना ले जा पाएंगे और अम्मा को फटी धोती नहीं पहननी पड़ेगी।

v DVwj&fnl Ecj] 2023 (o'kZ&4 vad&14)

गीत

डॉ सुमन सुरभि
शारदा नगर लखनऊ उत्तर प्रदेश (भारत)

यसुदा नन्दन

यसुदा नन्दन नंद दुलारे
आन बसो प्रभु हृदय हमारे।

अंतस में वृंदावन छाया
नैनन गोकुल धाम समाया
तन मन में लहरें यमुना की
चहुँ दिस तेरी सुंदर झांकी
हे गिरधारी! मोहन प्यारे
आन बसो प्रभु हृदय हमारे।

एक तिहारी लगन लगी है
कैसी अद्भुत प्यास जगी है
रूप अनूठा मुरली वाला
हुआ सुधामय विष का प्याला
राधा वल्लभ कृष्ण मुरारे!
आन बसो प्रभु हृदय हमारे।

आठों याम तुझे ही ध्याऊँ
मन–माखन का भोग लगाऊँ
भाव – सलिल से चरण पखारूँ
पलकन से प्रभु पंथ बुहारूँ
सब कुछ पाया तेरे द्वारे
आन बसो प्रभु हृदय हमारे।

तुमने ही तो प्रेम सिखाया
परम मुक्ति का पथ दिखलाया
प्रेम सार है इस जीवन का
अहंकार ही द्वार पतन का
तुम ही गुरु हो सखा – सहारे
आन बसो प्रभु हृदय हमारे।

हे नारायण! हे त्रिपुरारे!
आन बसो प्रभु हृदय हमारे।

कविता

रमा शर्मा, जापान

ऐ मेरी कलम

ऐ मेरी कलम
तू कभी न मरना
मेरे मरने के बाद भी
तू मुझे जिंदा रखना
सब के दिलों में
अहसास बना कर
इक मीठी
याद बना कर
एक कराहती
आह बना कर
एक दर्दीला
आँसू बना कर
प्रेम की एक
मिसाल बना कर
औरत की
मर्यादा बना कर
स्त्री की
शक्ति बन कर
माँ की
ममता बना कर
बहन का
स्नेह बना कर
बेटी का
दुलार बना कर
पत्नी का
समर्पण बना कर
सखियों की
ठिठोली बना कर
तू मुझे सदा जिंदा रखना
ए मेरी कलम
तू कभी न मरना

उषा किरण "मानव" (भारत "नई दिल्ली")

आज़ादी के मतवाले

देश के सपूतों लाज आजादी की बचाकर रखना,
झूकने ना पाए तिरंगा कभी भी हर दम उठाकर रखना।

कितने भी तूफान आए तुम मत डगमगाना
देशप्रेम का दीप दिल में जला कर रखना।

जो उठे आंख दुश्मन की, तुम डर न जाना
दुश्मन को तुम नाकों चने चबवाकर रखना।

देश रक्षा की खातिर कभी पीठ न दिखाना जो
पड़ जाए जरूरत तो कफ़न बांधकर रखना।

जो उठे हाथ दुश्मनों के हाथ काटकर रखना
मां बहन की आबरू संभाल कर तुम रखना

जो मिल जाए देश के दुश्मन,
दुश्मन को खाक में मिलाकर रखना।

आज देश घिरा है देश के गद्दारों से,
उन गद्दारों को तुम सबक सीखाकर रखना।

देश के खातिर शहीदों ने जो दी कुर्बानी,
उसकी कहानी सुनाना
कैसे मिली ये आजादी
आने वाली पीढ़ी को बताकर रखना।

आजादी को तुम सहेजकर रखना।
आजादी को तुम सहेजकार रखना

vDVwj&fnlEcj] 2023 (o'kZ&4 vad&14)

ग़ज़ल

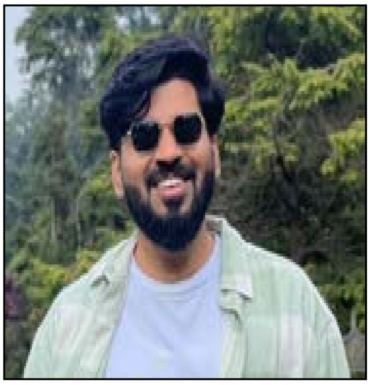

आशीष मिश्रा

ख़्याल

सोचते हैं इक दफ़ा सो कर भी देख लें
इस बहाने ही सही मुलाक़ात हो जाये
ये सारा दिन तो गुज़रा है तुम्हें मिलने के चाहत में
तसव्वुर में तुम्हारे ही ये सारी रात खो जाये
ये रैना कर्ज सी बोझल कटे लम्हों की किश्तों में
थीं ये ख़ामोश पर अब इनमें धड़कन शोर करती है
वो सागर दर्द का जिनपे था इक उम्मीद का पहरा
ये जज़्बातों के लहरें अब उन्हें कमज़ोर करती हैं
तेरी यादों के दरिया में उबरते डूबते हैं हम
तड़पते हैं ज़रा सी बस अभी कुछ बात हो जाये
इन आँखों की नमी पे अब भरोसा कर नहीं सकते
है डर इस बात का इनसे ना अब बरसात हो जाये।।

शिव्या पटेल

कक्षा–पाँचवीं, आयु–ग्यारह वर्ष

गीत

आशीष मिश्रा (लंदन)

प्रवासी

बना प्रवासी एक देश में
बना प्रवासी एक देश में,
सपने अंदर भरकर।।
इस कविता में सच मानो,
मैं मन की कहता हूँ
कौन प्रवासी होता है,
कुछ पंक्ति में रखता हूँ।।

जो लेकर आता है माटी
अपने मन के कोने में
जो जागा रखता है भारत
जागे में या सोने में।

जो लाता है गंगा जल की
शीशी अपने झोले में
जो लाता है गर्व हिंद का
भारतवासी होने में।

लाता है वह संस्कार
अपने सीने में कसकर।
बना प्रवासी एक देश में,
सपने अंदर भरकर।।

जो आया है दूर धरा पर,
लेकर अपनी आशा
शायद लिखने को आया है
मेहनत की परिभाषा।
परिभाषा एक नयी क्षुधा में,
नयी सुधा पीने को
परिवर्तन करने को आया,
नव जीवन जीने को।
सहता सारे दुःख जीवन के
देखो केवल हँसकर।
बना प्रवासी एक देश में,
सपने अंदर भरकर।।

अंतर कुछ भी हुआ नहीं
चाहे चंदा से दूर हुए
कुछ ऐसे भी हुए प्रवासी,
नये देश में नूर हुए।

कुछ ने अपनी मातृभाष में
भाव ह्रदय संजोया भी
कुछ ने कथा कहानी लिखकर
सुंदर इसको बोया भी।
सुंदर इसको और बनाया,
कुछ ने कविता लिखकर।
एक मोड़ ऐसा जीवन में
आया लेकर अवसर
बना प्रवासी एक देश में,
सपने अंदर भरकर।।

हाइकु–"वे"

राजीव नामदेव "राना लिधौरी" टीकमगढ़

सत्ता का जिक्र।
कभी देश की फिक्र,
नहीं करते।।

❖

वोटो के लिए,
चरणों में है लोटे,
कितने खोटे।।

❖

सब दिखावा,
वादों का है छलावा।
मृगतृष्णा।।

❖

बदले रंग,
गिरगिट शर्माये।
इनके आगे।।

ग़ज़ल

जयप्रकाश मिश्रा (सीबीआई, पत्रक विभाग, पटना)

ये क्या है?

मैदान–ए–जंग में है रेंगती
यह जिंदगी
चलती है तलवार की दोधारी तलवार पर
एकओर कीचड़ खींचती है
अपनी ओर
पैरों को फिसलाने के लिए
दूसरी ओर तन्हाइयों का सौगात है
ईमानदारी की विशात पर
जीने वाले फिर भी जीते हैं यारों
इसे ही नियति और
हकीकत मान के
बहाने तो कई हैं बहानों का क्या
कुछ ही लोग
समझ पाते हैं, क्या आए थे लेकर
चंद टुकरे जमीन, कफन के
कुछ गज कपड़े के
वह भी वैसे कपड़ों का जिसका
और कोई उपयोग नहीं होता
शिवाय जिश्म को दफनाने के
जिसे भी समझ में आया
यह खौफनाक हकीकत
वह जूझता है जिंदगी से
या फिर भाग कर हकीकत से
पहाड़ों में जाकर छुप गया
सन्यासी का लिवास
ओढकर!

०००००००

ये दिल मेरा .....

नन्हा सा दिल मेरा टूट गया शीशे की तरह
ख्वाब दिल के मेरे बिखर गए आंसू बनकर
मैं ठगा सा
महसूस करने लगा।
अपने चले गए पराए बनकर।
मैं किससे कहूं और क्या कहूं?
सुबह से शाम हो गई
रात ढल गई
कुछ सोच समझ कर
मैं उजाले से रूबरू हूं
सोचता हूं क्या गुफ्तगू करूं?
पास मेरे
नहीं कोई है आज
सन्नाटा पसरा है खौफ बनकर।
मैं चाह कर भी
किसी से मोहब्बत की बात नहीं कर सकता।
दिल जिस तरह से
टूटा था, बिखर गया था
बादलों की तरह।
फिर भी यह बंजर जिस्म
कुछ महसूस नहीं कर पाया तपती धरती के तरह
सकून न पा सका
आखिर था तो यही इंसान का जिस्म
भीगने से जिसे मिल जाता सुकून।
मैं क्या कहूं, किससे कहूं ?
जुबा खामोश है
लबों पर है मायूसी
साज है पर सुर नहीं
आवाज में न है
कोई नजाकत
न सुनाने में कोई मजा
न सुनने वाला कोई कदरदान!
हे मालिक मैं क्या कहूं
तू चाहता क्या है?
मुझसे बता तो दे
मैं कोशिश करूं
तेरी हर बात मानने की
जवाब देने की
अपना हकीकत बयां करने की।
सुन तो ले।
सजा मुकर्रर करने से पहले। मुझे यकीन है
तभी तो तेरे दर हूं सजदे के लिए
इंसाफ दे दे मुझे या फिर रुखसत कर दे
हमेशा के लिए
मुझे परवाह नहीं
जो आया है
उसे ही जाना है
तो फिर सोचना क्या ?
सोचना क्या ?
सोचना क्या?

००००

एक प्रश्न

हम, तुम,आज, कल,
कब, कहां,क्यों, कैसे, हाय तौबा
इन्हीं शब्दों के बीच
घूम रही है यह जिंदगी।
वक्त निकल रहा है
इंसान नहीं संभलता
उसे यह भी नहीं मालूम
क्या चाहता है वह ?
किस हद तक उसकी मजबूरियों
उसकी बेहूदियां बर्दाश्त होगी
या फिर
उसे यह भी नहीं पता कि
क्या हासिल किया उसने?
अभी तक और
किस मंजिल और दौलत को
पाने की फिक्र कर रहा है वह
एक वीरान सुनसान में
एक फूल की तलाश कर रहा है
जहां कांटे तक नसीब नहीं होते
यह उसकी मासूमियत
और लाचारी नहीं सिर्फ
उसका गुरूर है एक हद से ज्यादा
जिसके पास केवल शून्य है
और उससे ज्यादा कुछ भी नहीं
जो कुछ भी हो इसे
जिंदगी नहीं कहते
और मालिक ने जिंदगी
इस काम के लिए किसी को
दी यही सही है
यही हकीकत है!

०००००००

गज़ल

वक्त की रफ़्तर से सुइयाँ घूमती चली गई
जिंदगी पहेलियां में उलझती चली गई।

हर ख्वाब हकीकत में नहीं बदला करते
जिंदगी अपने रफ्तार से।बढ़ती चली गई।

उम्मीदें थी कुछ पर कुछ और हो गया
अरमानों की चिता यूँ ही सजती चली गई।

ऊंची इमारतो में इंसान कहां रहते हैं अब
झोंपड़ियाँ पर जरूर उजड़ती चली गई।

अब खुशी से आंसू निकलते ही कहाँ है
रिश्तो में दरारें जरूर पड़ती चली गई।

अंतिम सफर में भी नजर न लग जाए
जिंदगी मौत से गले मिलती चली गई।

रब की मर्ज़ी, हर ख़्वाहिश के ऊपर है

जो कुछ भी है, जैसा भी है बेहतर है

मुफ़लिस का अरमान रेत के घर जैसा
रोटी–दाल ही उसका पिज़्ज़ा बर्गर है

उसको केवल नींद चाहिए जिसके पास
सोने का घर है, चाँदी का बिस्तर है

धारा के विपरीत चलेगा कौन यहाँ ?
आज फ़ायदा संग नदी के बहकर है

हाथ कटोरा था तो बस अपमान मिला
इज्जत है जब से हाथों में नश्तर है

पैसा, पावर, सूरत, आदत सब अच्छा
क्या मतलब है जब दिल उसका पत्थर है

मैंने अपना पैर मोड़कर हरदम रखा
पर मालूम है अपनी लम्बी चादर है

मेरा दर्द समझने वालों तुम क्या जानों
बाहर क्या हैं ? असल ज़ख़्म तो भीतर हैं।।

विनोद पाण्डेय
संपादक
हिंदी की गूंज पत्रिका

आलेख

डा. गायत्री पाण्डेय

अभिज्ञान–शाकुन्तलम् में नैतिक मूल्य

भारतीय वाड्.मय की महनीय धरोहर संस्कृत नाट्य–साहित्य में भारतीय लोकमानस, लोकधर्म, लोकवार्ता एवं लोकानुभव का जैसा प्रतिबिम्बन अनुप्राणित है वैसा भव्य चित्रण विश्व साहित्य में अन्यत्र दुर्लभ है। मानव–प्रकृति को परखने की सूक्ष्म दृष्टि के कारण नाटककार ने अपने यथार्थ परिप्रेक्ष्य में ही पात्रों को चित्रित किया है। धर्मरक्षक और प्रेमी राजा के रूप में दुष्यंत है, तपस्वी और धार्मिक के रूप में कण्व हैं, वीतरागी ऋषि मारीच हैं, कोप–परायण दुर्वासा हैं, क्रोधी शारड्.गरव है, विनीत, शांत और मितभाषी शारद्वत है, संकोची सेवाभाव से भरी मितभाषिणी शकुंतला है, शांत और विवेकशीला अनुसूया है, हास्यप्रिय, वाक्पटु तथा मधुरभाषिणी प्रियंवदा है। दुष्यंत के कण्व ऋषि के आश्रम में प्रवेश के संदर्भ में राम की प्रतिज्ञा का प्रतिबिम्ब स्पष्ट मिलता है स्पर्श योग्य रत्न कहना वास्तव में जहाँ क्षत्रिय धर्म एवं मर्यादा की रक्षा करता है वहीं प्रेम के क्रिया–कलाप के यथार्थ रूप को उजागर करता है। अनुसूया अतिथि के सत्कार के कर्तव्य के तथ्य को स्थापित करती है। नायक दुष्यंत के प्रति नायिका शकुंतला का आकर्षण भले ही उसकी मनःस्थिति को विचलित कर रहा है तो भी शीलत्व एवं लज्जा की अनुभूति स्त्रियोचित मर्यादा एवं आदर्श की रक्षा में तत्परा है। अरण्य जगत् के वासी पशु अरण्यवासी मनुष्यों के साथ रहते हुए एक–दूसरे के सहोदर हो जाते हैं इसकी झलक अभिज्ञानशाकुन्तल में देखी जा सकती है। कालिदास की दृष्टि में मृगया राजाओं के मनोरंजन का प्रिय विषय होते हुए भी दोषपूर्ण है इसी आदर्श की स्थापना उन्होंने विदूषक की उक्ति के माध्यम से ही है कि, ''वन्य पशुओं के संग रहते हुए राजा दुष्यंत भी पशु– वृत्ति के हो गए हैं' ।तपोधनों को शमप्रधान होते हुए भी गुप्त तेज से युक्त कहा है। त्याज्य वस्तु पर पुरुवंशियों का मन नहीं जाता है–यह संक्षिप्त उक्ति पुरुवंशियों के महान् आदर्शवादी रूप की विशद व्याख्या करती प्रतीत होती है। अभिज्ञानशाकुन्तल में तपस्वीजनों एवं गुरुजनों दोनों का ही कार्य एवं आज्ञा अनुल्लंघीन होती है–इस

आदर्श की स्थापना हुई है। शीतल रशिमयों से अग्नि की वर्षा करने वाला चन्द्रमा और पुष्प के बाणों के वज्रतुल्य बना देने वाला कामदेव दोनों ही कामातुर लोगों के लिए अत्यंत अयथार्थ होते हैं। प्रणय के धरातल पर सम्राट् तथा जनसामान्य की मनःस्थिति को समान रूप से यथार्थ चित्रण की परिधि में नाटककार ने रखा है। मानव–जीवन उत्थान एवं पतन का एक सम्मिश्रण है– इस यथार्थ का अंकन चतुर्थ अंक में अस्ताचलगामी चन्द्रमा और उदय–सम्प्राप्त सूर्य के वर्णन के प्रसंग में देखा जा सकता है नाटककार द्वारा किया गया अबलाओं का चित्रण मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद का ज्वलंत उदाहरण है। विदाई के समय आत्मजा शकुंतला के वियोग में अरण्यनिवासी ऋषि कण्व को भी सन्तानवियोग से कालिदास ने इस तरह विक्षुब्ध कर दिया है जिसे देखकर प्रत्येक व्यक्ति अपनी पुत्री के वियोग में आँसू बहाता हुआ प्रतीत होता है। शकुंतला को महर्षि कण्व के आश्रम में जो प्यार मिला वह प्रत्येक भारतीय परिवार के लिए अनुकरणीय है। पतिगृह भेजने के आसन्न वियोग से उन्हें गहरी वेदना होती है परन्तु उन्हें तब महान सुख की वह अनुभूति भी होती है जो किसी दूसरे की दी हुई वस्तु को प्रत्यर्पित करने पर होती है। राजा प्रजा का पालक होता है। प्रजा का पालन रूप अधिकार से विश्राम रहित होकर स्वीकार करना पड़ता है। नाटककार का यह कहना है–इसी प्रकार राजा का भी यही कर्तव्य है कि वह प्रजा के पालन तथा रक्षण के लिए सतत् यत्नवान रहे। कालिदास के समय में प्रजा और राजा का संबंध पिता पुत्र का सा होता था। नाटककार ने शासक के उत्तरदायित्व की गंभीरता का कुशलता के साथ प्रस्तुत किया है। राज्य की प्राप्ति उत्सुकता तो समाप्त करती है किन्तु राष्ट्र का उत्तरदायित्व अत्यन्त दुष्कर कार्य है। नाटककार ने यह लोकतंत्र के रूप में संदेश दिया है। जिस प्रकार वृक्ष अपने शीर्ष–प्रदेश पर सूर्य की तीव्र उष्णता को सहन करता है तथा आगन्तुक पथिकों के संताप को दूर करता है उसी प्रकार राजा भी समस्त कष्ट उठाकर प्रजाजनों को प्रसन्न करता है। शकुंतला के प्रत्यादेशजन्य पश्चाताप तथा वियोग के कारण दुष्यंत की अव्यवस्थित अवस्था को लक्ष्य करके विदूषक का दुष्यंत को यह कहना कि सज्जन पुरुष कभी शोकाभिभूत नहीं होते, झंझावात में भी पर्वत निष्कंपित रहते हैं विधि, विधाता, भाग्य–इनकी बलवान इस नाटक में प्रतिपादित है। मनुष्य द्वारा सजाये गए सपनों को निरर्थक अथवा सार्थक करने के असहयोग एवं सहयोग कारण होता है। अंगूठी पर अंकित नामाक्षरों की गणना की अवधिपर्यन्त दुष्यंत की शकुंतला तक पहुँच जाने की राजा की बात सुनकर सानुमति का कहना कि सुन्दर अवधि को विधि ने मिथ्या कर दिया–इस बात का पारिचायक है कि होनी या भाग्य बलवान होता है। कामासक्त व्यक्ति की बौद्धिक विकृति का यथार्थ–चित्रण छठे अंक में मिलता है जहाँ शकुंतला के चित्र के मुख के आस–पास घूमते हुए भ्रमर से दुष्यंत ईर्ष्या करने लगता है–कामान्ध व्यक्ति के यथार्थ चित्र को प्रस्तुत करता है। चित्रगता नायिका को वास्तविक साक्षात्कार का सुख लेने वाला विदूषक द्वारा होश में लाए जाने पर दुष्यंत अत्यन्त विकल हो उठता है। निस्संतान होना वस्तुतः कष्टप्रद है–इस यथार्थ का चरम निदर्शन छठे अंक में मिलता है जब राजा को व्यापारियों के मुखिया धनमित्र की नाव में डूब कर निस्संतान करने पर उसके संचित अर्थ का राजकोष में दे दिए जाने की बात उठती है। स्वयं को निस्संतान समझकर दुष्यंत का यह सोचना कि पितृगण संतान–रहित मेरे द्वारा दिए गए एवं अश्रुओं को धोने से अवशिष्ट तर्पण के जल का पान करेंगे। पितरों के श्राद्ध–तर्पण आदि की पृष्ठभूमि में यह उक्ति अत्यन्त हृदयस्पर्शी है।सामुद्रिक–शास्त्र के अनुसार पुरुष के दाहिने अंग का फड़कना शुभ सूचनाका लक्षण होता है। कण्व ऋषि के आश्रम में और फिर मारीच ऋषि के आश्रम में प्रवेश करने पर दुष्यंत की दाहिनी भुजा फड़कती है किन्तु वह यह जानता है कि तिरस्कार कर देने के पश्चात् कल्याण की पुनः प्राप्ति कठिन होती है। मारीच के आश्रम में बालक को देखकर राजा का यह कहना कि पुत्रों को धारण करने वाले लोग भाग्यवान होते हैं क्योंकि उनके शरीर बच्चों के शरीर की धूलि से मलीन होते हैं। निस्संतान राजा का संतान के प्रति व्यामोह से युक्त होना उचित है। वस्तुतः इस स्थल पर कवि ने किसी निस्संतान व्यक्ति की मनोव्यथा का तथा औरस संतान के प्रति गहन आसक्ति का यथार्थ चित्रण किया है। बालक के स्पर्श से दुष्यंत के अंगों को सुख मिलना उसके पितृत्व को छलका देता है। वह सोचता है कि इसके स्पर्शमात्र से जब मुझे सुख मिल रहा है, तो जिसके क्रोड से यह उत्पन्न हुआ है उसे कितना सुख प्राप्त होता होगा। निस्संतान तथा सहृदय व्यक्ति के लिए यह अनुभूति यथार्थ ही है। प्रत्येक व्यक्ति औरस संतान का इच्छुक होता है। मारीच के आश्रम में बालक की माता से संबंधित पति द्वारा परित्यक्ता के रूप में रहस्य का उद्घाटन होने पर दुष्यंत बालक की माता का नाम जानने के प्रति उत्सुक होता है तब दूसरे की स्त्री विषयक चर्चा को अनार्योचित कहकर वह निश्चित् रूप से आर्योचित आदर्श एवं मर्यादा की स्थापना करता है। भारतीय विरहिणी नारी के लिए हमारे शास्त्र एवं साहित्य – परंपरा में जो व्यवस्थाएँ दी गई हैं शकुंतला उसमें शतप्रतिशत खरी उतरी है। अज्ञानवश पूर्वोपक्षित शकुंतला के आँसुओं को पोंछकर दुष्यंत पश्चाताप से रहित होना चाहता है। वस्तुतः मनुष्य के भीतर के पश्चाताप के परिमार्जन की आंतरिक भावना का यथार्थ एवं स्वभाविक चित्रण दुष्यंत की उक्ति के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सबसे सुन्दर आदर्श नाटक के अंतिम भाग में प्रस्फुटित होता है जहाँ महर्षि मारीच दुष्यंत शकुंतला तथा सर्वदमन को लक्ष्य करके उन्हें श्रद्धा, धन और विधि के रूप में समन्वित करते हैं। साध्वी पत्नी वस्तुतः श्रद्धा की प्रतीक होती है। संतान धन के समान होती है। पति विधि अर्थात् शास्त्रीय यज्ञादि का स्वरूप होता है। नारी की यह श्रद्धा पुरुष की क्रिया से संयुक्त होकर जब पुत्ररूपी धन की सृष्टि करती है तभी स्त्री पुरुष दोनों का जीवन धन्य होता है। लौकिक जीवन के लिए गृहस्थों के सामने रखा गया यह आदर्श अनुकरणीय है, ध्यातव्य है। भौतिक आकर्षण को शाश्वत आध्यात्मिक प्रेम का रूप देने वाला यह नाटक विश्व विख्यात है। 'अनाघ्रातंपुष्पं किसलयमलूनं कररुहै' के रूप में भौतिक आकर्षणजन्य रूपासक्ति को विरहाग्नि में तपा कर आत्मिक रूप प्रदान किया है।

कहानी

माधुरी भट्ट

घरौंदा –भाई दूज

अरे वाह! आज बहुत प्रसन्न लग रही हो ... कोई ख़ास बात है क्या? रेवती ने गाड़ी से बाहर निकलते ही रूपा से पूछा।झोपड़पट्टी के दरवाज़े पर सिलबट्टे पर मसाले पीसते हुए मधुर स्वर गूँज रहे हैं रूपा की आवाज़ में, 'बड़ भाग् से दीन्ही हो छठी मैय्या बिटिया हमार....,"एकटक रेवती की ओर देखते हुए बोली...री मइया ...इतने वर्षों बाद इधर का रास्ता याद आया दीदी। हमरा भूल गयलु न...।अरे नहीं रूपा, तीन –चार साल से बहुत व्यस्त रही हूँ। स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा था। उसी सिलसिले में बार– बार बाहर जाना पड़ गया। इधर आना ही नहीं हो पाया।आज सोचा तुमसे मिलते हुए चलूँ।अब तो तुम्हारे दोनों बेटे बड़े हो गए होंगे।स्कूल भेज रही हो ना दोनों को।तुम्हारे पति परमेश्वर के क्या हाल हैं, पीना–वीना कुछ कम हुआ कि नहीं....?एक साथ इतने प्रश्नों की झड़ी लगा दी रेवती ने...।

दीदी तोहरा से का छिपाऊँ। इनकर तो वैसिनेहाल बा। पहले त कम पैसा में मिल जात रहे,अब त दुगना दाम देकर पियत है जब से शराब बंदी हुई तब से और कंगाली छा गइले दीदी...रेवती बीच में ही टोक कर पूछती है... क्यों....? शराब बंदी कर रखी है सरकार ने ..तो फिर कहाँ से मिल रही है उसे? यही त जी का जंजाल हो गइल बा दीदी। कहे के तो शराब बंदी बा.. पर बेचे वाले त दुगना –तिगुना दाम पर बेच रहल है दीदी।

अफसोस की लकीरें रेवती के चेहरे पर उभर आई थी..लेकिन रेवती के हाथ से कपड़ेऔर मिठाई का पैकेट लेते हुए रूपा के चेहरे पर आई चमक देख,उसे वह किसी सिनेमा की नायिका सी जान पड़ी थी।

इसी बीच आँखें मलते हुए नन्ही सी गुड़िया जो फटी हुई पुरानी झगुली(फ्रॉक) में भी किसी परी से कम नहीं लग रही थी,आकर धप्प से रूपा की गोद में बैठ गई। भौंचक्की सी रेवती बोल पड़ी अरे यह क्या! दो बेटे हैं तुम्हारे पास और तुमने फिर परिवार बढ़ा दिया?

रूपा मुस्कराते हुए बोली... "दीदी! अपन पूछले बाड़ी हमार प्रसन्नता का राज़... जेहि त हउ हमार जिनगी. एकरा ख़ातिर एक के बाद दू बेटवा का जन्म होला... बीच में ही टोक दी रेवती,अच्छा याद आया कुछ साल पहले तुमने बताया था... जब तुम तीसरी बार पेट से थी कि तुमने मनौती माँगी है कि अबकि बार रुनकी–झुनकी बिटिया होगी। उसके आने से घर में घरौंदा बनेगा, भैयादूज मनाया जाएगा, राखी का त्यौहार होगा... बिटिया के आने की खुशी में तुम छठ व्रत करोगी, भगवान भास्कर को सूप चढ़ाकर अर्घ्य दोगी...लेकिन फिर तुम्हारा तीसरा भी बेटा ही हो गया। बेटी के इंतज़ार में तीन बेटे हो गए। बिटिया का मुँह चूमते हुए रूपा बोली... बस दीदी... मुनिया के जन्मले ही ऑपरेशन हो गइल।अब अपन साध पूरी हो गइल। अपन आशीर्वाद के हाथ मुनिया के माथे पर धर दी है दीदी...। सच में मन चाही मुराद पूरी होने पर इन्सान की खुशियों का पारावार देखते ही बनता है। कितनी परेशानियों से जूझ रही है रूपा... लेकिन एक बिटिया के आते ही चार साल पहले की रूपा और आज की रूपा में कितना फ़र्क आ गया है।

मुनिया को आशीर्वाद देकर रेवती वापस लौटते हुए अपने अतीत में गोते लगाने लगी। एक–एक कर सारे दृश्य उसके मानस पटल पर उभरने लगे। तराजू के एक पलड़े में स्वयं को रख दूसरे पलड़े में रूपा को रखते ही उसका स्वयं का पलड़ा रसातल को छूने लगा जबकि रूपा का पलड़ा आसमान छू रहा था। उसका मन अवसाद से भर उठा। पहली बार जब उसे पता चला था कि वह माँ बनने वाली है तब मातृत्व सुख की कल्पना मात्र से ही उसका रोम–रोम पुलकित हो उठा था... और कुछ महीने बाद ही परीक्षण में कन्या भ्रूण के पता चलते ही... भ्रूण हत्या... ओह... यह क्या कर दिया था उसने... केवल यह सोचकर कि आज के माहौल में जहाँ एक ओर हवस के भूखे दरिन्दे हैं तो वहीं दूसरी ओर दहेज के लोभी भेड़िये मांस नोचने को तत्पर रहते हैं... और फिर बेटे के होते ही चैन की सांस ली थी उसने कि अब इन भेड़ियों और दरिंदों से उसका पाला नहीं पड़ेगा.... लेकिन क्या यह सही फैसला था उसका... मन की गहराई में छिपी एक और परत उभर आई उसके सामने जब उसके अपने घर में ही वह सुरक्षित नहीं रह पाई थी। घर पर पढ़ाने आने वाले उसके शिक्षक ने ही... बदनामी के डर से घरवालों ने किसी से भी कुछ न कहने का आदेश दिया जिसका दंश वह आज तक झेल रही है। आज भी उस घटना को याद कर मन अवसाद से भर जाता है। किसी से साझा किया होता तो शायद उसके घर में भी दीवाली पर घरौंदा सजाती उसकी लाडली जिसे उसने पैदा होने से पहले ही विदा कर दिया। बेटे आर्यन के मासूम सवालों से उसे कतराना नहीं पड़ता, जब हर रक्षाबन्धन पर वह अपनी सूनी कलाई दिखाते हुए पड़ोस में राखी बंधवाने जाता है।

अतीत के भँवर से स्वयं को आज़ाद करने की छटपटाहट में मन ही मन रेवती दृढ़ संकल्प लेती है ....इसी क्षण से अपनी कमजोरी पर फ़तह हासिल कर समाज में बेटियों को बचाने के लिए भरपूर कोशिश करेगी।उन मासूमों को शशक्त बनाने के लिएजिनकी ग़लती न हाने पर भी उन्हें किसी के सामने ज़ुबान न खोलने की हिदायत दी जाती है।साथ ही उनके अभिभावकों को भी यह एहसास दिलाने की पुरज़ोर कोशिश में लग जाती है कि मुँह छिपाने की ज़रूरत उन्हें और उनकी बिटिया को नहीं बल्कि उन दरिंदों को है जो ऐसे घृणित कार्यों में लिप्त हैं।तभी ऐसे नकाबपोशों को समाज के सामने नंगा किया जा सकता है और इस तरह की दरिंदगी पर अंकुश लग सकता है। यह सोचकर रेवती स्वयं किए गए भ्रूणहत्या के जघन्य अपराध से स्वयं को पश्चाताप की अग्नि में तपा कर शुद्ध करने में जुट जाती है... याब कोई रेवती दूसरे के दबाव में आकर असली गुनहगार को दुबारा फन उठाने का अवसर नहीं देगी... और ना ही कोई मजबूर माँ समाज में व्याप्त असामाजिक तत्वों के डर से अपने आँगन की चिरैया को जन्म से पहले ही विदा करने पर मजबूर होगी।

v DVwoj&fnl Ecj] 2023 (o'kZ4 vad&14)

उपन्यास तलाश अस्तित्व की – भाग–3

अजय शर्मा

दोपहर के लगभग 1:00 बज गए थे। यश सीधा बाथरूम में चला गया। नहा– धोकर, कपड़े बदलकर तसल्ली से कुर्सी पर बैठा। सिगरेट जलाकर होठों से लगा ली और अपना लैपटॉप लेकर कुछ जरूरी फाइलें देखने लगा। उसने खाने के लिए ऑनलाइन ऑर्डर कर दिया था। आज उसकी कुक नहीं आई थी। क्योंकि कुक के आने के समय तो वह उपस्थित ही नहीं था। खैर, कुछ खा–पीकर, रिलैक्स होकर वह अपने बेड पर लेट गया और कब आंखों में नींद आ गई, पता ही नहीं चला।

जब आंख खुली तो शाम के 5:30 बज गए थे। यश को अपना सिर भारी प्रतीत हो रहा था। मोबाइल का नेट ऑन करके चेक किया कि कोई विशेष संदेश या व्हाट्सएप मैसेज तो नहीं आया है।फिर एक कप कॉफी हाथ में लेकर बालकोनी में बैठ गया था ताकि बाहर के दृश्य देखकर ही कुछ सुकून हासिल हो। उसका मन जाने कैसा हो आया था?

आसपास बनी गगनचुंबी इमारतें और उनमें बने हुए छोटे छोटे दड़बे, जिन में बहुत सारे घर परिवारों को लिए बैठे लोग। हर घर की और हर इंसान की एक अलहदा कहानी। कंक्रीट के जंगल में पलते सपने, बनते और बिगड़ते भविष्य,व्यापार चक्र की गतिशीलता, आईटी कंपनियों का फैलता जा रहा मकड़जाल,सब कुछ जैसे उसके जेहन में आ और जा रहा था। दूर सामने पार्क में एक युवा जोड़ा अठखेलियां कर रहा था। लड़की रूठी हुई थी और लड़का उसको मनाने के लिए मनुहार कर रहा था।

एक पल के लिए यश को याद आ गई याशिका, जो उसे छोड़कर चली गई थी, किसी और के साथ अपने सपनों की दुनिया बसाने के लिए। वास्तव में एक प्रैक्टिकल और समझदार लड़की थी याशिका। उपलब्ध अवसरों और संभावनाओं का भरपूर दोहन करने वाली, समय की नब्ज पर हाथ रखकर चलने वाली तभी तो ठोकर मारकर तोड़ गई उसका, दिल और चली गई अपने हमराही के साथ।

यश की आंखों की कोर गीली हो गई। उसे याद आया वह समय जब एमबीए के साथी लोग उसे मजनूं कहने लगे थे। एक ने तो बाकायदा शायरी करते हुए कहा था,"छोड़ दे सारी दुनिया किसी के लिए, ये मुनासिब नहीं आदमी के लिए। प्यार से भी जरूरी कई काम हैं, प्यार सब कुछ नहीं ज़िंदगी के लिए।"रो पड़ा था यश यह सुनकर। सिर झुका कर स्वीकार किया था, उसने ज़िंदगी का कड़वा यथार्थ।"

कम ऑन यार यश, मंज कतपदा। दक इम उमततल. तुम एक नौजवान हो, जिंदगी के मजे लो यार। मौज लो और रोज लो,ना मिले तो खोज लो। "यश के एक खिलंदड़ दोस्त राहुल ने कहा था।" मेरे भाई कौन सी जवानी की बात करते हो आप?", यश के स्वर में दर्द था। "बचपन और प्रौढ़ावस्था के बीच एक् स्टेज होती है, जवानी। जो मेरी जिंदगी में कभी आई ही नहीं। मैंने तो केवल असुरक्षा, अवसाद, कड़वाहट, तकलीफ, दर्द, घुटन, लाचारी, मजबूरी, बस यही सब देखा है। कब जिंदगी समझौतों में बदल गई और कब अपने दर्द को छुपाने के लिए अपने आप को काम के नशे में डुबो लिया, पता ही नहीं चला।"

राहुल चुप हो गया था। वैसे वह भी गलत कहां था? ज़िंदगी को देखने का हर इंसान का अपना एक नजरिया होता है। जिसकी आंखों पर हालात और बातें जैसा चश्मा लगा देते हैं, उसे जिंदगी वैसी ही नजर आने लगती है।यश की जिंदगी के कैनवास पर केवल आड़ी तिरछी रेखाएं ही थीं, रंग नहीं थे और कोई मुकम्मल तस्वीर भी नहीं थी। 32 की उम्र को पार करके भी वह अपनी आशंकाओं व चिंताओं के भंवर में ही डूबता उतराता जा रहा था। क्या कहा जाए, क्या किया जाए? ईश्वर इच्छा...

रात के 8:00 बज गए थे। कुक आकर खाना बनाकर चली गई थी।यश को बिल्कुल भी भूख नहीं थी।आज कुक ₹ 500 उधार मांग कर ले गई थी। शायद कोई मजबूरी रही होगी।कैसी मजबूर जिंदगी है ?आदमी के लिए ₹ 500 भी एक बड़ी रकम होती है।और उसे एक भारी–भरकम पैकेज के बात भी मन की शांति नहीं। हर महीने कुछ रुपए और मैसेज घर भेज देता है। गाड़ी चलती रहती है।

जिंदगी सहज और स्वीकार्य गति से चल रही है। पापा की,मम्मी की, मेधा की, और उसकी? खैर छोड़ो, यश डाइनिंग टेबल पर आकर बैठ गया। उसकी मनपसंद सब्जी और परांठे थे। कुक भी उसकी पसंद–नापसंद से परिचित थी। वैसे यश के अच्छे स्वभाव व शालीनता के सभी कायल थे। लेकिन शांत व संयत चेहरों के पीछे कितना तूफान और दर्द समेटे आदमी जी रहा है,यह बात कौन जान सकता है?

खाना खत्म करके जूठे बर्तन सिंक में रख दिए थे। यश कुछ देर टहलने के लिए ऊपर छत पर चला गया था। आसमान की चुनरी पर असंख्य चमकीले तारे टंक गए थे। आकाश में उत्तर दिशा में ध्रुव तारा और सप्त ऋषि मंडल नजर आ रहे थे। यश की आंखें दूर आसमान में फैली हुई आकाशगंगा को देख रही थीं। जो अपने अंदर उसी तरह असंख्य तारे समेटे हुए है, जिस तरह मानव जीवन में असंख्य रहस्य छुपे हुए हैं।

तभी आसमान में एक तारा टूटा और यश को अपनी मां की बात याद आ गई कि टूटता हुआ तारा देखकर मांगी गई मुराद पूरी होती है– 'लोका समस्ता सुखिनो भवंतु।' उसके होठों से अस्फुट सा स्वर निकला।आसमान में पूर्णिमा का चांद थाली की तरह चमक रहा था। चारों तरफ छिटकी शीतल चांदनी बहुत भली प्रतीत हो रही थी। रात गहराती जा रही थी। नीचे उतरकर अपने फ्लैट में आते–आते लगभग 10 बज गए थे।

v DVwj&fnl Ecj] 2023 (o'kZ&4 vad&14)

यश अपनी स्टडी टेबल पर बैठकर लैपटॉप ऑन करके उसमें स्क्रीन पर दर्शाए गए आंकड़ों में खो गया। सॉफ्ट ड्रिंक की लॉन्चिंग को लेकर एक महत्वपूर्ण मीटिंग कल 11:00 बजे ऑफिस में रखी गई थी। यश को भी उसमें एक अहम प्रेजेंटेशन देना था। आकाश के साथ डिस्कस करके पूरी तैयारी कर ली थी। केवल एक अंतिम नजर डालनी थी।

घड़ी की सुई ने जैसे ही 11:00 का गजर बजाया कि अचानक कमरे की बत्ती चिरर चिरर की आवाज निकालने के साथ बार बार जलने –बुझने लगी।अत्याधुनिक सोसाइटी की बिजली वितरण व्यवस्था के समूचे तंत्र में ऐसी घटना एक आश्चर्य ही थी। यश समझ नहीं पाया कि अचानक बत्ती चली गई।इनवर्टर कनेक्शन से जुड़ा होने के बावजूद कमरे में उजाला नहीं हुआ बल्कि काला अंधेरा फैल जाने के बाद एक अजीब सी मनहूसियत छा गई।

मोबाइल की टॉर्च जलाकर रोशनी कर के जैसे ही यश ने सामने की तरफ प्रकाश फेंका, दीवार पर प्रदर्शित दृश्य देकर वह मानो जड़ होकर रह गया। दीवार पर उभरती हुई एक काली छाया किसी नारी आकृति की थी, लेकिन छाया को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो कोई पौराणिक या ऐतिहासिक युग की महिला नायिका की छवि ही छाया रूप में दीवार पर प्रदर्शित हो रही है।अगरचे यश एक मजबूत दिल –दिमाग का आदमी था, लेकिन अचानक घटित हुए इस प्रकरण से वह मानो स्तंभित होकर रह गया कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं?

तभी उसके कानों में मानो जलतरंग बज उठे। इतनी मधुर और दिलकश हंसी उसने अपने जीवन में पहली बार सुनी थी।" हैरान हो गए ना यश,कि मैं कौन हूं,और यहां क्या कर रही हूं?" आकृति की आवाज सीधे यश के अंतर्मन की गहराइयों को स्पर्श कर रही थी।"मैं वही हूं जिसने आज सुबह ही तुम्हारी जिंदगी में दस्तक दी है। अपनी उपस्थिति का एहसास तो सुबह ही मैंने तुम्हें करवा दिया था, लेकिन अपनी जिंदगी की मसरूफियत में तुम मुझे भूल गए, लेकिन कोई बात नहीं।

अब तो हमारा साथ बहुत लंबा चलने वाला है। कुछ साझा रास्तों पर हमें मिलकर चलना है, और कुछ उम्दा मंजिलें हैं जो हम को मिलकर पानी हैं। मेरे साथ की आदत डाल लो, मैं तुम्हारी जिंदगी में एक अहम वजह बन कर आई हूं। "दीवार पर अंकित नारी छवि की बातें यश मंत्रमुग्ध होकर सुनता जा रहा था। युवती मानो सम्मोहन विद्या की विशेषज्ञा थी। तभी तो यश उससे यह भी नहीं पूछ सका, कि तुम कौन हो और यहां आने का तुम्हारा मकसद क्या है?"

अपना परिचय और मकसद मैं तुम्हें बाद में बता दूंगी।आखिर इतनी जल्दी भी क्या है? अभी तो यह जान लो कि मेरा साथ तुम्हारी जिंदगी बनाने के लिए है, जिसकी शुरुआत हो चुकी है।अब मैं तुमको वह जलवा दिखाऊंगी कि तुम आसमान की ऊंचाइयों को छू लोगे। "मंजिले ये मंजिले,हैं पाने के लिए। आसमां ये आसमां, है छू जाने के लिए..."

मधुर आवाज में गुनगुनाते हुए वह नारी आकृति कब दीवार पर से गायब हो गई और कमरे में दोबारा बिजली आ जाने से कब रोशनी हो गई, यश को कुछ समझ नहीं आया। अभी आधा घंटा पहले आखिर हुआ क्या था– कौन थी वह ?प्रेतात्मा, परग्रही, देवी,भटकती हुई रूह या कुछ और? अपनी आराम कुर्सी पर स्थिर बैठा यश विस्फारित नेत्रों से उस दीवार को देख रहा था, जिस पर टंगी हुई घड़ी रात के 11:50 दर्शा रही थी।

कुछ समय बाद यश ने अपने होशोहवास दुरुस्त किए। फ्रिज में से बोतल निकालकर ठंडा पानी पिया। वाशबेसिन में अपना मुंह धोया। कुछ स्वस्थ होकर वह अपने बेड पर चला गया। सुबह का 6:00 बजे का अलार्म घड़ी में सेट करके वह नींद के आगोश में चला गया। आश्चर्य की बात यह थी कि बिस्तर पर लेटते ही उसको तुरंत गहरी नींद आ गई। और किसी रूह का सपना या एहसास उसको नींद के दौरान नहीं हुआ।

❖❖❖

ग़ज़ल

अतीश मिश्रा बुन्नू
खगेश भवन, मधुबनी पुर्णि बिहार

तेरी याद

मैं हर पल सोचता रहता कि तेरे पास से गुजरूं, मगर हिम्मत नहीं थी,फिर उसी एहसास से गुजरूं।

है गहरा ज़ख्म रह जाता ख्यालों के मिटाने पर, नहीं चाहता, दुबारे मैं उसी इतिहास से गुजरूं।

गुजर जाती है हर दरिया नज़र के पास से हो कर, यही किस्मत हमारी है कि लम्बी प्यास से गुजरूं।

दिखाकर सामने मंजिल मुझे राहों ने है रोका, लगाकर पर ख्यालों के भला आकाश से गुजरूं।

किसी की बेवफाई को भुला देना नहीं मुमकिन, यही बेहतर है बाँकी जिन्दगी सन्यास से गुजरूं।

❖❖❖

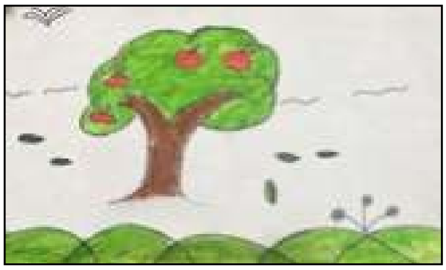

तमंना
कक्षा–3, आयु–8 वर्ष
खजूरी दिल्ली–110094

ग़ज़ल

गीतेश्वर बाबू घायल
–फिल्मी गीतकार –
आष्टा भोपाल, मध्यप्रदेश

बन गए आंसू मेरे

क्यों शराबे,गम दुवारा,बन गए आंसू मेरे।
मेरे जख्मों का सहारा,बन गए आंसू मेरे।।

क्यों करूं शिकवा किसी से,ये मुकद्दर था मेरा।
अब मुकद्दर का सहारा,बन गए आंसू मेरे।।

मैं किसी की चाहतों में,भूल बैठा था जहां।
वो जो रूठा तो सहारा बन गए आंसू मेरे।

नफरतों की जद में यारों,करस्ती –ए–दिल हे मेरा।
गर्दिशे दिल का सहारा बन गए आंसू मेरे।

आबे जम–जम मान कर मैं, खारे आंसू पी गया।
अब मेरे गम का गुज़ारा,बन गए आंसू मेरे।

उसने वर्षों की मोहब्बत,एक एक पल में तोड़ दी।
राहतों का एक इशारा,बन गए आंसू मेरे।

तेरे,मेरे प्यार को,कुछ बद्दुआएं खा गई।
सबकी नजरों का नज़ारा,बन गए आंसू मेरे।

सो दुआएं,रोज घायल,देगा रूठे यार को।
प्यार का उसके नकारा, बन गए आंसू मेरे।

कविता

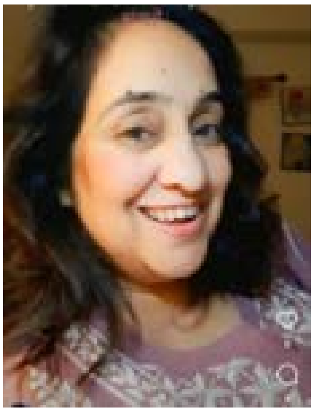

पारुल सिंह
नोएडा

कविता में कहानी

पाँच सालों बाद जब एक रात ..
निर्जन पहाड़ की चोटी पर बने
एक छोटे से कॉटेज का दरवाज़ा तुम खटखटाओगे।

"कौन है?" पूछने के लिए ठीक तुम्हारे ऊपर के चौबारे की खिड़की से झाँकेगी कोई स्त्री।

अधूरे चाँद की रोशनी में भी वो पक्का पहचान लेगी तुम्हारे होठ ..

उसका दिल दुआ बन–बन कर आँखों में उभर आएगा।
और प्रार्थना बन कर मूँद देगा उसकी आँखें।

लोगो को आँकना कब का छोड़ दिया उस ने, और पाँच सालों में पहला मेहमान !!

उत्साह में, लप्प–झप्प लकड़ी की सीढ़ियाँ फलाँगती नीचे आकर वो दरवाज़ा खोल देगी।

तुम्हे उस कमरे में ले जाएगी जिसकी चौखट से लेकर छत तक को शब्दों से सजा रखा है उस ने।

लकड़ी की दीवारों पर लपेट रखा है पश्मीना
हर आले में बैठा रखे हैं बुद्ध।

एक कोने में अमृता और एक में बारबरा कार्टलैंड की किताबें
एक में भगवती चरण वर्मा की, और चौथा कोना ख़ाली ।

कमरे में एकमात्र पेंटिंग, अलाव के ऊपर सफ़ेद फूलों की।

क़ालीन बिछे कमरे में अलाव के पास देवदार की कुर्सी पर बैठा कर वो करेगी तुम्हें कम्बल पेश।

शाल में लिपटी वो हाँफती, साँसे संभालती सी पूछेगी

"यहाँ का पता कैसे मिला?"

तब "बैठो, रिलेक्स।" कह कर वो पुरुष पक्का उसे निरुत्तर कर देगा।

वहीं क़ालीन पर एक कुशन के पास अपने घुटनो पर
सिमट जाएगी वो।
निहारती रहेगी अलाव को घुटनो में अपनी ठुड्डी को फंसा कर।

ये पाँच साल नही, तैतालिस हज़ार आठ सौ घंटे थे।

इतने घंटो बाद तो हर सवाल सौ–सौ बार जवाब बन कर हवाओं में घुल जाता है।

समा जाता है ऑक्सिजन बन कर फेफड़ों में।
दौड़ने लगता है खून बन कर नसों में।

सारे जवाबों की पी ड़ी एफ स्वतः स्थांतरित हो गयी आँखों से आँखों में ब्लूटूथ सरीखी।

बे बिजली के घर में अलाव की चट–चट
और सोलर पैनल से रोशन एक छोटे से बल्ब की झिलमिलाहट के अलावा
बस एक ही सवाल तैरेगा पुरुष की आवाज़ में।

"एक कप चाय मिल सकती है क्या? मैं निकलूँगा फिर।"

शाल में लिपटे चेहरे पर एक जोड़ी आँखे बैचेन हो जाती हैं।"

"तुम्हारी एक कप चाय उधार हैं ना मुझ पर!!" वो स्त्री अलाव में आँख गड़ाए हुए ही पूछती है।

जवाब में, अभी–अभी झुक कर उठी आँखों से ख़ालिश स्नेह में भीगी एक मुस्कुराहट ने कहा, "नो प्रॉब्लम"

विदा के समय चौखट थामे वो देख रही थी उसे जातेद्य
जब उसने पलट कर पूछा,"घर नहीं आओगी?"
जवाब था,"घर ही तो हूँ।"

ऊँचे पहाड़ की कॉटेज पर जा बसने वाली स्त्री को
पाँच सालों बाद पति हो या प्रेमी ढूंढ़ते हुए ज़रूर आता है, इस विश्वास के साथ कि उसे समझा जाएगा।

और वो खुले दिल से स्वागत करती है।
ऊँचे पहाड़ पर जा बसने वाले शिकायतें और उम्मीदें तराई में ही छोड़ जाते हैं,
ऊँचाई पर इनका सिग्नल नही आता।

कितने प्रश्न मुँह बायें खड़े हैं

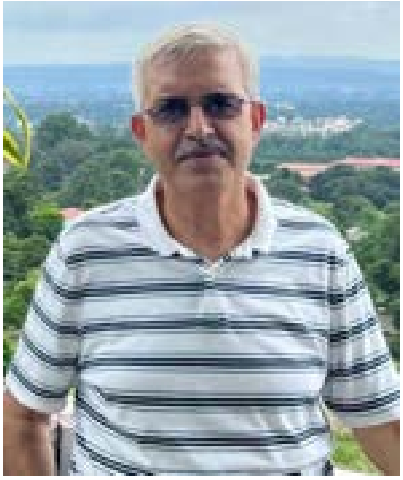

अरुण भगत

कितने प्रश्न मुँह बायें खड़े हैं
उत्तर की माँग पर अड़े हैं,
ये सवाल वाक़ई हैं बहुत ढीठ,
न मोड़ सकते तुम उनसे पीठ,
सही–ग़लत न्याय–अन्याय की पूछते बात,
न ये देखें दिन और न ही देखें रात,
अनंत काल से ये यूँ ही अचल अडिग खड़े हैं,
इनको हल करते–करते हम कितने विवादों में पड़े हैं,
पर कहाँ पकड़ पाया है कोई सत्य–असत्य का छोर,
क्या किया है आपने कभी इस बात पर ग़ौर,
ये प्रश्न यूँ ही अधर में लटके रहेंगे,
तकते रहेंगे हमें और कुछ न कहेंगे,
पर ये हमें चैन से जीने भी नहीं देंगे,
यूँ ही प्रत्येक युग में हमारी परीक्षा लेंगे,
चाहे कितनी भी रही हो किसी समय की माँग,
इन शंकाओं का सागर कौन पाया है लांघ?

❖❖❖

नमस्वी पांडेय
आयु–9 वर्ष

लेख

दीक्षा तिवारी
औरैया, उत्तर प्रदेश (भारत)

अधिकारः मानवता को

अथर्ववेद में एक सूक्ति है मात्वाकेचिद् वियमन्। अर्थात् पराधीनता के बंधन में मत बंधो।

रूढ़िवादिता रूपी मानसिक गुलामी संसार की सबसे बड़ी गुलामी है। मानवाधिकार की परिकल्पना सभ्य मानव के मानस में बहुत ही प्राचीन काल से रही है, परंतु आधुनिक काल में इसकी चर्चा सर्वाधिक हो रही है। प्राचीन काल व खासकर मध्यकाल में मानवाधिकार हनन की परिपाटी बहुत व्यापक थी। ऐसा नहीं कि केवल भारत ही ऐसे तमाम विसंगतियों से भरा हुआ था, बल्कि संपूर्ण विश्व इन बुराइयों से ग्रसित था। मध्यपूर्व और उत्तरी अफ्रीका में तो आदमी की गुलामों के रूप में बिक्री हुआ करती थी। उन पर मनमाने जुल्म ढाये जाते थे। यह अत्याचार केवल पुरुषों तक सीमित नहीं था। महिलाओं की स्थिति तो और भी बदतर हुआ करती थी। मध्य कालीन भारत में नवाबों और बादशाहों के यहाँ हजारों की संख्या में बेगमें हुआ करती थी। मध्यपूर्व व उत्तरी अफ्रीकी मुल्कों में औरतों की बाजारें लगा करती थी। वस्तुओं की तरह उनको खरीदना व बेचना होता था। मानवाधिकार की बात तो उस समय कल्पना थी। प्राचीन चीन में दासों की दुर्दशा तो थी ही, औरतों के हालात तो और भी बदतर थे। उनके साथ कई प्रकार से अमानवीय व्यवहार किया जाता था।

आधुनिक काल के प्रारंभ में गिरमिटिया मजदूरों को सुदूर सागर पार देशों, टापुओं व खेतों में काम करने के लिये ले जाया जाता था। वहाँ वे मजदूर अपने क्रूर मालिकों के अधीन कमरतोड़ परिश्रम किया करते थे और उन्हें इस कार्य के बदले केवल जीवन जीने का अवसर प्राप्त था। मॉरीशस, फिजी और गुआना जैसे अनेक देशों की आज की पीढ़ी उन्हीं अभागे मजदूरों की संताने हैं।

मानवाधिकार की आधुनिक परिकल्पना मुख्य रूप से राजनीतिक है। हिटलर के समय में जर्मनी में यहूदियों का शोषण व हत्यायें हुयीं। इसमें नस्लीय दुर्भावना ने काम किया। मुसोलिनी जैसे नेताओं ने अपनी तानाशाही के द्वारा मानवाधिकार ने दम तोड़ता हुआ दिखा। आज भी कई देशों में हावी तानाशाही से नागरिकों के समस्त अधिकार लोहे की कोठरी में बन्द है। पिछले कुछ वर्षों में बाल–शोषण और बाल–श्रमिकों की विकट समस्या ने भी विश्वव्यापी स्तर पर मानवाधिकारों के पक्षधरों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया है। गरीबी, अशिक्षा, रुढ़िवादिता आज भी लोगों को मानवाधिकारों से वंचित किये हुये है।

नारियों के शोषण व उत्पीड़न का सिलसिला अभी भी चल रहा है। निर्लज्जतापूर्वक बलात्कार जैसा जघन्य अपराध किया जा रहा है। तमाम अत्याचारों के खिलाफ सभी की आवाज उठाता लेखन व साहित्य भी मानवाधिकार के दायरे में आ चुका है। सलमान रुश्दी, तसलीमा नसरीन जैसे विश्वविख्यात लेखकों को भी आज गुमनामी सी जिंदगी का अभिशाप झेलना पड़ रहा है। उन्हें, उनके अपने देश व समाज में व्याप्त बुराइयों के लिए बोलने के लिए निर्वासितों की भांति जीवन यापन करना पड़ रहा है।

वर्तमान परिदृश्य में वैश्विक स्तर पर विभिन्न गैर सामाजिक संगठनों द्वारा उन्माद फैलाती हुयी विचार धारायें जिनके परिणाम स्वरूप रूस–यूक्रेन, इजराइल–फिलिस्तीन के जैसे युद्ध देखने को मिल रहे हैं, यह भी एक तरह से मानवीय अधिकारों के गला घोंटने के प्रयासों के परिणाम हैं। लेकिन आशा की लौ अभी बुझी नहीं है, वह अत्याचारियों के प्रभुत्व में काँपती जरूर है, पर निरंतर जल रही है। आज राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोग गठित हो चुके हैं। इन आयोगों को व्यापक रूप से काम करने की आवश्यकता है केवल दिवस विशेष या घटना विशेष पर चर्चा करने से हम मानव जीवन मूल्यों को स्थापित नहीं कर सकते। आशा है, सामाजिक चेतना के साथ विश्व के समस्त राष्ट्रों में मानवाधिकार का झण्डा लहरायेगा और एक दिन मानवीय सभ्यता से इस शोषण और उत्पीड़न का अंत होगा। हम विश्व बंधुत्व की भावनाओं भरे वातावरण में आजाद पंछी की भांति विचरण करते हुए कलरव गायेंगे।

v DVwj&fnl Ecj] 2023 (o'kZ4 vad&14)

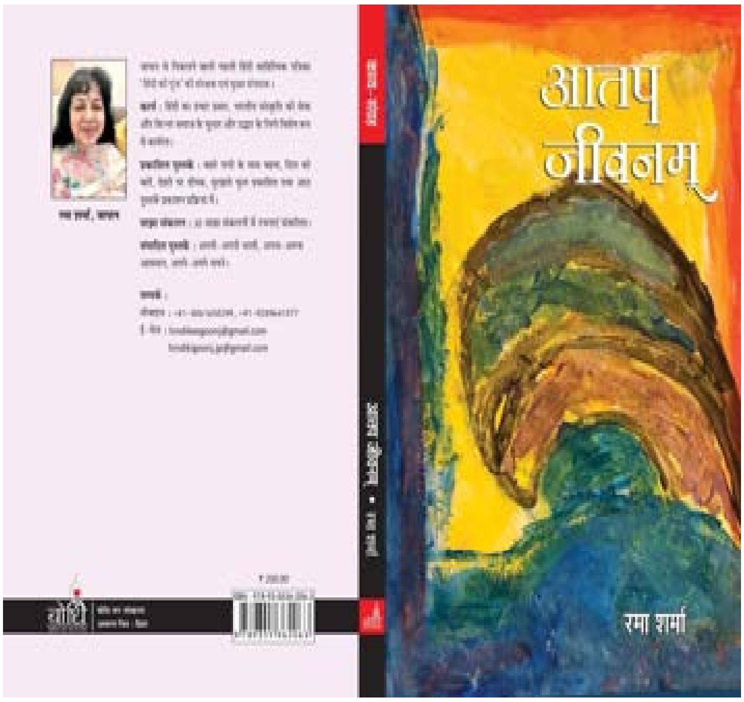

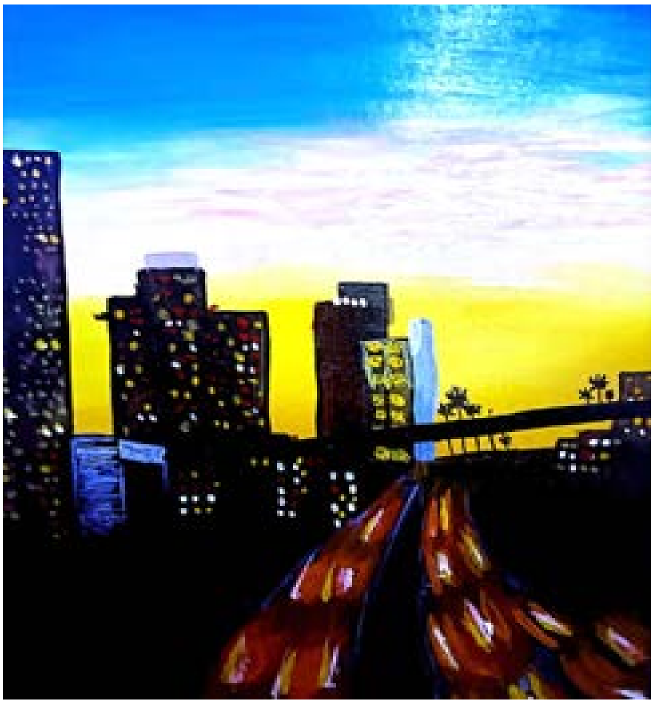

धैर्या चौहान
कक्षा–10

पुस्तक समीक्षा

रमा शर्मा के आतप जीवनम में भारतीय संस्कृति एवं देशभक्ति

प्रवासी संधिमुक्त शब्द है जो प्र + वास =प्रवास में ' ई 'प्रत्यय लगकर प्रवासी शब्द बना है।

प्रवासी व्यक्ति अपना देश छोड़कर अन्य देश में बस जाता है, उनकी स्थिति अनिश्चित होती है, वे वापस लौटने का फैसला भी कर सकते हैं। परन्तु विदेश में रहते हुए भी उनमें अपने देश की यादें बनी रहती हैं। वे नए परिवेश से भी घुलते – मिलते हैं, जिससे उनके अंदर नवीन संवेदनाओं का उभार होता है। इन परिवेश और परिस्थितियों को वे अपनी रचना का विषय बनाते हैं। उनके द्वारा रचित साहित्य प्रवासी साहित्य कहलाता है।

डॉ० बापूराव देसाई ने प्रवासी साहित्य की परिभाषा देते हुए लिखा है ––––'' विश्वभाषा हिन्दी का वह साहित्य जिसमें प्रवासी रचनाकार अपना देश छोड़कर दूसरे देशों में बस जाने के बावजूद अपनी मातृभूमि की भाषा, समाज, संस्कृति, सभ्यता, परम्परा को न भूले स्वानुभव के आधार पर सुख –– दुःख की अभिव्यक्ति करता है। ''1

सुश्री रमा शर्मा जापान की एक महत्वपूर्ण प्रवासी साहित्यकार हैं। भारत से दूर रहते हुए भी इनका व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व भारतीय संस्कृति की सुगंधि से भरा हुआ है। भारतीय संस्कृति के समस्त गुण मानों इनके व्यक्तित्त्व से प्रतिध्वनित होते दिखाई पड़ते हैं जिसका प्रभाव इनकी रचनाओं पर भी दिखाई देता है और इनकी रचनाएँ स्वतः मन को मुग्ध कर लेती हैं। राकेश छोकर ने इनके संबंध में लिखा है ––– '' विविध सांस्कृतिक विरासत को सहेजते हुए इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में भारतीयता जीवंत रूप में विद्यमान है। रचनाकार का प्रवासी होना उनकी सूक्ष्म कला को प्रभावित नहीं करता है। अंतःकरण से उपजी रचनाएँ मानस पटल पर छाप छोड़ती हैं। '' 2

इनकी कविताओं में भारतीय संस्कृति की अविरल धारा लगातार बहती दिखाई देती है। कोरोना काल को लेकर ' बुद्ध ' नामक कविता है जिसमें बुद्ध से कोरोना को मिटाने की पुकार की गई है ––––––

''कहाँ छिपे हो बुद्ध बाहर आओ
चारों ओर घूम रहा अंगुलिमाल फिर से
आज का अंगुलिमाल महामारी बन गया है
चारों ओर फैली बीमारी बन गया है,
नहीं डरता अब वो किसी से

v DVwj &fnl Ecj] 2023 (o'kZ&4 vad&14)

पहले डाकू था अब रोग बन गया है।'' 3

'आ जाओ राम' कविता वर्तमान समय के मूल्यों को राम के समय के मूल्यों से तुलना करती हुई सुंदर रचना है ————

''कल की सीता रावण के घर में भी सुरक्षित थी
आज की नारी अपने हीं घर में है बेचारी।'' 4

'जय हिन्द' कविता में आजादी पर व्यंग्य किया गया है। वर्तमान समय की आजादी में भी भारतीय मानसिक रूप से गुलाम हैं, इसका वर्णन रमा जी ने इस कविता में किया है ————

'' आज बाड़ हीं खेत को खा रही है
ये कैसी आजादी दिनों दिन आ रही है। '' 5

रमा जी नारी जाति पर हो रहे अत्याचारों का उल्लेख करतीं हैं, सब जगह केवल दिखावा हावी है।

"नारी दिखावे को आजाद पर
दिनोदिन गुलाम होती जा रही है
कहीं दहेज के कारण
तो कहीं भ्रूण – हत्या में मारी जा रही है
बस दिखावा रह गया है आजादी का
वरना हर कोई फिर से गुलाम हो गया है। '' 6

' सच्चा हिंदुस्तानी ' कविता में रमा जी तिरंगा के अपूर्व शान का वर्णन करतीं हैं। —————

'' बच्चा, बूढ़ा हो चाहे जवान हो कोई
सभी तिरंगे हो रहे
तिरंगे में हीं खो रहे हैं। '' 7

परन्तु रमा जी एक सच्चे हिंदुस्तानी की परिभाषा देती हुईं कहतीं हैं ——————

'' न कोई बिटिया रोये
न किसी की लुटे आबरू
सब रहें सदा यूँ हीं मुस्काते
कभी न आये किसी की भी आँखों में आँसू
आज के दिन ये कसम उठानी है
जो पूरा करेगा इन कसमों को
वो हीं सच्चा हिंदुस्तानी है। '' 8

रमा जी भारत से दूर होते हुए भी भारत की संवेदना से पूर्णतः ओत – प्रोत दिखाई देती हैं। भले हीं वे जापान में रहतीं हों परन्तु भारत उनके हृदय में बसा हुआ है। अंतर्राष्ट्रीय लेखिका बन जाने के बाद भी वे निरंतर भारत के लिए कुछ करना चाहतीं हैं। अपनी इस इच्छा को वे अपनी कविता ' समय की चक्की चलती रही ' कविता में भी व्यक्त करतीं हैं ——————

'' बन गई लेखिका अंतर्राष्ट्रीय
लेकिन राष्ट्र को न भूल सकी कभी
जो बसता था मेरे दिल के अंदर
अपने इस प्रेम को बहा दिया
हिन्दी की गूंज का नारा लगा दिया
फहरा दिया झंडा हिन्दी की गूंज का
हर कोशिश से उसका परचम
देश – विदेश में फहराती रही
समय की चक्की चलती रही। '' 9

' हिन्दी की गूंज ' पत्रिका के माध्यम से रमा जी जापान में हिन्दी की अथक सेवा कर रहीं हैं और हिन्दी भाषा को अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर स्थापित करने का प्रयास कर रहीं हैं। इनका यह प्रयास स्तुत्यपूर्ण है एवं देशभक्ति से ओत – प्रोत है। राकेश छोकर जी लिखते हैं —— '' सुदूर देश में भी अपनी माटी की सोंधी खुशबू के साथ वह साँस लेती है। यह मेरे लिए वृहद भारत की अनूठी संस्कृति के लिए गौरव की धाती हैं। ''10

वर्तमान की समसामयिकता का कठोर यथार्थ भी रमा जी अपनी कविताओं में बेख़ौफ़ होकर उकेरतीं हैं। आज इंसानियत को शर्मसार करने वाली घटनाएँ हर गली – मुहल्ले, चौराहे पर घट रही है, रमा जी कि कविताओं में इस पर प्रहार किया गया है। 'कृष्ण सो रहे हैं ' कविता में वे लिखतीं हैं ————

'' हर गली चौराहे पर
आज नग्न हो रही द्रौपदी है
हर कोने में छुपा बैठा
रावण है आज
सीता अपने हीं घर में लुट रही है
दुर्योधन के दौर में
कुंती भी लज्जित हो रही है
किस – किस को पढ़ाये
गीता और रामायण का पाठ अब
जब खुद हीं भटक गया
राम है आज। '' 11

इनकी कवितायें विविध भावपूर्ण छवियों से पूर्ण हैं। अपनी संस्कृति, राष्ट्र की सूक्ष्म विशेषताओं को उकेरती हुई भी उनकी लेखनी में समसामयिकता की अनूठी छाप मौजूद है। डॉ० अनीता कपूर लिखतीं हैं ———————— '' कवयित्री के लेखन में कहीं –कहीं पीड़ा भी उभर आने के बावजूद उनकी लेखनी में अनुभव की परिपक्वता महसूस होती है, जो रचनाओं की विशेषता है, और उन्हें दूसरों से अलग करती हैं। '' 12

नारी – जाति पर हो रहे शोषण, अत्याचार से भी वे डटकर संघर्ष करने की बात करती हैं। ' मेरा देश ' कविता में वे भारत की वंदना करतीं हैं, और इसी सन्दर्भ में ' निर्भया ' प्रकरण की भी चर्चा करतीं हैं ——————————

v DVwj&fnl Ecj] 2023 (o'kZ4 v ad&14)

'' निर्भय हो जिसमें हर निर्भया
शर्मिंदा न हो कोई माँ
हे माँ ऐसा करना कुछ
सदा रहे मेरा भारत स्वच्छ
ये मेरा हिंदुस्तान जिस पर कुर्बान है मेरी जान। '' 13

महात्मा गाँधी को भी अपनी कविता में याद करतीं हैं और उनके विराट और महनीय व्यक्तित्व की चर्चा करतीं हैं ––

'' तुम बापू थे या थे कोई जादूगर
अपना काम स्वयं करो
सन्देश हीं नहीं दिया
कर के दिखा दिया
अपना पाखाना खुद उठाकर
समूचे विश्व को हतप्रभ कर दिया
शांति का नारा लगा दिया
दंगे रुकवा दिये। '' 14

भारतवर्ष की संस्कृति की गौरव – गरिमा की झाँकी उनकी कविताओं में देखने को मिलती है। भारत के महापुरुषों को वे बरबस याद करतीं हैं। इसी क्रम में 'वल्लभ भाई पटेल ' को भी याद करतीं हैं, जिन्होंने विभिन्न रजवाड़ों को एक करके भारत को कई टुकड़ों में विभक्त होने से बचाया था। वे लिखतीं हैं ––––––––––

''वल्लभ भाई की बात हीं निराली थी
लौह पुरुष थे सरदार थे
रजवाड़ों को ख़त्म कर भारत को एक रूप करने वाले
वो एक निराले हीं शिल्पकार थे। '' 15

रामायण की उर्मिला को भी वे न भूल सकीं। उसके मौन आँसुओं के दुःख को रमा जी ने अपने शब्दों में उकेरा है ––––––

'' जब – जब वनवास का जिक्र आएगा
राम – सीता के संग उनका हीं नाम आएगा
लेकिन जब – जब उनका नाम आएगा
मैं उसमें छिपी हुई नजर आऊँगी। ''16

'अंबा ', ' दमयंती ' जैसी नारियों का भी उल्लेख वे अपनी कविता में करतीं हैं। उनके माध्यम से वे वर्तमान समय का प्रमुख मुद्दा नारी सशक्तिकरण की प्रासंगिकता को स्पष्ट करतीं हैं।

वस्तुतः रमा शर्मा जी की कविताएँ यथार्थ के धरातल पर संस्कृति की झाँकी का सुन्दर कैनवास है, जो सहज हीं पाठकों का मन मोह लेतीं हैं और अपनी संस्कृति की गहराई में डूबता – उतरता हुआ पाठक यथार्थ की कठोरता से भी परिचित होता लता है। निश्चय हीं रमा शर्मा जी कि कविताओं में भारतीय संस्कृति और देशभक्ति का औदात्यपूर्ण चित्रण है, जो यह दर्शाती है कि लेखिका जापान में रहकर भी भारत की संवेदनाओं से ओत – प्रोत हैं। भारत उनके हृदय में बसता है, उनके लेखन में झलकता है, और उनके अन्तर्गगन में रमता है। ऐसे श्रेष्ठ प्रवासी साहित्यकारों के हीं बदौलत विदेशों में हिंदी और भारतवर्ष की गौरव – गरिमा सदियों तक प्रकाशमान होती रहेगी, और भारत का ज्ञान सूर्य विश्व में चमकता रहेगा।

सन्दर्भ – सूचि :–

1.देसाई, डॉ० बापूराव, प्रवासी साहित्य का इतिहास : सिद्धांत एवं विवेचन, प्रकाशन –– पराग प्रकाशन, संस्क2020 पृ० 18
2. शर्मा, रमा, आतप जीवनम, प्रकाशन –– बोधि प्रकाशन, संस्करण –– 2022, पृ० 12
3. वहीं, पृ ० 51
4.वहीं, पृ० 52
5.वहीं, पृ० 69
6.वहीं, पृ० 69
7.वहीं, पृ० 72
8.वहीं, पृ० 73
9.वहीं, पृ० 104
10.वहीं, पृ० 12
11.वहीं, पृ० 106
12.वहीं, पृ० 13
13.वहीं, पृ० 85
14.वहीं पृ० 93
15.वहीं, पृ० 98
16.वहीं, पृ० 122

डॉ० अम्बे कुमारी
सहायक प्राचार्या
हिन्दी विभाग
मगध विश्वविद्यालय
बोधगया, बिहार

रिदम ठाकुर
कक्षा–5

शोध आलेख

डॉ. अम्बे कुमारी
मानविकी संकायाध्यक्ष, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार

जीवन के यथार्थवादी सौंदर्य का काव्य – संग्रह : पोंछती है जो आँसू की बूँद

डॉ अम्बे कुमारी समकालीन हिन्दी कविता की नवोदित कवयित्री हैं। इनके अबतक पाँच काव्य –संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'पोछती है जो आँसू की बूंद' कवयित्री का एक अनमोल काव्य –संग्रह है,जिसमें जीवन के विविध –पक्षों का सुंदर चित्रण हुआ है। इनकी कविताओं में मानव जीवन का यथार्थ दिखलाई पड़ता है,जो वर्तमान युग की सच्चाईयों को बेबाकी से दर्शाने में पूर्णतया सक्षम है। आज के मानवीय हिंसा और रक्तपात की ओर ईशारा करते हुए मानव जीवन के गहरे दुःख को कवयित्री अम्बे इन शब्दों में व्यक्त करती है–

"बहता है जो यह 'लाल' खून
वह खून के आँसू रुलाता है
बेरहम हो गया इंसान कितना
यह लाल खून बतलाता है
गिरती है जो आँसू की बूँद
वह एक हीं मानव की है। "

इनके इस काव्य–संग्रह में कई ऐसी कविताएँ हैं जो कठोर यथार्थवाद की भूमि पर खड़ी हैं, इनमें से कुछ हैं –'पदयात्रा','संतों पर पत्थर', 'हे मजदूर', 'भिक्षुक', 'जब धरती को छोड़कर', 'यह लाशों का देश नहीं', 'हरिश्चंद्र और शव', 'बुभुक्षारक्षस ', 'ओ चीनी होश में आओ', 'व्यथा माँ –बाप की', 'कश्मीर हूँ मैं', 'गुल्ली डंडा', आदि।

इनकी इन सभी कविताओं में यथार्थवाद अत्यंत कठोर भूमि पर खड़ा दिखता है। 'हरिश्चंद्र और शव' कविता में जब वे हरिश्चंद्र के द्वारा कलियुग के श्मशान में पहरा देने की बात करती हैं,तो लगता है जैसे वे पूरे युग और सभ्यता की समीक्षा कर रही हों। श्मशान में एक कुत्ते के द्वारा शव को लाया जाना पूरी इंसानियत के नंगी होने का बेजोड़ प्रमाण है। पर उसी इंसानियत की मलिनता हरिश्चंद्र अपने एक हल्के प्रयास से धोने का प्रयास करते हैं। कवयित्री ने हरिश्चंद्र के द्वारा कुत्ते से अग्नि दिलवाकर यह साबित करने का प्रयास किया है,कि आज की इंसानियत पशुत्व से भी नीचे गिर गई है। आज मनुष्य की चेतना एक कुत्ते की चेतना से भी नीचे है,

"और शव को चिता पर रख दिया
फिर उनहोंने कुत्ते को
बड़े प्रेम से सहलाया
उसके मुँह में
मुखाग्नि की लुकाठी दी,
उससे फेरे करवाए
और चिता में
++++++आग लगा दी।"

यह आग लगाना केवल उस चिता में हीं आग लगाना नहीं है,अपितु नंगी और नृशंस होती जा रही इंसानियत में भी आग लगाना है। यह कविता फैंटेसी की एक सुंदर कविता है, जिसमें दो युगों की तुलनात्मक समीक्षाएँ दिखलाई गईं हैं। इसी तरह इनकी एक अन्य कविता 'व्यथा माँ बाप की',आज के दौर में वृद्धाश्रम की ओर अग्रसर होते माँ – बाप की पीड़ा पर एक सुंदर कविता है,कवयित्री बड़े –हीं बेबाक शब्दों में टिप्पणी करती हैं –

"क्या इनकी व्यथा केवल
'मदर्स डे' या 'फादर्स डे'
मनाने पर मिट पाएगी,
यह बड़ा गहरा घाव है रे।
इसे तो प्यार का मरहम हीं
भर पायेगा। "

डॉ अम्बे कुमारी की रचनाएँ जीवन के विविध क्षेत्रों को स्पर्श करती हैं। यदि इनकी कविता में वीरत्व की झंकार है, तो बचपन का निश्छल झूला भी। एक ओर यदि कठोरतम यथार्थवाद है तो दूसरी ओर आदर्शवाद भी, देशभक्ति की भी झलक है और मजदूरों के कठिनतम जीवन संघर्ष की भी। प्रकृति परक रचनाएँ हैं तो भक्तिपरक रचनाएँ भी। 'चींटीं और गिलहरी' पर भी इनके इस काव्य–संग्रह में रचना है जो प्रकृति के इन जीवों का नया आयाम खोलती नजर आती है। 'चींटीं' कविता में कवयित्री 'चींटीं' को सबसे बड़ा उपदेशक मानतीं हैं –

"वह संसार को 'मौन' का महत्त्व समझाती है
इससे बड़ा उपदेशक कोई नहीं
और वह मौन रहती है।"

'स्त्री','बसंत' और 'हथिनी' पर भी डॉ अम्बे कुमारी की कविताएँ चिंतनपूर्ण है,और नये भावों की ओर ईशारा करतीं हैं।

डॉ अम्बे कुमारी की एक कविता 'आँखें' बहुत कुछ कह जाती हैं। और आँखों के हीं माध्यम से संपूर्ण जीवन का दर्शन समझा जातीं हैं।

"ये आँखें खुद को कभी नहीं देखतीं
पर यहीं संसार दिखातीं हैं,
ऐसा करके ये आँखें
एक अद्‌भुत संदेश सुनाती हैं
स्वंय को आलोपित करनेवाला हीं
इस जग में पूजा जाता है।"

आज इक्कीसवीं सदी के मानवों की आपाधापी भरे जीवन का भी वर्णन कवयित्री अपनी कविता में करती हैं। रोज –रोज नवीन विचारों के जन्म लेने के कारण मनुष्य विचारों के भयावने जंगल में अपनी पहचान हीं खो चुका है,जिसका वर्णन कवयित्री इन शब्दों में करतीं हैं –

"संभाल नहीं पाता
किसी भी विचार को

v DVwoj&fnl Ecj] 2023 (o'kZ&4 vad&14)

विचारों की इस अंधी दौड़ में
वह अपनी वास्तविक पहचान भी
खो चुका है। ''

आज के इक्कीसवीं सदी में मानव अपना बचपन भी खो चुका है। विज्ञान के इस जमाने में मोबाईल का अविष्कार हो जाने पर 'बचपन' भी उसी में उलझ गया है,वह जीवन के सबसे सुंदर पलों को सरल नादानियों के साथ जीना छोड़ चुका है। 'गुल्ली डंडा' कविता में कवयित्री ने इसी भाव को उकेरा है –

''जिस बचपन में होती है
बेफिक्र मस्ती और
अल्हड़ शैतानियाँ,
आज वह बचपन भी
विज्ञान के प्रभाव में
अपना बचपन खो बैठा है।''

डॉ अम्बे कुमारी के इस काव्य संग्रह में भावों की विविध उर्मियाँ लहरा रहीं है,परंतु शिल्प की तरंगें उससे कम नहीं है। कवयित्री ने कुछ कविताओं में फैंटेसी शिल्प का प्रयोग किया है,जैसे –'हरिश्चंद्र और शव', 'बुभुक्षारक्षस', 'अंधमहासागर'। कुछ पंक्तियाँ 'बुभुक्षारक्षस ' कविता से द्रष्टव्य है –

''घने अंधकार में
सूरज की रौशनी में
पेट की ताल में
पल रहा है
बुभुक्षारक्षस''

इनकी कविताओं में संगीतात्मकता,ध्वन्यात्मकता एवं प्रतीकात्मकता की प्रधानता है।

हरिश्चंद्र और शव कविता पूर्णतः फैंटेसी परक कविता है जिसमें कवयित्री ने हरिश्चंद्र को कलियुग के श्मशान में पहरा देते हुए दिखाया है,इस कलियुग के श्मशान में उन्हें एक दुविधा भरी स्थिति का सामना करना पड़ता है –

''परंतु क्या
कलियुग में
मैं एक कुत्ते से
कफन माँगू ?''

हरिश्चंद्र के अंतर्द्वन्द्व को इस कविता में बहुत नाटकीय तरीके से दिखाया गया है,जिससे इस कविता में नाटकीयता का गुण आ गया है। शिल्प के दृष्टिकोण से यह अम्बे कुमारी की एक उत्तम रचना है। इस तरह विविध भावों और शिल्प – शैलियों को समेटे यह काव्य – संग्रह ' पोंछती है जो आँसू की बूँद एक उत्तम काव्य – संग्रह है। इस काव्य – संग्रह की कुछ कविताएँ अपनी कालजयिता में अद्वितीय है। सामाजिकता, राष्ट्रवाद, यथार्थवाद, प्रकृति – प्रेम, समसायिकता, किसान और मजदूर जीवन तथा वैज्ञानिक कलेवर को समेटे हुए इनका यह काव्य – संग्रह एक अनुपम काव्य – संग्रह है जो पाठकों को सहज हीं अपनी ओर आकृष्ट करता है। आशा करता हूँ कि अम्बे कुमारी जी की लेखनी अनवरत इसी प्रकार चलती रहेगी और हिन्दी –साहित्य को अनमोल काव्य – रत्न प्रदान करती रहेगी।

क्षणिकाएँ

मिथिलेश दीक्षित

मेरा रोपा हुआ पौधा है,
मुझे न सही,
कल औरों को छाँह देगा !

*

जब हम नहीं होंगे,
हमारी अस्मिता होगी,
धरा पर गूँजती
वाणी परा होगी !

*

ईमान –सच्चाई ने झेले हैं
हमेशा हादसे,
लूटने वाले बड़ी ही
मौज में हैं !

*

यह तेरा है
यह मेरा है,
नियमों का
कैसा घेरा है!

*

न शिकवा है,
न गिला है,
जो चाहिए था,
वो मिला है !

*

गिरा डाली रिश्तों ने
कच्ची दीवार,
दीखने लगा है साफ
और आर–पार !

*

प्रेम ही सन्देश –सपना
प्रेम ही मन्तव्य,
एक ही है मार्ग अपना
एक ही गन्तव्य !

"सहारा "

लेखिका
सरोज आहूजा (हरियाणा) भारत

एक पति पत्नि दोनों बहुत मज़े में रह रहे थे।दोनों में बहुत प्यार था। उनकी अपनी कोई संतान न थी। इसलिए दोनों आपस में बहुत खुश रहते, बहुत प्यार से रहते। उनका मानना था कि अगर हमारी किस्मत में होता तो भगवान दे देता।अब नहीं किस्मत में तो भगवान से क्यों लडें। जो है वही सब अच्छा है, कहकर संतोष कर लेते।

पर आपस में दोनों बहुत प्यार से रहते। कभी भी लड़ते किसी ने उन्हें नहीं देखा।बल्कि एक दूसरे को डार्लिंग कहकर पुकारते थे।अनोखा प्यार था उनका।

ऐसे ही शादी के 27 साल बीत गए। एक दिन अचानक पति को दिल का दौरा पडा।हॉस्पिटल पहुंचते ही उनकी मृत्यु हो गई। जैसे ही पत्नी सीमा ने सुना वह 'नहीं' कहते ही बेहोश हो गई। अब तो उसका बुरा हाल हो गया। सीमा के पति रमेश का संस्कार करना था, भाई रवि सपत्नीक आ पहुँचा था पर सीमा होश में आए तब संस्कार करें। बड़ी मुश्किल से होश आया तो हालात देखकर भागी छत पर। सब पीछे पीछे भागे। सीमा छत से कूदने लगी। फिर से कई लोगों ने मिलकर उसे बचाया व किसी तरह संस्कार विधि पूरी हुई। अब बार बार बेहोश हो जाती। उसे संभालना मुश्किल होता जा रहा था। हर वक्त वह मरने का प्रयास करती रहती और एक ही रट लगाए रहती "मैं अब जी के क्या करुंगी?"

भाई भाभी सीमा का पूरा ख्याल रखते पर कब तक, ज़रा सी चूक होती और सीमा आत्महत्या करने का प्रयास करती। यह तो दोनों उस पर पूरी नज़र रखे हुए थे तो बच जाती थी।और हर बार वह यही कहती,"क्यों बचाया मुझे, मरने दो, जीकर भी अब क्या करुंगी?"

भाभी कहती,"दीदी,हम हैं ना, क्या हम आपके कुछ नहीं लगते ?"

दीदी चुप रहतीं।

एक दिन भाभी खाना बना रही थी तो उसका माथा ठनका, कुछ गड़बड़ है तो वह भागी। देखा तो सीमा टेबललैम्प की तार तोड़ रही थी जिससे वह अपने आप को करंट लगा सके। तभी भाभी वहाँ पहुँच गई। उसने बचा लिया।

अब भाभी परेशान हो गई। उसने रातको रमेश से बात की और एक हल बताया। रमेश इसके लिए तैयार हो गया। सुबह उठकर रमेश ने दो प्लेट फेंकते हुए कहा,"अगर खाना नहीं बनता तो मैं जा रहा हूँ।"

भाभी बोली,"जाओ, मुझपर रौब न डालो।एक तो तुम्हारी बहन को सारा दिन देखो ऊपर से काम।" रमेश बिना खाए ही चला गया। सीमा आई और बोलती रही,"क्या हुआ? क्या हुआ?" पर कोई कुछ नहीं बोला। वह परेशान हो गई, आज तक तो कभी नहीं लड़े, आज इन्हें क्या हो गया?

बस इसी तरह ये रोज़ दिन में कई बार लड़ते और नाराज़ होते। सीमा रोज़ पूछती क्या हुआ पर कोई नहीं कुछ बोलता।सीमा का ध्यान अब अपने से हट गया और इन दोनों पर अटक गया। अब वह अपने बारे में कम और भाई भाभी के बारे में ज़्यादा सोचने लगी।

एक दिन तो हद ही हो गई। खाने की टेबल पर दोनों लड़ पड़े। भाभी बोली,"मुझसे अब नहीं होता। मैं अब नौकरी करुंगी। बस अब बहुत हो गया। पूरी नहीं पड़ती, खर्चा ज़्यादा है और कमाई कम। कुछ तो करना पडेगा।" भाई ने मना कर दिया, कहन् लगा, "घर कौन देखेगा, दीदी को कौन देखेगा?" तभी सीमा बोल पडी, "तू घर देख मैं नौकरी कर लेती हूँ।"बस यही तो वे चाहते थे। झट से भाभी बोल पडी, "क्या आप कर पाओगी?" सीमा बोली, "क्यों नहीं, मुझमें क्या कमी है? पहले भी तो करती थी?"

भाभी बोली,"चलो?फिर ठीक है आज मेरा इन्टरव्यू है।वह आप दे दो।"और सीमा ने इन्टरव्यू दे दिया। उसे नौकरी मिल गई।अब सीमा में परिवर्तन आने लगा। वह समय से उठकर तैयार हो जाती, भाभी को उसे भेजने में मदद नहीं करनी पड़ती।

और कुछ दिन बाद भाभी ने सुबह खाना परोसा तो रमेश ने कहा, "सब्जी में नमक कम है।"तभी सीमा बोल पड़ी,"बस करो अब नाटक।"

सीमा साधारण सी मुस्कान के साथ कहा,"कौन सा नाटक?" भाई ने बहन को गले लगाते हुए कहा,"तुम्हारी नौकरी का नाटक।"जब तक सीमा सब समझ पाती भाभी ने भी गले मे बाहें डाल दी। सब एक दूसरे का सहारा बन गये थे। सभी की ऑखों खुशी के आंसू थे।

संस्मरण

कंचन सागर
पानीपत, हरियाणा

मेरी आपबीती एक सीख

आज आप के साथ दो दिन रविवार और सोमवार की मेरे अपने साथ घटित आपबीती सुनाना चाह रहीं हूँ।

आप चाहें तो मत पढ़िएगा परन्तु मेरा मन कर रहा है कि आप सब को बताऊँ।

मेरा छोटू कुछ दिनों के लिए गॉव चला गया है। लाख मिन्नतें की, हाथ जोड़ कर विनती की पर नहीं ... सौ बातें उस ने मुझे सुनाईं और चला गया। इन को अग्रिम वेतन भी चाहिए,घर जा रहें हैं तो घरवालों के लिए उपहार भी चाहिएँ३. वह हमारे फ़र्ज़ हैं।उन का इतना भी नहीं कि अपनी अनुपस्थिति में हमें कोई और दे जाएँ।

चलो,यह तो बात उस की हुई।

अब सुनिए३. कल प्रातः साहब ने नाश्ता बाहर से मँगवाया जो उन की पसंद थी हमारी नहीं।

मैड सर्वेन्ट से बर्तन मंजवा लिए। खाना रात तक बचा रहा।ऐसे आदत ही नहीं खाने की।

शाम को बच्चों ने स्नैक्स मँगवा ली और हम ने भी खा ली।सोच लिया था कि सुबह टिफ़िन सर्विस से दो टिफ़िन मँगवा लिए जाएँगे।सो रात को ही आर्डर दे दिया।हम मैच देख कर फिर सो गए।

अब आज की सुनिएं...

पहले से कुछ और जल्दी उठी। देखा,बहु रानी किचन में थी। पूछा तो कहने लगी कि बुख़ार हो गया है सो स्कूल नहीं जा रही।नहा–धो कर पूजा की,इतनी देर में टिफ़िन आ गए।फिर बहु ने चाय बना कर दी और हमें नाश्ता करवाया।साहब तैयार हो कर ऑफिस चले गए। इतनी देर में मेड आ गई और उस ने कपड़े धोने का पूछा। मैंने हामी भर दी।पर जब से नई मशीन ली थी तब से मैंने कभी इस्तेमाल ही नहीं की। आप सब को पता ही है कि चला जाता नहीं,खड़ी हो नहीं सकती,काम करना भी कितने वर्षों से छोड़ा हुआ है।

उस को साथ लेकर पिछवाड़े गई और वॉशिंग मशीन में पानी लगाया।अरे,यह क्या? पानी निकलने लग गया। जैसे–तैसे बटन दबाते दबाते मशीन चलने लगी। सच मानिए,बहुत खुशी हुई। मेड कहनें लगी कि आन्टी,आप मेरे साथ करवाओ।पास में कुर्सी रखवाई और कभी उठी और कभी बैठी३ बस कपड़े निकाल कर उसे सुखाने को दिए।

अब किचन की ओर आई। उसी से बर्तन करनें को कहा।अब आटा गूँथने की बारी आई।वह कहनें लगी कि मैं गूँथ दूँगी। फ्रिज खोला तो देखा कि दूध चार भगौनों में रखा हुआ था।दो का दूध फिर से उबाला, बाक़ी में से कुछ मेड को बोतल में डाल कर घर के लिए दिया और शेष३. सोचिए कि क्या किया होगा।मेड से आटा छनवा कर परात में रखवा लिया। स्टूल पास रखवा कर बैठे बैठे मैंने दूध के साथ आटा मला। आज पता नहीं कितने वर्षों के बाद आटा मला। तभी बेटा आ गया और पोती से मेरी फ़ोटो खींचने को कहने लगा। बहुत अच्छा लगा। पर सच मानिए बड़ा सुकून भी मिला।

शाम को घर में केवल साहब,मैं और मेरा पोता ही थे। पोता दूध गर्म करने किचन में आया और मुझे उस की आवाज़ सुनाई दी।वह शायद फ़ोन पर बात कर रहा था। मैं चुप लगा गई। जब वह मेरे कमरे के बाहर से निकलने लगा तो मुझ से रहा नहीं गया,मैंने पूछ ही लिया कि क्या बात है। कहनें लगा कि बर्नर नहीं जल रहा। मेरा माथा ठनका।मैंने कहा कि हो सकता है गैस ख़त्म हो गई हो। मैंने उसे कहा कि मुझे पकड़ कर वहाँ तक ले चलो।धीरे धीरे वह मुझे सिलेंडर तक ले गया।पोता कहने लगा,"दादी, आप कुछ मत करो,मैंने मम्मी को फ़ोन कर दिया है।" मैंने कहा,"बेटा,मम्मी को नहीं आता। मॉडल टाऊन वाले घर में ज़रूरत पड़ने पर मैं ही बदलती थी,बस आप मेरे पास ही खड़े रहना।"

परन्तु वह मुझे मना ही करता रहा।जब सिलेंडर के ऊपर का ढक्कन नहीं खुला तो उस को मैंने अन्दर से चाकू लाने भेजा और ढक्कन पर ज़ोर अजमाइश की नाकाम कोशिश की।एक का नहीं खुला तब फिर दूसरे पर कोशिश की।मन ही मन कहा कि कंचन तूं कर सकती है,तूं कर लेगी और देखिए,कमाल हो गया।मुझे मैच जीतने वाली खुशी महसूस की।मैंने अपने पोते को आवाज़ लगा कर किचन से गैस ऑन करने को कहा। तब तक उस की मम्मी भी आ गई थी।ये सब देख कर हैरान हो गए कि मैंने सिलेंडर बदल दिया था।

निष्कर्ष...

हमें सब कुछ सर्वेंटस पर नहीं छोड़ना चाहिए,उन पर पूरी तरह निर्भर नहीं होना चाहिए और समय–समय पर उन की निगरानी भी करनीं चाहिए।

स्वंय किचन में जाकर कुछ न कुछ नया अवश्य बनाना चाहिए ताकि हाथ–पॉव चलते रहें।

नईं पौध को भी रोज़मर्रा के छोटे–छोटे काम सिखाने चाहिए।

संस्मरण

ज्योत्स्ना गर्ग पानीपत हरियाणा

हमारी मातृभाषा

कुछ दिन पहले मेघा के विधालय से अभिभावक बैठक के कार्यक्रम का निमंत्रण आया था। सभी अभिभावकों के लिए खास निमंत्रण था जिस कारण सभी अभिभावकों की उपस्थिति अनिवार्य थी।

मेघा ने कुछ समय पहले मुझे बताया था कि मां हमारे विधालय की शिक्षा प्रणाली में नई मुख्याध्यापिका जिन्होंने इसी वर्ष हमारे विधालय का कार्यभार संभाला है, बहुत परिवर्तन किया है। इस आधुनिक शिक्षा प्रणाली के विषय में वह सभी अभिभावकों के विचार जानना चाहतीं हैं। निमंत्रण पत्र हाथ में लेकर मुझे बहुत खुशी हुई। मैं भी जानना चाहतीं थीं, यह नई शिक्षा प्रणाली क्या है?

कॉटन साड़ी पहन, हल्का मेकअप कर मैं विद्यालय के लिए तैयार हो गई। अचानक मेघा के पापा को व्यापार के सिलसिले में बाहर जाना पड़ा, अकेले जाने में मुझे कुछ संकोच तो हुआ लेकिन मैं विद्यालय पहुंच गई। जब मैंने बड़ी बड़ी गाड़ियों में और सभी को पाश्चात्य परिधानों में देखा मैं थोड़ा काम्प्लेक्स में आ गई।

अंग्रेजी माध्यम के विधालय में सभी बहुत ऊंचे घराने के अभिभावक थे। अंदर प्रवेश करते ही पूर्व निर्धारित सीट पर बिठा दिया गया। मेरे दोनों ओर की महिलाएं खुशबू से तर–बतर थी। संकोच वश मैंने उनसे कोई बात नहीं की। कुछ समय बाद कार्यक्रम प्रारंभ हो गया, केवल मुख्याध्यापिका का परिधान मुझसे मिलता था मुझे अच्छा लगा।

सारा भाषण सभी के द्वारा अंग्रेजी में दिया जा रहा था। अंग्रेजी भाषा का मुझे अधिक ज्ञान नहीं था, थोड़ा थोड़ा तो मैं समझ लेती थी,पर अंग्रेजी मुझे बोलनी नहीं आती थी ।उन सबकी बातों से मुझे यह अंदाज हो गया था,किस विषय पर और क्या बताया जा रहा है। कुछ देर बाद मालूम हुआ सभी अभिभावकों की मंच पर समय के अभाव में राय लेना कठिन है इसलिए पर्ची के आधार पर ही दस अभिभावकों को मंच पर बुलाया जाएगा।

धीरे–धीरे सभी अभिभावकों ने अपने अपने विचारों से नई शिक्षा प्रणाली से अंग्रेजी भाषा में अवगत कराया। मुझे समझ नहीं आया यदि मेरा नाम आ गया तो क्या करूंगी ? अंग्रेजी मुझे बोलनी नहीं आती, कहीं मंच पर पहुंच कर जग हंसाई न हो जाए। मुझे मेघा के पापा पर गुस्सा आ रहा था, उन्हें आज ही जरूरी जाना था कल चले जाते तो क्या हो जाता, फिर दूसरे पल ख्याल आया इतने सारे अभिभावकों में मेरा ही नाम क्यों आएगा। मैं शांत होकर बैठ गई। अचानक मेरे नाम की पर्ची निकल गई। मैं अंदर तक कांप गई।अब क्या करूं कहां जाऊं? क्या हिन्दी में बोलूं? समझ नहीं पा रही थी। तभी मुख्याध्यापिका ने मेरा नाम पुकारा। मेरे दोनों पैर कांप रहे थे,दिल धक–धक कर रहा था। अपने मन को समझाते हुए मैंने स्वयं से कहा, क्यों डर रही हो ? हिन्दी तो हमारी मातृभाषा है और अपनी मां से कैसा डर? अपनी संस्कृति को छोड़कर क्यों हम दूसरी संस्कृति को अपनाते हैं। हमारी मातृभाषा हमारा गर्व है,जिस पर हमें अभिमान है इससे क्यों झिझकना। आज भरी सभा में अपनी मातृभाषा में बोलने का सुअवसर प्राप्त हुआ है फिर कैसा संकोच। इस तरह स्वयं का मनोबल बढ़ाते हुए मैंने आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली पर क्या क्या बोल गई मुझे स्वयं ही नहीं पता चला। तालियों की गड़गड़ाहट ने मेरा ध्यान भंग किया, तभी मुख्याध्यापिका मेरे पास दौड़ती हुई आई और बधाई देते हुए बोली, आपने अपनी मातृभाषा में अपने विचारो का बहुत अच्छे तरीके से वर्णन किया है जो तारीफें काबिल है।सच हमारी मातृभाषा में प्यार झलकता है और दिल से आवाज निकलती है जो हम कहना चाहते हैं। आज आपको भारतीय पहनावे में देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा।मंच से उतरते ही बहुत सी महिलाओं ने मुझे घेर लिया शायद वो भी मेरी तरह अंग्रेजी बोलने में झिझकती थी। पाश्चात्य संस्कृति की आड़ में वे सब स्वयं को बहुत ऊंचा समझ रहीं थीं लगता था अपनी हिन्दी संस्कृति और अपनी मातृभाषा से उनका आज ही परिचय हुआ हो।

सच आज अपनी संस्कृति और अपनी मातृभाषा के लिए मैं स्वयं को गर्वित महसूस कर रही थी।

धन्यवाद

लेखिका

v DVwj&fnl Ecj] 2023 (o'kZ&4 vad&14)

हिंदी की गूंज अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका का वार्षिक तृतीय सम्मान समारोह की कुछ झलकियाँ और विचार

हिंदी की गूंज अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका के सम्मान समारोह का ये तृतीय वर्ष था। पहला समारोह ग़ाज़ियाबाद और दूसरा दिल्ली में हिंदी भवन में और तृतीय भी दिल्ली में हिंदी भवन में 3 दिसंबर 2023 को श्री इंद्रजीत शर्मा (न्यूयार्क) के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता आदरणीय श्री बी एल गौड़ जी ने की और विशिष्ट अतिथि श्री सच्चिदानंद जोशी थे, मुख्य अतिथि के रूप में अनिता कपूर, ओमप्रकाश सपरा, सुदर्शन रत्नाकर, अरूणा सब्बरवाल ने मंच की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम के संचालन की डोर विनोद पांडेय ने सँभाली और अथक सहयोग दिया तृप्ति मिश्रा,मनीषा जोशी, कविता गुप्ता और हरीश पांडेय, धर्मेन्द्र सिंह नागपाल जी ने। डॉ विदुषी शर्मा जी ने भी सदस्यों का मान बढ़ाया और कार्यक्रम को चार चाँद लगाये। रमा शर्मा जी हर वर्ष जापान से आकर भव्य आयोजन करतीं हैं और हिंदी की सेवा में रत साहित्यकारों को सम्मानित करती हैं।

हिंदी की गूंज कार्यक्रम में आये अतिथि साहित्यकारों के विचार

डॉ उपासना पांडेय

1. हिन्दी भवन में साहित्य प्रेमियों का संगम

हिन्दी के संवर्धन व विस्तार हेतु वर्तमान समय में अनेक कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं, परन्तु जापान से प्रकाशित 'हिन्दी की गूंज' पत्रिका के वार्षिक समारोह में जो साहित्यकारों का समागम देखने को मिला, ह्दय आनंद विभोर हो उठा। अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका 'हिन्दी की गूंज की संरक्षिका और संपादिका रमा शर्मा जी एवं ट्रिपल वर्ल्ड रिकार्डर विदुषी जी का आतिथेय, सम्मान व स्नेह पाकर सभा में उपस्थित सभी साहित्यप्रेमी गौरवान्वित अनुभव कर रहे थे। यद्यपि इसके पूर्व मैं दोनो विदुषियों से नहीं मिलि थी, तथापि वहाँ पहुँच कर जो अपनापन मिला, अकल्पनीय था। मैं दोनो दीदीयों के जिस स्नेह का अवलम्ब पाकर प्रयागराज

से दिल्ली गई थी, निश्चय ही वह सुन्दर स्वप्न साकार हो गया। उस पर सोने पर सुहागा तो तब हुआ जब सभी साहित्यकारों के द्वारा इनके हिन्दी साहित्य के प्रति किए गए कार्यों का वर्णन सुना। रमा दीदीजी का जापान से आकर हिन्दी– सेवियों को सम्मानित करना उनके हिन्दी के प्रति अथाह प्रेम को प्रमाणित करता है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि ये ऐसे सतत हिन्दी को सकारात्मक विस्तार प्रदान करती रहेंगी। इनके शुभ– संकल्प से जुड़कर यह कारवां आगे बढ़ता रहेगा।

– डॉ० उपासना पाण्डेय, प्रयागराज।

शिक्षिका एवं साहित्यकार, भारत।

2. आदरणीया!

दरयाब सिंह ब्रजकण

अगर पत्रिका में "आपके पत्र" है तो मेरा लिखा आपके लिए जो संदेश है, उसे प्रकाशित करें।

और सुझाव के लिए पत्रिका के दूर से ही दर्शन हुए, विशेष अतिथियों को ही पत्रिका दी गई, प्रथम दीर्घा में बैठे हम लोग यही सोचते रहे, पत्रिका मिलेगी, लेकिन मुँह दीखे टीके ही हुए, मुझ तक पत्रिका नहीं पंहुची।

प्रशंसा पत्र भी स्मृति चिन्ह के साथ होता तो शुभ था। लेकिन मुझे जैसा लगा, आपको अपनत्व के भाव से लिख दिया। व्यवस्था और सभी पत्रिका से जुड़े लोगों का सम्मान उच्च कोटि का रहा। आपके मुँह पर मुस्कुराहट हर पल हर क्षण खेलती रही, सभी को गले मिलना, उनकी सारी थकावट और यात्रा पीड़ा को आपने

vDVwoj&fnlEcj] 2023 (o'kZ&4 vad&14)

पल भर में आराम दायक बना दिया। जल पान व्यवस्था सुपर रही, सभी आपके सहयोगीयों को बहुत बहुत से शुक्रिया. आप लोगों से दिल से प्यार करती हैं, या दिखावटी ये आपने जाना कि लोग कहाँ– कहाँ से चल कर आपके कार्यक्रम में आए. सरस्वती वंदना के लिए महू से पधारी सरस्वती सरूपा जी को ह्रदय से बहुत बहुत बधाई.
विनोद पांडे जी को कुशल संचालन करने के लिए बहुत– बहुत शाबाशी. मुझे विशेष सम्मान देने के लिए पुनः ह्रदय से आभार. पत्रिका का भविष्य चंहु दिशि में सूर्य रश्मियों सा अनुदिन फैलता रहे, इसी मंगल कामना के साथ पत्रिका के सभी सुकर्मियों को शत–शत वंदन सदा सर्वदा अभिनंदन. केवल जापान में ही नहीं प्रत्येक देश देशांतर में "हिंदी की गूँज"गुँजायमान रहे।
जय हिंदी जय भारत।

मनीषा जोशी मणी

3. ३ दिसंबर २०२३ को हिन्दी भवन में हिन्दी की गूंज का वार्षिक उत्सव बहुत भव्यता से मनाया गया! जापान मे निवास कर रहीं आ० रमा शर्मा दीदी पिछले कई वर्षो से जापान में हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए कार्य कर रही है लिए कार्य कर रही हैं इसके तहत ऑनलाइन ऑफलाइन दोनों तरह कार्यक्रम चलते हैं .उन्ही कार्यक्रमों में से मुझे भी सम्मानित करने का निर्णय संस्था द्वारा लिया गयागग कार्यक्रम में देश विदेश से कई वरिष्ठ साहित्यकारों पत्रकारों व फिल्म जगत से भी लोगों का आगमन हुआ का आगमन हुआ सभी को मोमेंट तो दे कर सम्मानित किया गया छोटे बच्चों को ड्राइंग कंपटीशन के लिए सम्मानित किया गया और 500 उन्हें प्रोत्साहन के लिए दिए गए आदरणीय राम दीदी ने अपनी सरल मुस्कान व आतिथ्य से सभी का मन मोह लिया साथ ही साथ चार किताबों का विमोचन भी हुआ. जलपान की व्यवस्था चलती रही..मंच संचालन हास्य के हस्ताक्षर विनोद जी ने तथा सरस्वती वंदना त्रिप्ती जी ने की . एक भव्य कार्यक्रम के लिए आदरणीय राम दीदी को बहुत–बहुत बधाई मुझे आमंत्रित व सम्मानित करने के लिए करने के लिए बहुत बहुत आभार।
जय हिन्दी जय भारतीय

विशाल पाण्डेय

4. 3 दिसंबर, 2023 को दिल्ली का हिंदी भवन एक भव्य साहित्यिक सांस्कृतिक आयोजन का साक्षी बना जिसमें श्रोताओं – दर्शकों समेत देश – विदेश के अनेक निकट व सुदूर हिस्सों से आए साहित्यकारों और अभिन्न मित्रों ने विरल किस्म की ख़ास आत्मीयता को भी अनुभव किया। यह एक बहुप्रतीक्षित – सा आयोजन था जिसकी प्रतीक्षा रमा शर्मा जी (हिंदी की गूंज पत्रिका की संपादक एवं संरक्षक) के अभिन्न साथियों को तो थी ही, साथ ही उस वृहत्तर साहित्य समाज को भी थी जिसे उनके सृजन को समग्रता में सहेजना था और और स्मृति में रखना था। जिस प्रकार से यह आयोजन एक उत्सव स्वरूप में उद्घाटित होकर विचार और विमर्श की गंभीरता में जोर पकड़ता गया उसी तरह हिंदी की गूंज पूरे वातावरण में समाहित होने लगी। हिंदी भवन का परिसर भी अपनी उस विशिष्ट सज्जा में था। 'हिंदी की गूंज' पत्रिका के कल्पनाशील संयोजन के अंतर्गत उस प्रांगण में चारो तरफ हिंदी की गूंज सुनाई देने लगी थी। कार्यक्रम मुख्य रूप से पुस्तक लोकार्पण तथा सम्मान समारोह पर केंद्रित था।
'गूंज उठी हिंदी' (संपादित पुस्तक) , हिंदी की गूंज (पत्रिका) तथा प्रत्याशित सोच (काव्य संग्रह) का लोकार्पण मंचासीन अतिथियों द्वारा किया गया।
कार्यक्रम की अध्यक्षता बी. एल. गौड़ जी (वरिष्ठ साहित्यकार) ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. सच्चिदानंद जोशी (सचिव, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र एवं वरिष्ठ साहित्यकार) तथा अतिविशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम को सानिध्य मिला श्री इंद्रजीत शर्मा जी, ओम प्रकाश सपरा जी का। विशिष्ट अतिथि के रूप में अनिता कपूर जी तथा सुदर्शन रत्नाकर जी का।
डॉ. जोशी ने अपने वक्तव्य में कहा कि, "रमा जी जापान से आकर सभी लेखकों को सम्मानित कर रही हैं, और जापान में हिंदी भाषा को लेकर इतनी गंभीरता से काम कर रही हैं, यह मन को बहुत संतोष देता है, उन्होंने सभी सम्मानित हुए साहित्य प्रेमियों को बधाई दी। ओम सपरा जी ने कहा, "हिंदी भाषा के लिए जापान की धरती पर किए गए काम के लिए रमा शर्मा जी को हमेशा याद रखा जाएगा।"
अतिविशिष्ट अतिथि श्री इंद्रजीत शर्मा जी (जिन्हें सब साहित्यकार और समाज सेवी के रूप में जानते हैं) कार्यक्रम की भूरी भूरी प्रशंसा की। अनिता कपूर जी, ओम सपरा जी ने रमा जी को बधाई और शुभकामनाएं दी।
इस कार्यक्रम में हिंदी की गूंज पत्रिका द्वारा
13 नवयुग बाल सम्मान,
25 जापान हिंदी भूषण सम्मान,
50 जापान हिंदी सेवी सदस्य सम्मान तथा
25 जापान हिंदी सेवी सम्मान प्रदान किए गए।
जापान हिंदी भूषण सम्मान से सम्मानित किए गए साहित्यकार निम्न है।
1–श्री इंद्रजीत शर्मा 2–श्री सच्चिदानंद जोशी
3–श्री बी एल गौड़ 4– डॉ. हरीश नवल
5– सुश्री पूनम पंडित 6–डॉ अनिता कपूर
7–सुश्री अरुणा सब्बरवाल 8–श्री ओमप्रकाश प्रजापति
9–श्री ओम प्रकाश सपरा 10–डॉ सतीश शास्त्री
11–डॉ नीलम वर्मा 12–डॉ नीलिमा शर्मा
13–श्री प्रेम भारद्वाज 14–डॉ विदुषी शर्मा
15–डॉ मृदुला प्रधान 16–डॉ रामनिवास मानव

17–सुश्री सुदर्शन रत्नाकर 18–सुश्री कंचन सागर
19–श्रीमती चित्रा मुद्गल 20–श्री सुरेश पाण्डेय
21–विजय पंडित 22–श्री मनोज कुमार
23–सुश्री श्वेता सिंह उमा

जापान हिंदी सेवी सम्मान प्राप्त करने वाले साहित्यकारों को और अतिथि साहित्यकारों को सम्मानित किया गया।

1–श्री मोहन दूबे 2–सुश्री सीमा वर्णिका
3–सुश्री ज्योति जुल्का 4–श्री अजय शर्मा
5–श्री प्रशांत अवस्थी 6–सुश्री तृप्ति मिश्रा (मह्)
7–सुश्री सुनीता चांदला 8–डॉ निर्मला बट्टीमलप्पा
9–सुश्री अंशु जैन 10–सुश्री सुनीता अग्रवाल
11– श्री पवन शर्मा 12–सुश्री कविता गुप्ता
13–सुश्री सरोज आहूजा 14–सुश्री वंदना गोसैन
15–सुश्री अंशु जैन 16–सुश्री पूनम गौतम
17– श्री अरूण भगत 18–श्री अजमत कैश
19–डॉ. पंकज वासनी 20–सुश्री कविता मल्होत्रा
21–सुश्री ज्योत्सना गर्ग 22–सुश्री रजनी शर्मा
23–सुश्री रश्मि सिन्हा 24–श्री अमित कौशल
25–सुश्री संध्या गौतम 26–डॉ विनय भारद्वाज
27–श्री अतुल खन्ना 28–डॉ. सुनीता चौहान
29–सुश्री मेधा सक्सेना 30–सुश्री वंदना ग्रोवर
31–डॉ. मिथिलेश दीक्षित 32–अभिषेक दुधैया
33–डॉ. सविता चड्ढा 34–दिलदार देहलवी
35–सुश्री कुसुम शर्मा 36–सुश्री उपासना पाण्डेय
37–सुश्री अंजना सिंह सेंगर 38–श्री मुकेश कुमार सिन्हा
39–श्री राकेश छोकर 40–डॉ. राजीव पाण्डेय
41–सुश्री उषा किरण गिरिधर 42–डॉ विवेक शर्मा
43–श्री संजय शुक्ला 44–सुश्री रश्मि प्रभा
45–सुश्री मीनाक्षी भसीन 46–सुश्री तूलिका सेठ
47– विशाल पाण्डेय 48–सुश्री अंजू शर्मा
49–सुश्री बबली वशिष्ठ 50–सुश्री सुमन मलिक तनेजा

इस कार्यक्रम का सुंदर संचालन श्री विनोद पाण्डेय जी ने किया, उनके संचालन ने पूरे कार्यक्रम को बांधे रखा।

अंत में रमा जी ने कार्यक्रम में पधारे सभी साहित्य प्रेमियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

इस कार्यक्रम की महती उपलब्धि ये रही कि हिंदी की गूंज ने सुदूर बैठकर साहित्य सेवा करने वाले साहित्यकारों को समाज से जोड़ा। समारोह के व्यवस्था पक्ष से जुड़े श्री धर्मेन्द्र नागपाल जी, श्री अशोक पाण्डेय जी, तृप्ति मिश्रा जी, मनीषा जोशी जी और कविता गुप्ता जी भूमिका तत्पर आतिथेय की थी।

विशाल पाण्डेय
(साहित्य एवं कला अध्येता)
प्रवक्ता, डीएवी कॉलेज।

सीमा वर्णिका

5. अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका 'हिंदी की गूंज' का वार्षिक सम्मान समारोह–2023

3 दिसंबर, 2023 की शीतल संध्या राजधानी दिल्ली के हिंदी भवन में एक भव्य साहित्यिक सांस्कृतिक आयोजन हुआ जिसमें श्रोताओं–दर्शकों समेत देश – विदेश तथा विभिन्न राज्यों से आए साहित्यकारों और विशिष्टजनों ने प्रतिभाग किया। सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण वातावरण में अभिव्यंजित हुए हिन्दी भाषा के संवर्धन की दिशा में समर्पित उत्कृष्ट भाव तथा कलात्मक अभिव्यक्ति की भिन्न तरणियों का संगम दृश हो रहा था।

इस बहुप्रतीक्षित आयोजन की सूत्रधार आदरणीया रमा शर्मा जी (हिंदी की गूंज पत्रिका की संपादक एवं संरक्षक) तथा अन्य सहयोगी रहे। वृहत्तर साहित्य समाज प्रसन्नता की अनुभूति कर रहा था उनके सृजन को समग्रता में सहेज कर पुस्तकीय रूप दिया और उसका लोकार्पण भी किया गया। यह आयोजन एक साहित्यिक पर्व स्वरूप उद्घाटित होकर विचार और विमर्श के शिखर तक गया उसी तरह हिंदी की गूंज संपूर्ण वातावरण में गुंजायमान हो उठी।

हिंदी भवन का परिसर भी अपनी उस विशिष्ट सज्जा शैली में इतिहास के पन्नों को पलटता दृष्टिगत होता है भारत के अनमोल रत्न सचित्र उपस्थित हैं वहाँ। एक दिव्य ऊर्जा की अनुभूति होती है।

'हिंदी की गूंज' पत्रिका के शानदार संयोजन के अंतर्गत उस प्रांगण में चहुँओर हिंदी की गूंज ध्वनित हो रही थी। कार्यक्रम मुख्य रूप से पुस्तक लोकार्पण तथा सम्मान समारोह पर केंद्रित था।

'गूंज उठी हिंदी' (संपादित पुस्तक), हिंदी की गूंज (पत्रिका) तथा प्रत्याशित सोच (काव्य संग्रह) का लोकार्पण मंचासीन अतिथियों द्वारा किया गया।कार्यक्रम की अध्यक्षता बी. एल. गौड़ जी (वरिष्ठ साहित्यकार) ने की।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. सच्चिदानंद जोशी (सचिव, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र एवं वरिष्ठ साहित्यकार) तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम को सानिध्य मिला श्री इंद्रजीत शर्मा जी, ओम प्रकाश सपरा जी, अनिता कपूर जी तथा सुदर्शन रत्नाकर जी का डॉ. जोशी ने अपने वक्तव्य में कहा कि, "रमा जी जापान से आकर सभी लेखकों को सम्मानित कर रही हैं, और जापान में हिंदी भाषा को लेकर इतनी गंभीरता से काम कर रही हैं, यह मन को बहुत संतोष देता है, उन्होंने सभी सम्मानित हुए साहित्य प्रेमियों को बधाई दी। ओम सपरा जी ने कहा, "हिंदी भाषा के लिए जापान की धरती पर किए गए काम के लिए रमा शर्मा जी को हमेशा याद रखा जाएगा।"

सभागार में उपस्थित सभी साहित्यकारों व अतिथियों तथा विशिष्ट अतिथि अनिता कपूर जी, सुदर्शन रत्नाकर जी और अरुणा सबओम सपरा जी ने रमा जी को उनकी हिन्दी भाषा के लिए उत्कृष्ट सेवाओं के लिए बधाई और शुभकामनाएँ दीं।विभिन्न सम्मानों से साहित्य तथा अन्य विषय विशेषज्ञों को सम्मानित किया गया। हम भी विश्व साहित्य गौरव सम्मान पाकर अभिभूत हैं निःशब्द हैं। एक बार पुनः रमा जी को हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। बहुत खूबसूरत कार्यक्रम के लिए बहुत–बहुत बधाई।

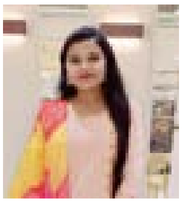

कविता गुप्ता

6. सबसे पहले तो मैं डॉ. रमा शर्मा मैम को दिल से आभार व्यक्त करती हूं की जीवन की व्यस्तता के बावजूद वो हिंदी भाषा के अस्तित्व को विदेशों में बनाए रखने व हिंदी के भविष्य को बेहतर बनाने के लिए इतनी तत्परता और मेहनतकशी के साथ कार्य कर रही हैं।

और मैं रमा मैम से जुड़े सभी लोगों को भी धन्यवाद कहना चाहती हूं जिनके सहयोग से 3 दिसंबर का कार्यक्रम सफल हो पाया।

कार्यक्रम की सफलता को केवल कार्यक्रम में सम्मिलित लोगों के चेहरों को मुस्कान से ही मापा जा सकता है। सभी के मुस्कुराते चेहरे इस बात का प्रमाण हैं की कार्यक्रम बहुत ही अच्छा रहा सभी ने जी भरके आनंद लिया और इस पहल को अर्थात "लेखकों और कवियों का सम्मान"को सराहा।

कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने लोग दूर देश विदेश से आए और अपने व्यस्त जीवन से अपना कीमती समय दिया इसी से हम अंदाजा लगा सकते हैं की रमा मैम की पत्रिका और हिंदी से हम सभी को कितना स्नेह है।

कार्यक्रम में सम्मिलित सभी विद्वानों लेखकों और कवियों से मिलकर बहुत अच्छा लगा सभी से कुछ न कुछ सीखने को मिला और भविष्य के लिए प्रेरणा मिली।

मुझे इस कार्यक्रम का हिस्सा बनने के लिए डॉ रमा मैम आपका बहुत बहुत आभार।

इसी तरह हमें स्वयं से जोड़े रखिए और अपना आशीर्वाद और स्नेह बनाए रखिए।

धन्यवाद

वंदना गोसाईं

7. आदरणीय महोदया,

नमस्कार।

आपके द्वारा आयोजित कार्यक्रम बहुत ही अच्छा था। आपके हिन्दी प्रेम व समर्पण से मन अभिभूत हो उठा है। मैं हमेशा आपसे जुड़े रहने की इच्छुक हूँ। आपकी पत्रिका के लिए भी लिखती रहूँगी। मैं माउंट कार्मल स्कूल, द्वारका, नई दिल्ली की हिन्दी विभागाध्यक्ष हूँ। अपने छात्रों को आज आपकी पत्रिका दिखाई। वे भी हिंदी की गूँज से जुड़ना चाहते हैं। इस संबंध में कृपया मार्गदर्शन कीजिए। विदुषी जी मेरी बहुत ही अच्छी सखी और छोटी बहन जैसी हैं। उन्हीं की वजह से मैं आपसे परिचित हो सकी हूँ। अपना परिचय आपको भेज रही हूँ जिससे आपसे अधिक जुड़ पाऊँ। आपकी विनम्रता और मृदु वाणी को शत–शत नमन।

– वन्दना गोसाईं

पूनम गौतम

8. जापान से निकलने वाली हिंदी की गूंज साहित्यिक पत्रिका आज जिन ऊंचाईयों को पार कर रही है उससे ये तो तय है कि एक दिन इस पूरे विश्व में वो हर व्यक्ति को एक मुट्ठी आसमान देने में सफल होगी। जो कि सदा से ही रमा दी का सपना रहा है। समाज के हर वर्ग,हर उम्र, हर क्षेत्र की ऊर्जा के साथ ये पत्रिका किसी ना किसी रूप में जुड़ चुकी है ये इसकी सफलता का रहस्य है। बच्चों की कविताएं, गीत, हाइकु, कहानी,ग़ज़ल, विज्ञान और कला सभी के समन्वयसे सजी ये पत्रिका रमा जी के द्वारा किया गया एक अद्भुत प्रयास है जो समाज में हिंदी भाषा के प्रति प्रेम और अब मानव के चहुंमुखी विकास में सहायक होगी।

मेरी इस पत्रिका के लिए अनंत शुभकामनाएं

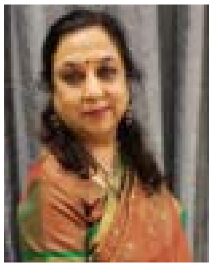

अंशु जैन

9. मैंने जब हिंदी गूंज पत्रिका को ज्वाइन किया था तो मुझे तनिक भी आभास नहीं था की इसके संचालक इतना भव्य आयोजन दिल्ली मे आयोजीत कर हम जैसे सदस्यो को सम्मानित करेंगे. मैं तहे दिल से रमा जी की आभारी हूँ की उन्होंने मुझे इस लायक समझा और सम्मानित किया

टोक्यो से प्रकाशित हिन्दी गूँज पत्रिका की सम्पादिका आदरणीय रमा शर्माजी एवं उपस्थित सभी वरिष्ठ साहित्यकारों को मेरा सहृदय प्रणाम तीन दिसंबर को दिल्ली के हिन्दी भवन में जो रमाजी द्वारा सम्मान प्रोग्राम आयोजित किया गया, लाजबाब था, पहले भी बहुत से आयोजन में गये लेकिन यह पहला अनुभव था जिसमे इतने बड़े बड़े दिग्गजो से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ ये हमारा सौभाग्य था, और रमा ज़ी ने जितना सम्मान दिया हम किसी भी तरह उसके लायक नहीँ थे, उन्होंने हमारी कविताएं, आलेखों, भजन और नृत्य को सराहा, हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा दी, यह काबिले तारीफ हैं!

लिखने को तो रमा ज़ी के बारे में बहुत कुछ है शायद सारी रात भी लिखूँ तो कम हैं, लेकिन बस हमें इतना आगे लाने के लिए शुक्रिया ही अदा कर सकते हैं. ईश्वर उन्हें दिन दुगुनी रात

v DVwj&fnl Ecj] 2023 (o'kZ&4 vad&14)

चौगुनी तरक्की दें और वो हमेशा प्रगति पथ पर अग्रसर रहें, रमाज़ी एक कवियत्री होने के साथ साथ एक बहुत अच्छी और नेक दिल इंसान भी हैं, जो विदेश में रहते हुए भी अपनी मातृभाषा, संस्कृति को इतना बढ़ावा दें रहीं हैं, इतनी सरल हैं की बस अब कुछ और लिखने के लिए शब्द नहीं हैं. तो अंत में सभी को हार्दिक शुभकामनायें

कविता मल्होत्रा

10. राष्ट्रीय विरासत की निर्मात्री रमा शर्मा

जो सदा अपनी जड़ों से जुड़ा रहा

वो शज़र हर तूफ़ान में भी खड़ा रहा

अप्रवासी भारतीय नागरिक होने का दायित्व बख़ूबी निभाती हुई आदरणीया रमा जी ने 3 दिसंबर 2023 को दिल्ली के हिंदी भवन में अपनी साहित्य सेवा का भव्य महायज्ञ संपन्न किया जिसमें महा मनीषियों, विद्वानों, पत्रकारों और साहित्यकारों ने अपनी–अपनी साहित्यिक सेवाओं की समिधाएँ डालकर हिंदी भवन को एक यज्ञशाला में रूपांतरित कर दिया।

जापान से चली हिंदी साहित्य की यात्रा को तीर्थ यात्रा का स्वरूप देकर रमा जी ने एक नया इतिहास रचा है।विभिन्न राज्यों से आमंत्रित, अनेक देशों से जुड़े, हर उम्र के रचनाकार, पत्रकार, चित्रकार और साहित्य सेवी विभूतियों को एक साथ एक मंच पर लाकर राष्ट्र भाषा की विरासत का निर्माण करना रमा जी के राष्ट्र प्रेम का प्रतीक है।

रमा जी का हिंदी की गूँज को वैश्विक स्तर पर पहुँचाने का प्रयास सराहनीय है। पुस्तकों के लोकार्पण के साथ–साथ हिंदी की गूँज से जुड़े तमाम साहित्यिक परिवार को सम्मानित करने का अँदाज वाक़ई क़ाबिले तारीफ़ है।

रमा जी का दिया स्नेह आदर और सम्मान

दिलाता है उन्हें भारतीय संस्कृति की पहचान

माँ शारदे की कृपा आप पर बनी रहे, इसी शुभकामना के साथ सफल और शानदार आयोजन की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

नीरजा मेहता, कमलिनी

11. बात मन की

बात हो "हिंदी की गूँज"की और आदरणीया रमा शर्मा जी का जिक्र न हो, ये असंभव है। रमा जी का नाम तो बहुत सुना था लेकिन 3 नवंबर 2023 को दिल्ली के हिंदी भवन में पहली बार उनसे मुलाक़ात हुई। हिंदी की गूँज पत्रिका और कुछ पुस्तकों के विमोचन और सम्मान समारोह के एक भव्य समारोह का अवसर था, रमा जी बहुत तल्लीनता से सभी आगंतुकों और अतिथियों के स्वागत सत्कार में लगी थीं। जैसे ही मैं वहाँ पहुँची वो सामने ही खड़ी थीं। सबसे पहली भेंट उनसे ही हुई। वो मुझे नहीं जानती थीं, मैंने अपना परिचय दिया तो बहुत प्रेमपूर्वक मिलीं। उन्होंने मुझे चाय और स्नैक्स लेने को कहा तभी अवसर पाकर मैंने अपनी कुछ पुस्तकें उनको भेंट की। चाहे मुलाकात चंद मिनटों की ही थी किंतु उनसे मिलकर बहुत सुखद महसूस हुआ, एक अमिट छाप छोड़ गईं वो। इतनी व्यस्तता के बाद भी वो सभी से प्रेमपूर्वक मिल रही थीं और उनके मुखमंडल पर एक अद्वितीय आभा थी, अधरों पर मुस्कान थी, व्यक्तित्व में एक गरिमा थी जो बरबस ही उनकी ओर आकर्षित कर रही थी। आयोजक के लिए बहुत कठिन होता है कि व्यवस्था के साथ सबका ध्यान भी रखें लेकिन अगर ये कहूँ कि रमा जी और इंद्रजीत जी के साथ उनकी पूरी टीम विधिवत कार्य में लगी थी तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

बहुत ही शानदार कार्यक्रम था, संचालक महोदय ने पूरी सभा को बांधे रखा था। बड़ी संख्या में पत्रिका से जुड़े लोगों को सम्मानित किया गया, अतिथियों का उद्‌बोधन और स्वयं रमा जी द्वारा उनके मन की बात सुनने को मिली। मैं आभारी हूँ आ. इंद्रजीत शर्मा जी की जिन्होंने मुझे इस सुंदर, सुनियोजित और प्रतिष्ठित कार्यक्रम में आमंत्रित किया और मुझे उनसे व रमा जी से मिलने का सुअवसर मिला। सम्मानों की श्रृंखला में जब मेरा नाम पुकारा गया तो मैं आश्चर्यचकित रह गई। न तो मैं इस पत्रिका से जुड़ी हूँ और न ही कभी इस पत्रिका में मेरी कोई रचना प्रकाशित हुई है। एक बार तो ठिठकी कि शायद मेरे नाम का कोई और हो लेकिन जब इंद्रजीत भाईसाहब ने मेरी ओर देखकर इशारा किया तो सहमे कदमों से मैं मंच पर गई। रमा जी और इंद्रजीत जी द्वारा विश्व हिंदी कल्चरल सेंटर टोक्यो द्वारा "विश्व हिंदी गौरव सम्मान"का प्रतीक चिन्ह प्राप्त किया। सम्मान तो अब तक मैंने बहुत प्राप्त किए हैं किंतु इस प्रतीक चिन्ह को पाकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रही हूँ।

इस समारोह में शामिल होकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की गूँज पहुँचाने वाली आवाज़ में मुझे अपनी आवाज़ भी महसूस हो रही है क्योंकि इस पत्रिका से जुड़ना, कर्मठ और हिंदी साहित्य के प्रति समर्पित लोगों से जुड़ना मेरा सौभाग्य है। मैं इस मंच की, विनम्र और व्यवहारशील रमा शर्मा जी और इंद्रजीत शर्मा जी का हृदयतल से आभार प्रकट करती हूँ और जिनकी रग–रग में साहित्य बसा है, उनको अनवरत साहित्य साधना की शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

प्रशांत अवस्थी

12. गत वर्ष हिंदी की गूंज की संस्थापिका दीदी रमा शर्मा जी द्वारा आयोजित नई दिल्ली स्थित हिंदी भवन के प्रांगण में संपन्न कार्यक्रम में प्रतिभाग करना मेरे लिए अत्यंत आनंददायक था। बिल्कुल ऐसा लगा कि जैसे यह किसी संस्था का नहीं बल्कि एक परिवार का आयोजन हो

रहा है। यह सुखद स्मृतियां अभी तक आंखों से ओझल नहीं हो पा रहीं थीं कि तभी रमा दीदी से एक बार पुनः हिंदी की गूंज पत्रिका के कार्यक्रम के लिए शुभ सूचना प्राप्त हुई। मन के अंतःकरण में साहित्य की रंग बिरंगी ऊर्जा संचारित हुई।

बातों ही बातों में जब रमा दीदी से चर्चा हुई कि लेखन के क्षेत्र में मेरी जीवन सहधर्मिणी दीक्षा भी सक्रिय रहा करती हैं तो उन्होंने बिना किसी देरी के प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इस बार कार्यक्रम में उसे भी साथ लेकर आना और उसकी कोई रचना भेजो प्रतिभाओं को निखरने का अवसर मिलना चाहिए।

कार्यक्रम के लिए मैं और दीक्षा जब नई दिल्ली की ओर बढ़ रहे थे तो दीक्षा के मन में ऐसे अनगिनत प्रश्न उमड़ रहे थे कि क्या कैसे होगा ? पता नहीं कैसा लगे?

इधर कार्यक्रम में पहुंचने में इस बार हम कुछ देर से पहुंच पाए। अब तो मेरे मन में भी कई सवाल थे कि दीदी ने समय से पहले पहुंचने और व्यवस्थाओं में सहयोग करने के लिए आदेशित किया था। अब क्या होगा?

लेकिन जैसे ही हम पहुंचे थोड़ी देर बाद में हिम्मत हुई और मंच के पास मैं पहुंच गया। जैसे ही दीदी ने देखा और मुस्कुराकर चिढ़ानेवाली मुख मुद्रा में कहा कि अब तुम्हारा क्या काम? मैं भी अपनत्व पाकर छोटे होने का भरपूर फायदा उठाते हुए उनसे कहा आप हैं तो सब हो ही रहा है। फिर दीदी ने संस्था की ओर से मुझे और दीक्षा को सम्मानित किया। और फिर काम में लगने का आदेश दिया। किसी भी ओर किसी भी उपस्थित जन मानस में कार्यक्रम के स्तर और अपनेपन की खुशियां सभी के चेहरों पर देखी जा सकती थीं। शायद सभी मन ही मन यह भी सोच रहे थे कि यह कार्यक्रम ऐसे ही अनवरत चलता रहे लेकिन मेरा मानना है कि ऐसे कार्यक्रम कभी समाप्त नहीं होते हां यह बात अलग है कि किसी नए कार्यक्रम तक हम वर्तमान के कार्यक्रम को स्थगित कर देते हैं।

अगला कार्यक्रम फिर जल्दी ही होगा ऐसे आश्वासन के साथ यह कार्यक्रम अगले कार्यक्रम तक स्थगित होने के पश्चात जब सब लोग जा रहे थे तो मैं और दीक्षा इसलिए रूके हुए थे की देर से आए तो हैं पर यहां से जल्दी नहीं भागेंगे। दीदी ने बड़े अपनत्व से हमारे साथ फोटो खिंचवाई और खूब सारा आशीर्वाद दिया। अंत में जब दीदी से चलने की आज्ञा ली तो उन्होंने बड़े होने के चलते दीक्षा से प्रथम मुलाकात के चलते खाली हाथ नहीं आने दिया और खूब सारा प्यार भरा एक अविस्मरणीय उपहार दिया। वहां से चलने के पश्चात हम दोनों कई नई स्मृतियां समेटे हुए चले जा रहे थे अपने घर को और यह चर्चाएं आज भी चल रही हैं कि कितना अपनत्व भरा कार्यक्रम और कितना ममत्व भरा रमा दीदी का हृदय।

प्रशांत अवस्थी प्रखर, कानपुर

अमित कुमार कौशल

13. अनुभूति : "हिंदी की गूँज" पत्रिका का वार्षिक सम्मान

समारोह।
अतिथि देवो भवः का अर्थ।
आज समझ में आया है।।
हिंदी की गूंज पत्रिका की संस्थापक व संरक्षक।
डॉ राम पूर्णिमा शर्मा जी ने आमंत्रण कर बुलाया है।
शब्द नहीं क्या कुछ मैं कह पाऊं ?
संस्कारी भाव में बस लिखना चाहूं।

"हिंदी की गूंज पत्रिका" टोक्यो, जापान का वार्षिक सम्मान समारोह वर्ष 03 दिसंबर 2023 को "हिंदी भवन"में आयोजित हुआ। आयोजन के मुख्य अतिथि डॉ सच्चिदानंद जोशी जी(सदस्य सचित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) रहै। कार्यक्रम अतिथि श्री बी. एल. गोड़ जी(गोड़ संस्था के संस्थापक एवं प्रतिष्ठित साहित्यकार)है। आदरणीय इंद्रजीत शर्मा जी, अनीता कपूर जी, ओम प्रकाश सपरा जी व अन्य जाने–माने बड़े साहित्यकार समारोह में शामिल हुए और कार्यक्रम में शामिल होकर, कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। आदरणीय विनोद पांडे जी कार्यक्रम के संचालक रहै। आदरणीय डॉ राम पूर्णिमा शर्मा जी (हिंदी की गूंज पत्रिका टोक्यो, जापान संस्थापक एवं संरक्षक, हिंदी कल्चरल सेंटर जापान)ने आदरणीय भाव, स्नेह के बंधन व मोह लेने वाली मुस्कान से सबका अभिनंदन किया। दीप प्रज्वलन के उपरांत आदरणीय तृप्ति मिश्राजी की कोयल सी कंठ की मधुर आवाज में सरस्वती आराधना से सबका मन मोह लिया। आदरणीय विनोद पांडे जी द्वारा कार्यक्रम का संचालन आरंभ हुआद्य आज इंद्रधनुष के रंगों की भांति वरिष्ठ अनगिनत साहित्यकारों, कवि व कवित्रियों का "हिंदी की गूंज"पत्रिका के वार्षिक सम्मान समारोह में "हिंदी भवन "में दर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआद्य छोटे–छोटे फूलों की कलियों जैसे खिलखिलाते भारत के भविष्य के दायित्व,देश के नन्हे बच्चों को, उनके हिंदी की गूंज पत्रिका में अपना बहुमूल्य सहयोग देनु हेतु सम्मानित किया गया परिणाम बेहद प्रेरणादायक साबित हुआ। उनके चेहरों की मुस्कान कार्यक्रम में सात्विक ऊर्जा का स्रोत साबित हुईद्य प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े हर साहित्यकार का सम्मान "हिंदी की गूंज"पत्रिका के संचालक व संस्थापक आदरणीय डॉ राम पूर्णिमा शर्मा जी द्व ारा आदर भाव से किया गयाद्य "हिंदी की गूंज "पत्रिका के वार्षिक सम्मान समारोह में हर अतिथि को स्नेह भाव से सत्कार किया गया। छोटों को ममता, बड़ों का आदर सत्कार देख मन आनंद विभोर हो गया। प्रस्तुत कार्यक्रम में अल्पाहार का विशेष ध्यान रखा गया।

आदरणीय अतिथि डॉक्टर सच्चिदानंद जोशी जी का कथन "पुस्तक हमेशा खरीद कर पढ़ें "जिससे हर साहित्यकार का मनोबल व लेखनी सक्रिय रहे, एक प्रेरणादायक सूत्र साबित हुआ। उन्होंने लेखक व पाठक के अटूट बंधन को आसान शब्दों में सभा में सबको समझा दिया। खरीदी हुई पुस्तक से पाठक का ज्ञान, लेखक की लेखनी में सुधार आता है और यह पवित्र रिश्ता ऊंचाइयों को छू जाता है।

आदरणीय विनोद पांडे जी का संचालन बेहद रोमांचक रहा जिस प्रकार भक्ति के समय भक्त का मन इधर–उधर भटक जाता है उनके संबोधन ने सबको समारोह से जोड़ा रखा।

जो आया, दिल में समाया, हर कुछ उसने दिल से पाया।

अतिथि देवो भवः का सबसे बड़ा उदाहरण "हिंदी की गूंज " पत्रिका के वार्षिक सम्मान समारोह में परिपूर्ण हो गयाद्य अंतरात्मा की इच्छा यही रहेगी की आदर सत्कार का यह सिलसिला यूं ही अग्रसर चला रहे, "हिंदी की गूंज"पत्रिका का वार्षिक सामान समारोह हर प्रकार की तरक्कियों को चूमता रहे और हर वर्ष हमें आमंत्रण प्राप्त होता रहे। "हिंदी की गूंज "पत्रिका के सदस्य आसमान में तारों की तरह चमकते रहे, जिनकी गिनती करना असंभव हो जाए। मुझे सम्मानित करने के लिए "हिंदी की गूंज"पत्रिका के संचालक व संस्थापक आदरणीय डॉ राम पूर्णिमा शर्मा जी का कोटि–कोटि धन्यवाद, साधुवाद व आभार।

हिंदी की गूंज –गूंज रही।
हर मंजिल को चूम रही।।
कैसी जीत? कैसी है हार?
श्रेष्ठ कोटि "हिंदी गूँज "का हर साहित्यकार।।
कर्मो परम धर्मः

डॉ अरूणा सब्बरवाल

14. हिंदी की गूंज साहित्यिक आयोजन में विशिष्ट अतिथि के रुप में मुझे आमंत्रित करना और सम्मानित करते हुए मंचासीन करना अपने आप में मेरे लिए बहुत ही गर्व की बात है। अपने प्रवासी भारतीय साहित्यकारों के बीच एक ऐसा प्यारा रिश्ता है जिसका वर्णन करना मेरे लिए बहुत ही मुश्किल है। आदरणीय रमा शर्मा जी ने मुझे जो इज्जत एवं मान सम्मान दिया उससे अविभूत हो कर मुझे ऐसा लगा कि काश् ऐसी सकारात्मक सोच एवं प्रवृत्ति हमारे सभी प्रवासी लेखकों में भी होती। मेरी लेखनी को जो सत्कार प्यार यहां मिलता है वह अकल्पनीय है। मैं रमा शर्मा जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से बहुत ही प्रभावित हुई। और मेरा दिल, मेरी आत्मा उस साहित्य महोत्सव में शामिल होकर धन्य हो गयी। एक ऐसे साहित्यिक आयोजन का हिस्सा बन कर मैं बहुत ही उत्साहित हूं और सभी आयोजनकर्ता साहित्यकार बंधुओं का हृदयतल से धन्यवाद करती हूं।

पवन शर्मा

15. वार्षिकोत्सव की शानदार सफलता के लिए हार्दिक बधाई।

"हिंदी की गूंज" पत्रिका द्वारा 3 दिसंबर को नई दिल्ली स्थित हिंदी भवन में आयोजित वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होना, मेरे लिए सौभाग्य के सुखद पल सिद्ध हुए। इस कार्यक्रम में, न केवल पत्रिका की संस्थापक, संरक्षक एवं मुख्य संपादिका आदरणीया श्रीमती रमा शर्मा जी से भेंट करने का सुअवसर प्राप्त हुआ बल्कि श्री इंद्रजीत शर्मा जी सहित संपादक मंडल के पदाधिकारियों, वरिष्ठ एवं सुप्रसिद्ध साहित्यकारों तथा पत्रिका के लेखकों का भी दर्शन–लाभ संभव हुआ। कार्यक्रम से स्पष्ट पता चल रहा था कि इस महत्वपूर्ण आयोजन में तन–मन–धन से की गई कितनी लगन, मेहनत एवं इच्छाशक्ति का समावेश था। श्री विनोद पांडेय जी द्वारा किया गया मंच–संचालन बेहद सफल एवं प्रभावशाली रहा।

कार्यक्रम में शामिल सभी महानुभावों का हिंदी के प्रति अगाध प्रेम स्पष्ट झलक रहा था और इन सभी हिंदी–प्रेमियों को "हिंदी की गूंज" से जोड़ने का सीधा श्रेय निःसंदेह श्रीमती रमा शर्मा जी एवं उनकी समस्त संपादन एवं सहयोगी टीम को जाता है।

हमारी मातृभाषा एवं राजभाषा हिंदी से जुड़े आयोजन तो प्रायः हमारे देश में होते रहते हैं, परंतु विदेश की धरती पर जाकर पूरी दुनिया को हिंदी की गूंज एवं धमक सुनाना सामान्य एवं सरल बात नहीं है। इतना ही नहीं, श्रीमती रमा शर्मा जी के इस स्वप्न को साकार करने में छोटे से लेकर बड़े स्तर तक सहयोगी बने सभी लोगों का, उनके द्वारा यहां आकर सम्मान करना, न केवल अति–सराहनीय है बल्कि अद्वितीय भी है।

मैं इस वार्षिकोत्सव की शानदार सफलता के लिए हार्दिक बधाई देते हुए पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास के लिए शुभकामनाएं देता हूं। सादर, –पवन शर्मा, सदस्य एवं लेखक

सुदर्शन रत्नाकर

16. वे सुखद पल

तीन दिसम्बर २०२३ की नीम सर्दी की वह सुहानी शाम नई दिल्ली का हिन्दी भवन जो दिल्ली, एन. सी .आर तथा देश के विभिन्न हिस्सों से आए साहित्यकारों से खचाखच भरा था और अवसर था टोक्यो (जापान) से प्रकाशित 'हिन्दी की गूँज' अंतरराष्ट्रीय पत्रिका के वार्षिक सम्मान समारोह का। संयोजिका थीं पत्रिका की संस्थापक एवं सम्पादक सुश्री रमा शर्मा जो जापान में रह कर भी अपनी भाषा के प्रचार–प्रसार में जी जान से जुटी हुई हैं। यह हिन्दी के प्रति उनकी

प्रतिबद्धता, प्रेम–उत्साह, लगन और परिश्रम को दर्शाता है। इस अवसर पर भी उनका उत्साह देखने वाला था। उनके व्यक्तित्व, वाणी, उनकी मुस्कुराहट में भी हिन्दी की महक थी जिसे उन्होंने भारत से दूर पत्रिका के माध्यम से फैला रखा है।

तीन बजे से शाम सात बजे तक चले इस कार्यक्रम की विशेषता यह थी कि पत्रिका के न केवल सहयोगी उत्साहित थे अपितु रचनाकार एवं पाठकवृंद, श्रोतागण भी उतने ही उत्साहित थे।पुस्तकों के लोकार्पण के साथ प्रोत्साहन हेतु हिन्दी साहित्य की अमूल्य सेवाओं के लिए पत्रिका की ओर से विश्व हिन्दी गौरव सम्मान एवं जापान हिन्दी भूषण सम्मान से विभूषित किया गया। इस आयोजन के माध्यम से ऐसे साहित्यकारों से रुबरू होने का अवसर मिला, जिनसे इससे पहले मिल नहीं पायी थी। उनके विचारों से लाभान्वित होने का अवसर भी प्राप्त हुआ। आभार रमा जी।

यह हमारे लिए हर्ष एवं गौरव की बात है कि अपनी मिट्टी से दूर विदेशी धरा पर भी हिन्दी का ध्वज फहराया जा रहा है। 'हिन्दी की गूँज' सारे विश्व में फैले ऐसी कामना करती हूँ।

सस्नेह –अशेष शुभकामनाएँ।।

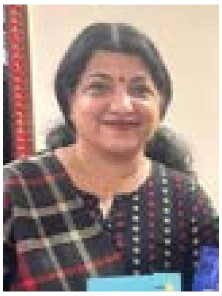

मीनाक्षी भसीन

17. दिनांक 3 दिसम्बर 2023 को हिन्दी भवन के परिसर में जापान से प्रकाशित प्रथम अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी पत्रिका "हिन्दी की गूँज' के वार्षिक समारोह में उपस्थित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ बहुत ही मधुर स्नेहिल डॉ रमा शर्मा जी से जो इस पत्रिका की मुख्य संपादक और इस सार्थक मुहिम की संस्थापक है। चूंकि मैं स्वयं अनुवाद अधिकारी हूं और अच्छी तरह से उन चुनौतियाँ से परिचित हूं जो अपने ही देश में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के मार्ग में आती है। ऐसे में सुदूर देश जापान में हिन्दी का प्रसार प्रचार करना किसी भी स्थिति में सरल कार्य तो हो ही नहीं सकता। किन्तु रमा जी इस कठिन पथ पर निरंतर आगे बढ़ रही है, इसके लिए वह बधाई की पात्र है। हिन्दी की गूँज पत्रिका का वार्षिक समारोह में जाने से एक नये उत्साह का संचार हुआ मन में। किसी भी भाषा का प्रचार–प्रसार केवल उस भाषा को प्रचलित करने से ही सम्भव है ५ हिन्दी की गूँज निश्चय ही जापान में ही नहीं अपितु विश्व में हिन्दी के प्रसार में अपनी अहम भूमिका निभाने में कारगर सिद्ध होगी। इस कार्यक्रम में अध्यक्ष के रूप में जाने माने वरिष्ठ साहित्यकार श्री बी एल गौड जी की गरिमामय उपस्थिति ने चार चांद लगा दिए और मुख्य अतिथि सच्चिदानंद जोशी जी, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सदस्य सचिव का सानिध्य प्राप्त हुआ, दोनों अतिथियों के हृदय उद्‌गार अत्यंत प्रेरक रहे ५ इस कार्यक्रम की य़ह भी विशेषता रही कि उपस्थित हिन्दी सेवी लोगों को सम्मानित किया गया। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी की गूँज पत्रिका आने वाले समय में निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होगी और डॉ रमा जी को उनके प्रयासों के लिए साधुवाद एवं शुभकामनाएं।

कामना मिश्रा

18. बहुत अच्छा अनुभव रहा। उत्तम व्यवस्था रही। बहुत से महनीय व्यक्तित्वों से भेंट हुई जैसे कि विशेष रूप से भारत की प्रथम महिला फुटबाल कोच सुश्री सरोज चौहान मैम से मिलकर बहुत प्रेरणा मिली। केक कटिंग से वातावरण और पारिवारिक हो गया। आप माँ हिन्दी और भारत माता दोनों की निस्वार्थ सेवा में निरंतर रत हैं, बहुत साधुवाद आपको।आपसे भी सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए। मुझे आमंत्रित करने हेतु हृदय तल से आपका आभार आदरणीया दीदी आपके भारत आगमन की सदैव हमें प्रतीक्षा रहती हैं। आपको हिन्दी की गूंज की अपार सफलता हेतु शुभकामनाएं और हम सदैव आपसे जुड़े रहेंगे। आपसे जुड़ना हमारे लिए गौरव का विषय है और इस तरह हम भी माँ हिन्दी व भारत माता की सेवा कर सकेंगे।

कुमार सुबोध

19. प्रतिक्रिया

दिनांक 03.12.2023 को नई दिल्ली के हिन्दी भवन में जापान में पंजीकृत अंतरराष्ट्रीय त्रैमासिक पत्रिका 'हिंदी की गूंज' के तत्वावधान में पुस्तक लोकार्पण एवं वार्षिक सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया था।

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों एवं हिन्दी साहित्य सृजन की विभिन्न विधाओं के परिपेक्ष्य से पधारी गणमान्य विभूतियों से कार्यक्रम का सशक्त मंच सुसज्जित था – प्रसिद्ध उद्योगपति, कवि एवं वरिष्ठ साहित्यकार श्री बी एल गौड़ (अध्यक्ष), सुप्रसिद्ध इतिहास, शास्त्रार्थ एवं जनसंचार के वेत्ता, विभिन्न विश्वविद्यालयों से सेवानिवृत्त उपकुलपति तथा वर्तमान में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के सदस्य सचिव श्री सच्चिदानंद जोशी (मुख्य अतिथि), 'भारत गौरव सम्मान' से सम्मानित सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री इंद्रजीत शर्मा, सेवानिवृत्त न्यायाधीश श्री ओम सपरा, प्रसिद्ध कवयित्री एवं वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती गायत्री ठाकुर 'सक्षम', प्रसिद्ध कवयित्री एवं साहित्यकार श्रीमती अनीता कपूर, वरिष्ठ

कवयित्री श्रीमती अरुणा सब्बरवाल। यह सभी हस्ताक्षर किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में 'सम्मान समारोह' के अंतर्गत मंचासीन गणमान्य विभूतियों को माल्यार्पण, प्रशस्ति–पत्र एवं स्मृति–चिन्ह के साथ–साथ हिन्दी साहित्य सृजन की विभिन्न विधाओं में संलग्न विभिन्न क्षेत्रों से संबंध विशिष्ट विभूतियों को भी सम्मानित किया गया, कुछ प्रमुख उद्धरण इस प्रकार हैः–

डॉ विजय पंडित, श्री सतीश शास्त्री, श्री राकेश राणा, श्री मनोज कुमार, सुश्री कविता गुप्ता, श्री मोहन दूबे, सुश्री सुनीता अग्रवाल, श्री दिलदार देहलवी, सुश्री कविता मल्होत्रा, सुश्री रश्मि सिन्हा, श्री अतुल खन्ना, श्रीमती कुसुम शर्मा, सुश्री उपासना पांडे, डॉ विशाल पाण्डेय, निर्मला जी, सुश्री ज्योत्सना गर्ग, श्री मुकेश कुमार सिन्हा, श्री अजय शर्मा, श्री संदीप सोनी, डॉ सविता चड्ढा, सुश्री बबली वशिष्ठ (अभिनेत्री), श्री जे पी द्विवेदी, श्रीमती सीमा परिणिता, श्रीमती सुमन मलिक तनेजा, सुश्री संध्या गौतम, सुश्री मीनाक्षी भसीन, सुश्री सरोज चौहान (फुटबॉल कोच), सुश्री गीतांजलि, श्रीमती वीणा मित्तल, श्रीमती अंजना सिंघल, श्री दरयाल सिंह, श्री अरूण भगत, श्रीमती सुनीता चांदला, सुश्री नीलिमा शर्मा, श्री ओम प्रकाश प्रजापति, डॉ रामनिवास 'मानव', डॉ नीलम वर्मा, सुश्री कंचन सागर, डॉ विदुषी शर्मा इत्यादि।

द्वितीय सत्र में 'पुस्तक लोकार्पण समारोह' के अंतर्गत मंचासीन विभूतियों के कर–कमलों द्वारा सुश्री रश्मि प्रभा रचित एवं श्रीमती रमा शर्मा संपादित काव्य–संग्रह 'प्रत्याशित सोच', श्रीमती रमा शर्मा संपादित गूंज उठी हिंदी' तथा जापान से प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक पत्रिका 'हिंदी की गूंज' के दो संस्करणों (जनवरी – अप्रैल 2023 : संयुक्तांक) एवं जुलाई – अक्टूबर 2023 : स्वतंत्रता दिवस विशेषांक) का लोकार्पण किया गया।

तृतीय सत्र के दौरान एक अनूठे अंदाज़ में जहां एक ओर 'बाल पेंटिंग विधा एवं हिन्दी साहित्य सृजन' के लिए सुश्री मीमांसा सिंह, धानी गुप्ता, सुरलीन कौर, सुरवीन कौर, इंदिरा बसनेट, आशिया इस्सर, अरमान कौशिक, जूही शर्मा इत्यादि बालक–बालिकाओं को सम्मानित किया गया। वहीं दूसरी ओर, 'हिंदी की गूंज' पत्रिका की सदस्यता ग्रहण करने वाले सदस्यों को भी सम्मानित किया गया। कुछ प्रमुख नाम इस प्रकार हैं – वंदना गुसाईं, पंकज, मनोज कुमार, मेधा सक्सेना, सरोज आहूजा, अंशु जैन, जय प्रकाश मिश्रा, कल्पना मेहरोत्रा, आलोक भगत, श्रीधर त्रिपाठी सीमा, मनीषा जोशी मणि, अमित कौशल, पूनम गौतम, सुमन तनेजा, रजनी शर्मा, अजय शर्मा, विशाल पाण्डेय, पवन शर्मा, मनोज दूबे, श्रुति गुप्ता इत्यादि।

इसी बीच एकाएक दो सम्मान प्रदान किए जाने की उद्घोषणा हुई। सर्वप्रथम तो श्रीमती रमा शर्मा को उनके हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए समर्पित अथक परिश्रम एवं कृतित्व हेतु सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ विदुषी शर्मा ने माल्यार्पण, प्रशस्ति–पत्र, स्मृति–चिन्ह एवं पदक के साथ अलंकृत कर सम्मानित किया। वहीं दूसरी उद्घोषणा से 'दि मैजिक मैन एन चंद्रा पटल' के सहकर्मी श्री कुमार सुबोध को 'हिंदी की गूंज' पत्रिका के प्रति योगदान एवं समर्पण हेतु स्मृति–चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

सभी मंचासीन विभूतियों ने एक–एक करके अपने उद्बोधनों से श्रीमती रमा शर्मा के व्यक्तित्व और कृतित्व को प्रतिबिंबित कर हिंदी के प्रति उनकी विकास–यात्रा की भूरी–भूरी प्रशंसा कर आशीर्वचनों से कृतार्थ किया। आदरणीय श्री बी एल गौड़ ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन के पश्चात् अपनी एक नवीनतम काव्य–रचना का रसपान कराकर सभागार की श्रोता–दीर्घा में उपस्थित सभी सुधिजनों को मंत्र–मुग्ध कर भाव–विभोर कर दिया। श्रोताओं द्वारा वाह–वाही के उद्घोषों से सभागार का समस्त वातावरण गुंजायमान हो गया।

सभागार पूर्णतः श्रोताओं से अटा पड़ा था। कोई भी ओर–छोर खाली नहीं था। कार्यक्रम की निवेदक एवं आयोजक श्रीमती रमा शर्मा द्वारा उपस्थित जनसमूह के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

विगत वर्षों से इस कार्यक्रम के मध्य नई दिल्ली 'हिन्दी–भवन' में अनेकानेक आयोजित कार्यक्रमों में किसी–न–किसी रूप में मेरी सहभागिता रही है। इस कार्यक्रम की उल्लेखनीय उपलब्धियां इस प्रकार हैं –

1. पहली बार भवन में बैठने की व्यवस्था के लिए निर्धारित कुर्सी क्षमता से अधिक 50 कुर्सियों का इंतज़ाम किया गया। जिससे आमंत्रित मेहमानों को उपयुक्त स्थान उपलब्ध कराया जा सके।
2. पहली बार एक साथ सैंकड़ों की संख्या में विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्ट जनों को एक मंच पर सम्मानित किया गया।
3. पहली बार अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक मंच पर स्थापित पत्रिका द्वारा बाल प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया।
4. पहली बार पत्रिका की सदस्यता ग्रहण करने वाले सदस्यों को कार्यक्रम में आमंत्रित करके सम्मानित किया गया।
5. विशेषतः इतने विस्तृत कार्यक्रम का आरंभ और समापन निर्धारित समय सीमा (4 घंटे) में संपन्न हुआ।

मेरा सौभाग्य रहा कि जहां एक ओर, समय रहते ऐसे कार्यक्रम का सहभागी बन पाया। वहीं दूसरी ओर, मेरे श्रमदान को पत्रिका द्वारा प्रतिफल के तौर पर सम्मानित किया।

कार्यक्रम के सभागार में देश के विभिन्न शहरों से उपस्थित जनसमुदाय ऐसे भव्य आयोजन का हिस्सा बन अपने आपको धन्य और गौरवान्वित महसूस कर रहा था। इसके लिए हिन्दी कल्चरल सेंटर, टोक्यो की संस्थापिका एवं अध्यक्षा तथा जापान में पंजीकृत अंतरराष्ट्रीय त्रैमासिक पत्रिका 'हिंदी की गूंज' की संरक्षक एवं संपादिका श्रीमती रमा शर्मा के अचल अथक परिश्रम के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं।

ओमप्रकाश सपरा

20. अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका "हिन्दी की गूंज" का वार्षिक समारोह अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका "हिन्दी की गूंज" की संपादिका श्रीमती रमा शर्मा एवं संरक्षक इन्द्र जीत शर्मा के प्रयासों से दिनांक 3 दिसम्बर, 2023 को वार्षिक अधिवेशन हिन्दी भवन, नई दिल्ली में पुस्तक विमोचन एवं सम्मान समारोह आयोजित किए गए। जिसमें हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्य मनीषी और साहित्यकारों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार श्री बी एल गौड़ ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि इंदिरा गांधी कला एवं संस्कृति केंद्र, नई दिल्ली के यशस्वी सचिव डॉ सच्चिदानंद जोशी तथा विशिष्ट अतिथि दिल्ली से पूर्व स्पेशल मेट्रोपॉलिटन मैजिस्ट्रैट, कवि, निबंध लेखक एवं संपादक श्री ओम सपरा तथा ब्रिटेन से पधारी वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती अरुण सभरवाल रहीं। कार्यक्रम का सफल संचालन युवा कवि श्री विनोद पांडे ने किया। कार्यक्रम में डॉ राम निवास मानव, डॉ नीलम वर्मा, डॉ विदुषी शर्मा, डॉ अनिता कपूर, ट्रू मीडिया के संपादक ओम प्रकाश प्रजापति, बबली वसिष्ठ, दिलदार देहलवी, आदि लगभग पचास साहित्यकार उपस्थित हुए। पुस्तक विमोचन समारोह और हिन्दी की गूंज पत्रिका के विमोचन के पश्चात सभी वक्ताओं ने हिन्दी भाषा के देश–विदेश में हो रहे प्रचार–प्रसार पर संतोष व्यक्त किया और सोशल मीडिया में इंग्लिश प्रभुत्व के इस आधुनिक विषम काल में इसके भविष्य के प्रति काफी चिंताये भी प्रकट कीं। श्री ओम सपरा ने कहा कि यह हिन्दी साहित्य का उत्तर आधुनिक काल है – इसमें साहित्य के अतिरिक्त विज्ञान, तकनीकी, आर्थिक, कृत्रिम बुद्धि, निजी और राजकीय संस्थानों की प्रकृति के अनुसार नवीन प्रबंधन के उपाय और समस्याओं के समाधान खोजने जरूरी हैं। देश विदेश में हो रहे विभिन्न हिन्दी माह सम्मेलनों में उठे प्रश्नों और सुझावों को लिखित रूप देकर एक परिणाम–मुखी योजना को अंगीकार करने की महती आवश्यकता है। इसी प्रकार अन्य सभी वक्ताओं ने अपने–अपने सुझावों को प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया। श्री बी एल गौड़ जी ने अपने उद्‌बोधन के बाद दो सरस और सशक्त कविताएं प्रस्तुत कीं। मेरी एक विशेष उपलब्धि यह रही कि मुझे एक बहुत पुराने मित्र वरिष्ठ लेखक और साहित्यकार, कवि संपादक डॉ राम निवास मानव, जो नारनौल से पधारे थे, उनसे कई वर्षों के बाद भेंट हुई। डॉ रमा शर्मा जी कुशल संयोजक साबित हुई और उन्होंने लगभग सभी साहित्यकारों को विशेष तौर पर तैयार किए गए सुंदर प्रतीक चिन्ह, आकर्षक शाल या पटका, सुसज्जित सम्मान पत्र आदि प्रदान कर के सम्मानित किया। यह भी उल्लेखनीय है कि माननीय रमा शर्मा जी भारत से इतनी दूर स्थित सूर्योदय के देश जापान में अविचल होकर हिन्दी की पताका को वहाँ के सुरभित और प्रकाश से प्रदीप्त आकाश में लहरा रही हैं, यह निश्चय ही उनके आत्मबल का प्रतीक है। मेरे विचार से इतने सुदूर देश जापान से पधार कर देश की राजधानी दिल्ली की खास मेहमान डॉ रमा शर्मा और उनके पति महोदय ने इस देश में पुस्तक विमोचन और अद्‌भुत सम्मान समारोह का योजनाबद्ध और सफल आयोजन किया और दिल्ली में एक उमंग और ऊर्जा से भरा साहित्यमय और काव्यमय शाम को प्रस्तुत करके एक उल्लेखनीय कार्य सम्पन्न किया जो सभी हिन्दी प्रेमियों के लिए अनुकरणीय है। क्योंकि हिन्दी के लेखकों को हीन भवन से निकाल कर एक ऊर्जा और सकारात्मक वातावरण देना हिन्दी के उत्थान के लिए बहुत आवश्यक है। इस सुंदर और अभूतपूर्व कार्यक्रम के लिए आयोजक विशेष साधुवाद के पात्र हैं। आपका यह हिन्दी सेवा और हिन्दी की पुस्तकों के प्रकाशन तथा नए पुराने सभी लेखकों के सम्मान और उनके मनोबल को बनाए रखने के कार्य सचमुच वंदनीय हैं। – ओम सपरा, 9818180932– संपादक, अध्यात्म पथ पत्रिका, मुख्य संपादक, मित्र संपादक पत्रिका, नई दिल्ली –एन – 22, डॉ मुखर्जी नगर, निकट बतरा सिनेमा, दिल्ली – 110009

उषा किरण गिरधर

21. 03/12/2023 को जापान से पधारी साहित्यकार, कवयित्री श्री मती रमा शर्मा द्वारा हिंदी भवन में अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका हिंदी की गूंज जापान में रजिस्टर्ड है। जापान की पहली हिंदी पत्रिका है। गूंज उठी हिंदी, प्रथम सांझा संग्रह की संपादक रमा शर्मा जी, संपादक विनोद पांडेय। आईएसबीएन नंबर प्राप्त जापान से तैयार, आयोजित पुस्तक लोकार्पण एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया। जिस में हिंदी प्रसार हेतु कार्यरत हिंदी प्रेमियों को मुमेंटो दे कर सम्मानित किया गया। जापान हिंदी सेवी सम्मान से मुझे भी सुशोभित किया गया।इस कार्यक्रम अध्यक्ष संपादक श्री बी एल गौड़, मुख्य अतिथि सच्चिदानंद जोशी जी, संरक्षक अमेरिका से आए श्री इंद्रजीत शर्मा जी, संचालक विनोद पांडेय जी जापान से पधारी, साहित्यकार, हिंदी की अनन्य भक्त, अन्य कवयित्री को भी सम्मानित किया गया।

साथ ही इस कार्यक्रम में बच्चों को कविता, और पत्रिका का कवर पेज भी तैयार किया, उन बच्चों को प्रोत्साहित किया मंच पर माननीय संपादिका रमा शर्मा जी तथा दिल्ली से ओम सपरा, नारनौल, हरियाणा से डॉ राम निवास मानव, संपादक जयपुर से सुनीता चौहान आदि अतिथिगण एवं मैं स्वयं उषाकिरण भी उपस्थित थी।कार्यक्रम बहुत ही सुव्यवस्थित रहा। हिंदी के प्रसार के लिए विश्व स्तर पर किया गया प्रसार सराहनीय है सुंदर कार्यक्रम हेतु बधाई।। संस्थापक रमा शर्मा जी जिन्होंने हिंदी की गूंज का जापान में बिगुल बजाया।

हिन्दी साहित्य परिषद कोलकाता का अंतर्राष्ट्रीय काव्य महोत्सव सह सम्मान समारोह सम्पन्न

हिन्दी साहित्य परिषद द्वारा गत संध्या अंतराष्ट्रीय काव्य महोत्सव सह सम्मान समारोह महानगर कोलकाता में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ राजीव नन्दन मिश्र के मंगलाचरण गणेश वन्दना व दिप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि जापान की डॉ रमा शर्मा थी। उन्होंने हिन्दी साहित्य परिषद के कार्यों व उद्देश्यों की सराहना की। उन्होंने जापान में हिन्दी के प्रचार–प्रसार को लेकर कई महत्वपूर्ण प्रयासों पर प्रकाश डाला एवं अपनी सच्चा हिन्दुस्तानी सहित कई रचना सुना कर सभी को भावविभोर कर दिया। विशिष्ट अतिथि डॉ कविता किरण ने अपनी कविताओं से खूब वाहवाही बटोरी। परिषद के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय शुक्ल ने अतिथियों के स्वागत के साथ परिषद को नवांकुरों के लिए समर्पित बताया। उन्होंने देश के साथ– साथ विदेशों में हिन्दी की अलख जगाने एवं प्रचार–प्रसार को परिषद का उद्देश्य बताया। विशिष्ट अतिथि प्रभात खबर के सम्पादक व साहित्यकार कौशल किशोर त्रिवेदी तथा अतिविशिष्ट अतिथि ताजा टीवी व छपते–छपते समाचार पत्र के प्रबन्ध निदेशक विशम्भर नेवर जी ने परिषद के कार्यों की सराहना करते हुए अपनी शुभकामना प्रेषित की।

कार्यक्रम में डॉ रमा शर्मा, आचार्य जमाल अहमद जमाल, डॉ कविता किरण एवं योगेन्द्र शुक्ल सुमन को साहित्य सारस्वत सम्मान से सम्मनित किया गया। हिन्दी साहित्य परिषद मध्य प्रदेश के अध्यक्ष गीतेश्वर बाबू घायल की कलमुँही नौकरियाँ सहित कई रचनाओं से पूरा हॉल तालियों से गूँजता रहा। युवा कवि व लेखक राजीव नन्दन मिश्र की रचना मैं सर्वश्रेष्ठ सनातन हूँ सुनकर श्रताओं ने खूब सराहना की। नसीम अख्तर ने अपने गजल और शेर सुनाकर खूब प्रशंसा बटोरी। कार्यक्रम का संचालन मौसमी प्रसाद एवं रौनक अफ़रोज़ ने किया।

कमांडेंट बिजेन्द्र शर्मा, चन्द्रिका प्रसाद अनुरागी, शब्दाक्षर के अध्यक्ष रवि प्रताप सिंह, स्नेहा रॉय रचनाकर के संस्थापक अध्यक्ष सुरेश चौधरी, ब्राह्मण युवा मंच के अध्यक्ष तारकनाथ दुबे, सुप्रा पेन के एमडी संजीव जैन, दयाल स्टेशनरी के एमडी वीरेन्द्र गुप्ता, सन्दीप गुप्ता, नन्दू बिहारी,प्रियंका चौरसिया, आलोक चौधरी, वन्दना पाठक, रीमा पांडेय, प्रदीप धानुक, दयाशंकर मिश्र, देवेश मिश्र, आलोक चौधरी आदि उपस्थित थे।

कविता

सिमरन गिरधर
पानीपत (हरियाणा)
भारत

आकांक्षा

न तो मुझे नाम कमाना है,
न तो मुझे मान–सम्मान ही पाना है।
मुझे तो बस अपने अन्दर सोए,
एक अच्छे इन्सान को जगाना है।
क्या भोग–विलास के साधन,
हैं अधिकार अमीरों के,
हक़ उन पर है निर्धन का भी,
ये क़िस्से हैं यार ज़मीरों के।
मुझे अपने अन्दर सोए उस ज़मीर को जगाना है।
ज़िंदगी भर बस मेरा मेरा किया,
अपनें लिए कम,अपनों के लिए ज़्यादा जिया।
पर अब मुझे बस हर दीन–दुखियों को अपना बनाना है।
कहना है लोगों से तब तक,
कफ़न न डालो मेरे शरीर पर,
जब तक इस में आत्मा का निवास बाकी है,
तब तक मुझ में जीने की आस बाक़ी है,
समाज के लिए कुछ कर जाने को अलख जगाना है।।
मुझे तो बस अपने अन्दर सोए एक अच्छे इन्सान को जगाना है..।।

कहानी

अंशु जैन देहरादून

बहू अगर तुम्हारी इजाजत हो तो क्या मैं अपने बेटे को घर ले जा सकता हूं.......?

घर में बहुत शांति पसरी हुई थी।
अगर पत्ते भी हिलते तो उनकी आहट तक सुनाई दे रही थी।
उससे ज्यादा मौन और खामोशी तो वैदेही जी के मन में थी। घर में दो शख्स मौजूद थे पर उसके बावजूद दोनों अलग–अलग कमरों में थे।

अचानक गिलास गिरने की आवाज आई तब वैदेही जी की तंद्रा टूटी। उठकर रसोई में गई तो देखा पति सोमेश जी जमीन पर गिरे पानी को साफ कर रहे थे।

आप रहने दीजिए। मैं साफ कर देती हूं
पानी पीने आया था। पता नहीं अचानक हाथ से गिलास कैसे गिर.....
अरे रे कोई बात नहीं।

हो जाता है कभी–कभी कहती वैदेही जी सोमेश जी के हाथ से पोछा लेकर फर्श साफ करने लगी।

सोमेश जी को उनकी यह चुप्पी बर्दाश्त नहीं हो रही थी इसलिए वो बोले

चलो, पड़ोस के मंदिर में संध्या आरती करके आते हैं
मेरा मन नहीं है जी।
आपको जाना है तो आप जाइए
आखिर कब तक बेटे का इंतजार करती रहोगी। चार पांच दिन बाद आ जाएगा ना...

हां, पता है कैसे आएगा... वैदेही जी ने तंज कसते हुए कहा।
अब छोड़ो भी। क्यों उम्मीद करके बैठी हो। बेवजह जितना ज्यादा उम्मीद करोगी उतना ही तुम परेशान होगी.....
“मैं भी तो माँ हूँ ”
कहते–कहते वैदेही जी फूट–फूट कर रोने लगीं।

लेकिन इस बार सोमेश जी ने उन्हें चुप नहीं कराया बल्कि उनका हाथ अपने हाथ में लेकर चुप–चाप उन्हें रोने दिया।

जब से वंश की शादी हुई है तब से ये हर बार का सिलसिला हो चुका है।
वंश सोमेश जी और वैदेही जी का इकलौता बेटा था।

शादी के पूरे बाद सात साल बाद उसका जन्म हुआ था, इसलिए लाड़ला भी था। उसकी शिक्षा–दीक्षा पर माता–पिता ने बहुत अच्छे से ध्यान दिया था।

पढ़ा लिखा कर उसे इंजीनियर बनाया। आज एक मल्टीनेशनल कंपनी में बड़े ओहदे पर कार्यरत है।

वंश अच्छी तरह से सेटल हो चुका था इसलिए दो साल पहले काफी सोच समझकर उसकी शादी रोमा से करा दी गई। काफी अरमान थे कि बहू घर आएगी तो थोड़े दिन ही सही घर में रौनक तो होगी। उसके बाद तो वैसे भी उसे वंश के साथ उसके जॉब प्लेस बेंगलुरु ही जाना था।

पर अरमान सब धराशायी हो गए। शादी के बाद कुछ दिन तो घूमने फिरने में ही निकल

गए और हनीमून से आने के बाद वो अपने मायके जाकर बैठ गई यह कह कर कि मुझे मेरी मम्मी की याद आ रही है।

हाँ, जिस दिन वंश को बेंगलुरु रवाना होना था उससे एक दिन पहले रोमा ससुराल आई थी वो भी अपना सामान पैक करने के लिए।

तब भी उसने वैदेही जी से ढंग से बात नहीं की। पर सबको यही लगा कि वो अभी नई नई है।

घर का माहौल भी नया है। इसलिए वो घुल मिल नहीं पा रही। पर यह गलतफहमी भी सोमेश जी और वैदेही की दूर हो गई क्योंकि रोमा जब भी आती सीधे मायके ही आकर रुकती थी।

और जिस दिन रवाना होना होता था उसके तीन चार घंटे पहले ससुराल आकर मिल लेती थी। पहले तो फिर भी वंश रोमा को मायके छोड़कर सोमेश जी और वैदेही जी के पास आ जाता था।

लेकिन पिछले चार बार से वंश वैदेही के साथ उसके मायके ही रूकता था।
जब सोमेश जी ने वंश से कहा कि बेटा कुछ दिन अपनी मां के पास भी रुक जाया करो तो वंश ने मायूस होकर कहा, रुकना तो चाहता हूं पापा,पर क्या करूं...?

रोमा को पसंद नहीं है। वो कहती है कि मैं बेटी हूं इसलिए मुझे मायके जाने की इजाजत लेनी पड़ती है।

तुम्हारा अच्छा है जब देखो अपनी मम्मी के पास जा कर रुक जाते हो। कभी मेरे माता–पिता के पास भी रुको, तो उनका मन खुश हो जाए।
अब बताओ पापा मैं क्या करूं....?

पर बेटा हमने उसे कभी रोका कहाँ है..? और वैसे भी वो हमारे पास रुकी कब है? सही कहा पापा, लेकिन क्या करें ? एक–दो दिन पहले भी आने की कोशिश करता हूं तो मुंह फुला कर बैठ जाती है। कुछ कहो तो वो फिर लड़ने झगड़ने लग जाती है और फिर मैं घर की शांति के लिए चुप रह जाता हूं।

और इस बार भी यही हुआ। वंश और रोमा पिछले तीन दिन से इस शहर में आए हुए हैं पर रोमा के मायके में रुके हुए हैं।

हर बार तो वैदेही जी तसल्ली कर लेती थीं पर इस बार उनकी हालत सोमेश जी से देखी नहीं गई। दूसरे दिन सुबह सुबह तैयार होकर सोमेश जी घर से रवाना हुए और सीधे पहुंच गए रोमा के मायके। इतनी सुबह उन्हें घर आया देखकर सब लोग हैरान रह गए। तभी रोमा के पापा ने कहा. .....

अरे समधी जी, आज इतनी सुबह सुबह। आइए बैठिए आज सुबह–सुबह कैसे आना हुआ "समधी जी, बस आपसे इजाजत लेने आया था"सोमेश जी ने भी अपने हाथ जोड़ते हुए कहा।

उनकी बात सुनकर सब हैरान रह गए और एक दूसरे की शक्ल देखने लगे।

हम समझे नहीं समधी जी, आप कहना क्या चाहते हैं"रोमा के पापा अभी भी हैरान परेशान थे।

वो क्या है ना समधी जी, पहले जब बेटियाँ शादी होकर ससुराल जाती थीं तो उसके मायके वाले उसे लिवाने आते थे और यूं ही उसके ससुराल वालों से इजाजत मांगते थे।

देखिए समधी जी हमें पता है कि जमाना बदल गया है तो हमें कोई एतराज नहीं। हम भी अपने बेटे को ले जाने के लिए आपसे इजाजत मांगने आए हैं। उसकी मां भी पूरा साल उसका इंतजार करती है।
पर क्या करें मेरा बेटा तो कुछ बोल नहीं पाता इसलिए आप और रोमा कहे तो क्या मैं अपने बेटे को घर ले जा सकता हूं?

अरे समधी जी, आप ऐसा क्यों कह रहे हैं? बेटा बहू तो आपके ही हैं। उन पर आपका पूरा हक है।

क्या सच में?

शादी के दो साल में तो कभी लगा नहीं मुझे। उल्टा तो यही लगा कि मेरा बेटा भी मेहमान ही बन गया है। जो यहां से रवाना होने से पहले एक–दो घंटे पहले आता है और मेहमानों की तरह मिल कर चला जाता है

तब आखिर रोमा के पापा ने अपनी पत्नी और अपनी बेटी रोमा की तरफ देखा। दोनों नजरें झुकाए चुपचाप खड़ी हुई थीं आखिर रोमा के पापा बोले....

माफ करना समधी जी, गलती आपकी नहीं है गलती हमारी है। हमने कभी इस तरफ ध्यान ही नहीं दिया।

बेटी की शादी तो कर दी पर कभी यह नहीं देखा कि वह अपने ससुराल में किस तरह का व्यवहार कर रही है

फिर रोमा से मुखातिब होकर बोले....

रोमा जाओ, अपना सामान पैक करो। तुम आज ही अपने ससुराल जा रही हो।

और याद रखना जैसे तुम्हारे मम्मी पापा तुमसे मिलने के लिए इंतजार करते हैं, वैसे ही तुम्हारे पति के मम्मी पापा भी उनसे मिलने के लिए इंतजार करते हैं।

अगर यहाँ मिलने आती हो तो कम से कम दोनों जगह पर बैलेंस बनाकर चलो। और मेहमानों की तरह ही ससुराल जाना है तो माफ करना, आज के बाद मायके में तुम्हारा स्वागत भी मेहमानों की तरह ही होगा।
याद रखना कोई शिकायत का मौका ना मिले.....!

'अपने पापा के कड़े रुख को देखकर रोमा की ज्यादा कुछ बोलने की हिम्मत नहीं हुई। उसने अंदर जाकर अपना और वंश का सामान पैक किया और सोमेश जी के साथ ससुराल रवाना हो गई।

'इधर घर की डोर बेल बजी तो वैदेही जी ने जाकर दरवाजा खोला। सामने बेटे बहू को खड़ा देखकर वो खुश हो गई....अरे तुम लोग? आज ही जा रहे हो क्या?
वैदेही जी का सवाल सुनकर बेटा बहू झेंप गए। पर फिर वंश मां को गले लगाते हुए बोला, नहीं माँ, इस बार हम कुछ दिन आपके पास भी रुक कर जाएँगे। वहाँ आपके बिना मन नहीं लगता था!
सच में...?
रुको रुको, मैं अभी आई
वैदेही जी फटाफट भागती हुई पूजा घर में गई और पूजा की थाली लगा कर ले आई और बेटे बहू की आरती उतारकर उन्हें घर में लिवा लाई। थोड़ी देर बाद सोमेश जी भी घर में आए और वैदेही जी को खुशी को देखकर खुश हो गए।

'कहां चले गए थे सुबह–सुबह। देखो बच्चे घर आए हैं और अब ये लोग कुछ दिन यही रुकेंगे
अच्छा! ये तो बड़ी खुशी की बात है

कहकर सोमेश जी अपने कमरे में चले गए। पर ना उन्होंने कभी अपनी पत्नी को बताया और ना ही उनके बेटे बहू को बताने दिया कि बेटे बहु अचानक रुकने के लिए घर कैसे आ गए.....?

आखिर वो एक मां के विश्वास को बनाए रखना चाहते थे।

जरूरी नहीं की कुछ तोड़ने के लिए
पत्थर ही मारा जाए...!!

लहजा बदल कर बोलने से भी
बहुत कुछ टूट जाता है..!!

❖❖❖

कविता

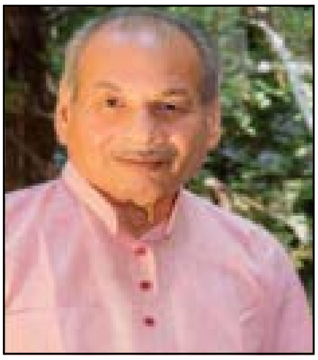

कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य'
लखनऊ

खरी बात कहने वाले सीधे होते हैं

मृत्यु के उपरांत कोई कहाँ जाता है,
यह जानना उतना आवश्यक नहीं है,
जीवित रहते कौन कहाँ जा रहा है,
यह जान लेना अति आवश्यक है।

दुनिया में स्वार्थ को सब बुरा कहते हैं
पर स्वार्थ में एक अच्छाई तो होती है,
सुर नर मुनि सब ही की है यह रीती,
स्वारथ लागि तो सब करते हैं प्रीती।

सच्चाई और अच्छाई ऐसी दौलतें हैं
जो खुद में नहीं है तो कहीं भी नहीं हैं,
खोजने से भी शायद नहीं मिल सकें,
क्योंकि खुद अच्छे हैं तो सब अच्छे हैं।

जिह्वा से निकला हर एक शब्द एक
स्वादिष्ट भोजन के जैसा होता है,
शब्द–शब्द का भी एक स्वाद होता है,
बोलने से पहले चखना अच्छा होता है।

स्वयं को अगर अच्छा न लगे तो
दूसरों को भी क़तई मत परोसिये,
जीवन यात्रा के सफर से हमें बस
इतना सबक सीख लेना चाहिये।

बड़ी बड़ी बातें तो सभी कर लेते हैं,
पर उनमे भी समझदार कम होते हैं,
क्योंकि समझदार तो वह ही होते हैं,
जो अक्सर छोटी बात समझ लेते हैं।

असहमत होते हूये भी किसी के प्रति
मर्यादा व सहृदयता के साथ आदर
पूर्ण भाव रखना परिपक्वता एवं
सरलता का सबसे बड़ा लक्षण है।

किसी को मदद कोई कोई ही देता है,
नीचे गिराने को हर शख़्स बैठा है,
खरी कहने वाले आदित्य सीधे होते हैं,
हर बात बिना लाग लपेट के कहते हैं।

❖❖❖

आरज़ू गर्ग
कक्षा–4

कविता

तृप्ति मिश्रा महू

बाज़ारू औरतें

बाज़ारू औरतें
पैदाइशी नहीं होती
हवस के नुमाइंदों की
ज़रूरतों को पूरा
करने के लिए
बनाई जाती हैं
बचपन से ही
जिस्मफरोशी की
भट्टी में पकाई जाती हैं
पता नही कब
कहीं भी
एक नन्ही कली
मसल दी जाती है
जिस्म के भूखे
भेड़ियों के
शैतानी इरादों में वो
कुचल दी जाती है
किसी जश्न में
रखी मिठाई की तरह
परोस दी जाती है
जिस्म के साथ–साथ
उसकी रूह तक
छील दी जाती है
उसके बाद.....
कोई ईमान कोई दीन
नहीं होता है
अब वो
बाज़ारु औरत है
और उसके साथ रोज़
एक नया मर्द होता है
सिर्फ दो जिस्म
बिना दिल के
बिना एहसासों के
भूख दोनों को लगी है
एक हवस में भूखा
एक पैसे की भूखी
आखिरकार
आदम और हव्वा का
वही सदियों पुराना
रिश्ता बनता है
बिना किसी रिश्ते का
तब जाकर
जिस्म की आग
ठंडी होती है
हव्वा की बेटी को
कुछ पैसे मिलते हैं
जिन्हे पाकर
बाजारू औरत के
ख़ालिस घरेलू
सपने खिलते हैं
अब वो भी
खाना बनाती है
किसी मर्द की दी हुई
नाजायज़ औलाद को
अपने हाथों से
खाना खिलाती है
बाज़ारू औरत के
अंदर छुपी माँ
बुला लेती है उसे
बड़े प्यार से
थपकियाँ देकर
सुला देती है उसे
दुआ करती हुई कि
जल्दी से ये सोए
तो वो फिर से
बाज़ार में जाए
छोड़ सोती औलाद
हौले से उठकर
दबे कदमों से
घर से बाहर आकर
कल की रोज़ी कमाने
औलाद को भरपेट सुलाने
फिर से
भद्दे इशारों से
मुस्कुराती हुई
मर्दों को पास
बुलाती हुई
बन जाती है फिर वही
कमबख्त
बाज़ारू औरत

कविता

राजीव नंदन मिश्र

!! श्रीराम मंदिर !!

श्रीराम–मन्दिर निर्माण हुआ,
जन–मन स्वप्न साकार हुआ,
वर्षो प्रतिक्षतारत नयनों को,
अब जाकर विश्राम हुआ।

सजी अयोध्या नव–वधू समान,
आदर में सुर्यवंशी राज्ञ महान,
दिनकर–निशिकर करें प्रणाम,
सुर–नर–मुनि गावत यश गान।

दिव्य आसन सिय संग विराजे,
लक्ष्मण–भरत शत्रुध्न भी साजे,
स्वामी–शरण हनुमत अनुरागी,
घण्टा ढोल मृदंग आरती बाजे।

जगत सुअवसर जय–जयकार,
भव्य देवालय उत्कृष्ट आकार,
राम की कृपा स्वजन्म सुस्थल,
शुभ क्षण अद्भुत अनुपम श्रृंगार।

राम नाम का जाप करें सब,
पापनाश हो पुण्य उदय जब,
श्रेष्ठ राम शुचि पात्र विराजे,
रम्य दृश्य "राजीव" नमन अब।।

मस्तिष्क और आँत

सुनीता चाँदला

कवि हो या लेखक, जब सरस्वती की कृपा से, विचारों के रूप में सरिता बहती है और वह लिखना आरम्भ करता है तो घंटे बीत जातें हैं सतत् काम करते हुए भूख और प्यास का कोई अता पता नहीं रहता, इसके विपरीत खाली बैठने पर, दिमाग व पेट भोजन खोजता है।

मस्तिष्क जितना हो शांत
उतनी ही बढिया होगी आंत
पेट में तितलियां
घबराहट की निशानियाँ

मेरी तो भूख ही मर गयी है– यह सभी ने महसूस भी किया है लेकिन इस के तथ्य से अनभिज्ञ रहें हैं। आंत व मस्तिष्क में एक गहरा संबंध है।

आइये इसे थोड़ा समझते हैं। पेट, हमारा दूसरा मस्तिष्क है। यह एक दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं। एक विचलित हो तो दूसरा भी विचलित हो जाता है। इनमें बसे जीवाणु आपस में बात करते रहते हैं। ये जीवाणु पाचन तंत्रों की दिवारों में मौजूद रहते हैं। ये ही तो भूख प्यास के संकेत भजते हैं। पाचन तंत्र की दीवारों में छिपा हुआ, यह "आपके पेट में मौजूद मस्तिष्क" पाचन, मनोदशा, स्वास्थ्य और यहां तक कि आपके सोचने के तरीके के बीच संबंधों के बारे में दवा की समझ में क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है।वैज्ञानिक इस छोटे से मस्तिष्क को एंटरिक नर्वस सिस्टम (ईएनएस) कहते हैं। और यह इतना कम नहीं है. ईएनएस 100 मिलियन से अधिक तंत्रिका कोशिकाओं की दो पतली परतें हैं जो ग्रासनली से मलाशय तक आपके जठरांत्र संबंधी मार्ग को अस्तर करती हैं।

"इसकी मुख्य भूमिका पाचन को नियंत्रित करना है, निगलने से लेकर भोजन को तोड़ने वाले एंजाइमों की रिहाई से लेकर रक्त प्रवाह को नियंत्रित करना है जो पोषक तत्वों के अवशोषण से लेकर उन्मूलन तक में मदद करता है," आंत्र तंत्रिका तंत्र पर शोध ने अंतरराष्ट्रीय ध्यान आकर्षित किया है। ("आंतरिक तंत्रिका तंत्र सोचने में सक्षम नहीं लगता जैसा कि हम जानते हैं, लेकिन यह हमारे बड़े मस्तिष्क के साथ आगे और पीछे संचार करता है – गहन परिणामों के साथ।")– एक वैज्ञानिक का कहना है। शोधकर्ताओं को इस बात के सबूत मिल रहे हैं कि गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल सिस्टम में जलन केंद्रीय तंत्रिका तंत्र (सीएनएस) को संकेत भेज सकती है जो मानसिक दशा/मूड में बदलाव लाती है।

जब इन दोनों में तालमेल नहीं रहता तो अनेक बिमारियों का मुख्य कारण बन जाता है जैसे कि अपाचन, कब्ज़, सूजन, मोटापा, ऐलर्जी, थकावट इत्यादि।

अपने जीवन में रहन सहन के कुछ सरल बदलावों के साथ, एलज़ाइमर व पार्किंसंस जैसी गम्भीर बिमारियाँ से निजात पा सकते हैं। इन पर हज़ारों रूपये खर्च किये जाते हैं।

आज के दौर की बढ़ती हुई समस्या अवसाद–डिपरैशन है। इसका सीधा संबंध खान पान से है। खोज द्वारा यह सिद्ध किया गया है कि बचपन में हुई दुर्घटनाओं का प्रभाव युवावस्था से भी आगे तक, रहता है।

तनाव जीवन की माँगो के प्रति एक प्राकृतिक मनोवैज्ञानिक तथा शारीरिक प्रतिक्रिया है।

जबकि इसका प्रबंधित स्तर पर कुछ लोगों को ये प्रेरित भी करता है और उसी स्तर का तनाव दूसरे को परेशान कर देता है।

तनाव से कोर्टीसोल नाम का हार्मोन पूरे शरीर में फैल जाता है जिसके कारण दिल की धड़कन बढ़ जाती है, रक्तचाप, चयापचय भी। इससे दिल का दौरा, स्ट्रोक वि पेप्टिक अलसर का ख़तरा बढ़ सकता है।

इसका कोई सटीक उपचार नहीं है लेकिन इसे विश्राम विधिओं को शामिल करने और पुराने तनाव से उत्पन्न लक्षणों या समस्याओं को प्रबंधन कौशल द्वारा सही किया जा सकता है । आध्यात्मिक अध्ययन बहुत ही सार्थक उपाय साबित होता है। योग को अपनायें और जीवन सफल बनाये।

v DVwj&fnl Ecj] 2023 (o'kZ4 vad&14)

शोध आलेख

डॉ. सी एल सोनकर
म्योर रोड, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश (भारत)
Gmail- clsonkar7@gmail.com
Mob- 9415474168

'कुरआन' के आइने में धर्म और वैश्विक समाज

आसमानी किताबों के रूप में विख्यात 1. तौरैत (Torah); हिबू र्बाइबिल, जिसके पैगम्बर मूसा (डनेमी) थे, 2. जूबूर्र (नइनत); जिसके पैगम्बर अब्राहम (इब्राहीम) के दो बेटों में (i) हजरत इसहाक (पैगम्बर आइजेक), जिसके अनुयायी पैगम्बर दाऊद या डेविड (David) थे, (ii) हजरत इसर्माइल, जिनके अनुयायी मुसलमान थे। ये दोनों ग्रन्थ यहूदी–धर्म से सम्बन्धित हैं तथा इन्हें Old Testament के अन्तर्गत माना जाता है, 3. इंजिल (र्बाइबिल–New Testament); जिसके पैगम्बर ईसा मसीह थे। इसमें यह भी उल्लेख है कि आदमी कैसे बना? र्बाइबिल में क्रिश्चियन समुदाय की धार्मिक बातों का वर्णन किया गया है। मुस्लिम लोग भी इन तीन पवित्र पुस्तकों को मानते हैं। तथा 4. कुरआन; जिसके पैगम्बर मुहम्मद साहब थे। यह किताब में मुस्लिम धर्म के मानने वालों की आचार–संहिता है।

इस्लाम–धर्मानुयायियों के काफी नाम यहूदी और ईसाई–धर्मानुयायियों के नामों से मिलते–जुलते दिर्खाइ देते हैं। कुछ लोग इनकी बातों को एक पहाड़ की जनजातियों के प्रमुख लोगों की कहावतें ही मानते हैं तथा कुछ लोग इन धार्मिक ग्रन्थों की बातों को उन पैगम्बरों के मन के द्वारा कही र्गइ बातों से अधिक नहीं मानते हैं। यूरोप की एक र्नइ सोच के अनुसार जुडा (श्रनकम) से सम्बन्धित विचारों को 'जुडैनिज्म' कहा गया। कुछ लोग कुरआन में कही गई बातों को 'मोहम्मडैनिज्म' की धारणा मानते हुए; कहते हैं कि इसमें अल्लाह के द्वारा आसमान से कहकर आने वाली बातें नहीं हैं, बल्कि मुहम्मद साहब ने अपने आप कुरआन की बातें कही हैं। कुछ लोग ईश्वर की सत्ता को नकारते हुए यह भी कहते हैं कि स्वर्ग और नरक इसी जीवन में है। वास्तव में किसी भी धर्म या समाज को संचालित करने के लिए उसकी अपनी आचार–संहिता होती है, जिसके सहारे वह समाज अपना जीवन जीता है। माना जाता है, कि ईश्वर का र्कोइ मजहब नही है और सभी जीवों को वह समान दृष्टि से देखता है। दैव–शक्ति की मान्यता न हो तो र्कोइ भी धर्म शून्य है। यदि धर्म से ईश्वर व उसके महत्व को निकाल दिया जाय, तो वह निस्तेज हो जायेगा।

हजरत मुहम्मद का जन्म 9 रबीउल अव्वल, 53 हिजरी पूर्व (20 अप्रैल 571 ई.) को अरब के मशहूर कबीले कुरैश और शहर मक्का में हुआ था। मक्का की एक नेक विधवा स्त्री खदीजा से उनका विवाह हुआ था। अरब में व्याप्त बुराइयों से स्वयँ को बचाए रखने, चिन्तन–मनन और ईश्वर की उपासना के लिए हजरत 'मुहम्मद' मक्का के निकट एक पहाड़ पर 'हिरा' नामक गुफा में चले जाते। वहाँ वह र्कइ दिनों तक रहते। चालीस वर्ष की आयु में इसी गुफा में एक दिन ईश्वर ने अपने फरिश्ते जिबरील के माध्यम से मुहम्मद साहब को बताया कि ईश्वर का संदेश पहुँचाने के लिए आपको पैगम्बर बनाया गया है।1

वास्तव में 'कुरआन' अरबी भाशा का शब्द है। इसका अर्थ है, अक्षरों व शब्दों को सार्थक क्रम के साथ जोड़कर जबान से अदा करना, जिसे पढ़ना कहते हैं।2 कुरान ने बार–बार कहा है, कि ईश्वर ने मेरे लाने वाले पैगम्बर को सारे इन्सानों का पैगम्बर बनाकर भेजा है।3 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' अर्थात् अल्लाह, जो बड़ा मेहरमान और रहम करने वाला है। मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी कहते हैं, कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व–सल्लम) को मुसलमानों का एक जातीय नेता और पेशवा समझ लिया गया है और कुरआन को केवल मुसलमानों के एक पवित्र ग्रन्थ की हैसियत दे दी र्गइ है, किन्तु वास्तव में कुरआन सम्पूर्ण जगत के पालनहार ईश्वर की ओर से सम्पूर्ण मानव जाति को प्रदान किया गया एक महान उपहार है। मनुष्य स्वभावतः प्रार्थना उसी चीज की करता है, जिसकी अपेक्षा और इच्छा उसके मन में होती है और उसी दषा में करता है, जब उसे यह एहसास हो कि उसकी अभीष्ट वस्तु उस सत्ता के अधिकार में है, जिससे वह प्रार्थना कर रहा है।4 कुरआन के सूरा अलबकरा में कहा गया है, कि उनके (धोखे–बाजों के) दिलों में एक रोग है, जिसे अल्लाह ने और अधिक बढ़ा दिया और जो झूठ बोलते हैं, उसके फलस्वरूप उनके लिए दर्दनाक सजा है।5 नमाज कायम करो, जकात (दान) दो और जो लोग मेरे आगे झुक रहे हैं, उनके साथ तुम भी झुक जाओ।6 तुम दूसरों को तो नेकी का रास्ता अपनाने के लिए कहते हो, मगर अपने आपको भूल जाते हो।7

ऐ इसर्राइल की सन्तान, याद करो मेरी उस नेमत (अनुग्रह) को, जो मेरी ओर से तुम पर र्हुइ थीं और इस बात को कि मैंने तुम्हें संसार की सारी जातियों पर श्रेष्ठता प्रदान की थी।8 याद करो, जब मूसा ने अपने जाति वालों से कहा, कि लोगों! तुमने बछड़े को पूज्य बनाकर अपने साथ बड़ा अन्याय किया है, अतः तुम लोग पैदा करने वाले के आगे तौबा (क्षमा की

प्रार्थना) करो और अपनों को मारो। इसी में तुम्हारे पैदा करने वाले की दृष्टि में तुम्हारी भर्लाइ है।9 विश्वास रखो, कि अरबी नबी को मानने वाले हों या यहूदी, ईर्साइ हों या साबी, जो भी अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाएगा और अच्छा कर्म करेगा, उसका बदला उसके रब के पास है और उसके लिए किसी डर और रंज का मौका नहीं है।10 यहूदी कहते हैं, कि ईसाइयों के पास कुछ नहीं। ईसाई कहते हैं, कि यहूदियों के पास कुछ नहीं; हालाँकि दोनों ही किताब पढ़ते हैं और इसी प्रकार के दावे उनके भी हैं, जिनके पास किताब का ज्ञान नहीं है। ये मतभेद जिनमें वे लोग पड़े हुए हैं, इनका फैसला अल्लाह कियामत के दिन कर दगे।11 तुम मुशरिक (बहुदेववादी) औरतों से हरगिज निकाह न करना, जब तक कि वे ईमान न ले जाएँ। एक मोमिन दासी मुशरिक शरीफ औरत से बेहतर है, यद्यपि वह तुम्हें बहुत पसंद हो और अपनी औरतों के निकाह मुशरिक मर्दो से कभी न करना, जब तक वे ईमान न ले आएँ। एक मोमिन गुलाम, मुशरिक शरीफ आदमी से बेहतर है, यद्यपि वह तुम्हें बहुत पसंद हो।12

तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेतियाँ हैं। तुम्हें अधिकार है, जिस तरह चाहो, अपनी खेती में जाओ, मगर अपने भविश्य की चिन्ता करो और अल्लाह की अप्रसन्नता से बचो।13 जिन औरतों को तलाक दी र्गइ हो, वे तीन बार मासिक धर्म होने तक अपने आपको रोके रखें और उनके लिए यह जायज नहीं कि अल्लाह ने उनके गर्भाशय में जो सृजन किया हो, उसे छिपाएँ।14 जो लोग ब्याज (सूद) खाते हैं, उनका हाल उस आदमी जैसा होता है, जिसे शैतान ने छूकर बावला कर दिया हो। अल्लाह ने व्यापार हलाल किया है, किन्तु ब्याज को हराम। जिस आदमी को उसके रब की ओर से जब यह नसीहत पहुँचे, तबसे आगे के लिए वह ब्याज खाने से बाज आयेगा; वरना वह जहन्नमी होगा।15 धरती और आकाश की र्कोइ चीज अल्लाह से छिपी नहीं है।16 ईमान वाले, ईमान वालों को छोड़कर इनकार करने वालों को अपना साथी और यार–मददगार हरगिज न बनाएँ, जो ऐसा करेगा उसका अल्लाह से र्कोइ सम्बन्ध नहीं।17

जब ईसा ने महसूस किया, कि इसर्राइल की संतान अधर्म और इनकार पर आमादा है, तो उसने कहा 'कौन अल्लाह के मार्ग में मेरा सहायक होता है,18 अब संसार में वह उत्तम गिरोह तुम हो, जिसे इन्सानों के मार्गदर्शन और सुधार के लिए मैदान में लाया गया है। तुम नेकी का आदेश देते हो, बुर्राइ को रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो। ये 'किताब वाले' (यहूदी) ईमान लाते हो, इन्हीं के हक में अच्छा था।19 किन्तु सभी किताब वाले समान नहीं हैं। उनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो सीधे रास्ते पर कायम हैं, रातों को अल्लाह की आयतें

पढ़ते हैं।20 ऐ लोगों जो ईमान लाए हो, अपने दल के लोगों के सिवा दूसरों को अपना भेदी न बनाओ। वे तुम्हारी खराबी के किसी अवसर से लाभ उठाने से नहीं चूकते, तुम्हें जिस चीज से हानि पहुँचे, वही उनको प्रिय है।21 जो लोग अल्लाह के मार्ग पर मारे गए हैं, उन्हें मुर्दा न समझो, वे न तो वास्तव में जीवित हैं, अपने रब के पास रोजी पा रहे हैं।22 मुसलमानों तुम धन और प्राण दोनों की परीक्षा में अवश्य की डाले जाओगे और तुम किताब वालों और मुशरिकों (बहुदेववादियों) से बहुत सी कष्टदायक बातें सुनोगे। अगर इन स्थितियों में धैर्य और धर्मपरायण की नीति पर जमे रहो तो।23 ऐ नबी! संसार के देशों में अल्लाह के नाफरमान लोगों की चलत–फिरत तुम्हें किसी धोखे में न डाले।24 लोगों अपने रब से डरो, जिसने तुम को एक जान और औरत से पैदा किया और उसी जान से उसका जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत मर्द और औरत दुनिया में फैला दिए25 और औरतों के महर खुशी से अदा करो। हाँ अगर वे खुद अपनी खुशी से महर का र्कोइ हिस्सा तुम्हें माफ कर दें, तो उसे मजे से खा सकते हो।26

तुम्हारी सन्तान के बारे में अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर है। अगर (मरने वाले की उत्तराधिकारी) दो से अधिक लड़कियाँ हो तो उन्हें तरके (छोड़ी हुई सम्पत्ति) का दो तिर्हाइ हिस्सा दिया जाए और अगर एक ही लड़की वारिस हो, तो आधार तरका उसका है। अगर मरने वाले के औलाद हो तो, उसके माँ बाप और अगर यह निस्संतान हो, तो माँ–बाप ही उसके वारिस हों तो, माँ को तिसरा हिस्सा दिया जाए और अगर मरने वाले के र्भाइ–बहन भी हो तो माँ छठे हिस्से की हकदार होगी। जबकि वसीयत, जो मरने वाले ने की हो, पूरी कर दी जाए और कर्ज जो उस पर हो, चुका दिया जाए।27

और तुम्हारी बीवियों ने जो कुछ छोड़ा हो, उसका आधा हिस्सा तुम्हें मिलेगा। अगर वे निस्संतान हों। वरना सन्तान होने की स्थिति में तरके (छोड़ी हुई सम्पत्ति) का एक–चौर्थाइ हिस्सा तुम्हारा है। जबकि वसीयत जो उन्होंने की हो पूरी कर दी जाए और कर्ज जो उन्होंने छोड़ा हो चुका दिया जाए और वे तुम्हारे तरके में से चौर्थाइ की हकदार होंगी। अगर तुम निस्संतान हो, वरना तुम्हारे संतान वाले होने की स्थिति में उनका हिस्सा आठवाँ होगा। इसके बाद की जो वसीयत तुमने की हो, वह पूरी कर दी जाए और जो कर्ज तुमने छोड़ा हो, वह चुका दिया जाए।28 और अगर वह मर्द और औरत निस्संतान भी हो और उसके माँ–बाप जिन्दा न हों, मगर उसका एक र्भाइ या बहन मौजूद हो, तो र्भाइ और बहन हर एक को छठा हिस्सा मिलेगा और भाई–बहन एक से ज्यादा हों, तो सारे तरके के एक तिहाई में वे सब शरीक होंगे; जबकि वसीयत जो की गई हो पूरी कर दी जाए और कर्ज जो मरने वाले ने छोड़ा हो अदा कर दिया जाए, शर्त यह है, कि वह नुकसान पहुँचाने (हकदारों का हक मारे जाने वाली) न हो। यह आदेश अल्लाह की ओर से और अल्लाह जानता–देखता और सहनशील है।29 जो नेक काम करेगा, चाहे मर्द हो या औरत, शर्त यह है, कि वह ईमान वाला

हो, तो ऐसे ही लोग जन्नत में दाखिल होंगे और उनका तनिक भी हक न मारा जाएगा।30 आज तुम्हारे लिए सारी अच्छी स्वच्छ चीजें हलाल कर दी गई हैं। किताब वालों का भोजन तुम्हारे लिए हलाल है और तुम्हारा भोजन उनके लिए।31

ऐ लोगों! जो ईमान लाए हो, जब तुम नमाज के लिए उठो, तो चाहिए कि अपने मुँह और हाथ कुहनियों तक धो डालो, सिरों पर हाथ फेर लो और पाँव टखने तक धो लिया करो। अगर नहाना अनियार्य हो, तो नहा कर पाक हो जाओ। अगर बीमार हो या सफर की हालत में हो या तुममें से कोई शौच करके जाए या तुमने औरतों को हाथ लगाया हो और पानी न मिले तो पाक मिट्टी से काम लो।32 यहूदी और ईसाई कहते हैं, कि हम अल्लाह के बेटे और उसके चहेते हैं। उनसे पूछो वह तुम्हारे गुनाहों पर तुम्हे सजा क्यों देता है? वास्तव में तुम भी वैसे ही इन्सान हो; जैसे और इन्सान ईश्वर ने पैदा किए हैं।33 ऐ लोगों! जो ईमान लाए हो, यहूदियों और ईसाइयों को अपना साथी और मित्र न बनाओ, ये आपस में ही एक दूसरे के मित्र हैं और अगर तुममें से र्कोइ इनको अपना मित्र बनाता है, तो उसकी गिनती भी फिर उन्हीं लोगों में से है, यकीनन अल्लाह जालिमों को सीधे रास्ते से महरूम कर देता है।34 यहूदी कहते हैं, अल्लाह के हाथ बँधे हुए हैं। बाँधे गए इनके हाथ और फिटकार पड़ी इन पर उस बकवास के कारण जो ये करते हैं। अल्लाह के हाथ खुले हुए हैं, जिस तरह चाहता है; खर्च करता है।35

मरयम का बेटा मसीह इसके सिवा कुछ नहीं कि बस एक रसूल था। उसके पहले और भी बहुत से रसूल हो चुके हैं। उसकी माँ एक सत्यवती औरत थी और वे दोनों खाना खाते थे। देखो हम किस तरह उनके सामने यथार्थ की निशानियाँ स्पष्ट करते हैं; फिर देखो ये किधर उलटे फिरे जाते हैं।36 जमीन और आसमानों और जो कुछ उनमें हैं; सबकी बादशाही अल्लाह के लिए है और वह हर चीज की कुदरत रखता है।37 हर व्यक्ति का दर्जा उसके कर्म के अनुसार है और तुम्हारा रब लोगों के कर्मों से बेखबर नहीं है।38 फिर वही है जिसमें चौपायों में से वे जानवर भी पैदा किए, जिनसे सवारी और बोझ ढोने का काम लिया जाता है और वे भी जो खाने और बिछाने के काम आते हैं। खाओ उन चीजों में से जो अल्लाह ने तुम्हें प्रदान की है और शैतान की पैरवी न करो, क्योंकि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।39

ये आठ नर–मादा हैं। दो भेड़ की जाति से और दो बकरी की जाति से। नबी, इनसे पूछा कि अल्लाह ने उनके नर हराम किए हैं या मादा, या वे बच्चे जो भेड़ों और बकरियों के पेट में हो? ठीक–ठीक ज्ञान के साथ मुझे बताओ, अगर तुम सच्चे हो40 और इसी तरह दो ऊँट की जाति से हैं और दो गाय की जाति से। पूछो, इनके नर अल्लाह ने हराम किए हैं या मादा वे बच्चे जो ऊँटनी और गाय के पेट में हों। क्या तुम उस समय हाजिर थे, जब अल्लाह ने इनके हराम होने का आदेश तुम्हें दिया था? फिर उस व्यक्ति से बढ़कर जालिम और कौन होगा; जो अल्लाह को जोड़कर झूठी बात कहे ताकि ज्ञान के बिना लोगों को गलत मार्गदर्शन करे। यकीनन अल्लाह ऐसे जालिमों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता।41

सूरा अल्–आराफ में आया है, कि कितनी ही बस्तियाँ हैं, जिन्हें हमने तबाह कर दिया। उन पर हमारा अजाब अचानक रात के समय टूट पड़ा या दिन–दहाड़े ऐसे समय पर आ गया, तो उनके मुँह से इसके सिवा और कुछ न निकला कि वास्तव में हम जालिम थे।42 विश्वास करो, जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया है और उनके मुकाबले में सरकशी की है, उनके लिए आसमान के दरवाजे हरगिज न खोले जाएँगे।43 मूसा ने अपनी कौम से कहा "अल्लाह से मदद माँगो और सब्र करो, जमीन अल्लाह की है, अपने बन्दों में से जिसको (वह) चाहता है, उसको वारिस बना देता है"।44 ऐ लोगों जो ईमान लाए हो, जब तुम्हारा एक सेना के रूप में अधर्मियों से मुकाबला हो, तो मुकाबला में पीठ न फेरो।45 ऐ नबी, ईमान वालों को जंग पर उभारो (उतारो)। अगर तुमने बीस आदमी सब्र करने वाले हों, तो वे दो सौ पर विजयी होंगे और अगर सौ आदमी ऐसे हों, तो सत्य का इनकार करने वालों में से हजार आदमियों पर भारी रहेंगे, क्योंकि वे ऐसे लोग हैं जो समझ नहीं रखते।46 जिन लोगों ने ईमान कबूल किया और घर–बार छोड़ा और अल्लाह के मार्ग में अपनी जानें (जिन्दगी) लर्ड़ाइ और अपने माल खपाए और जिन लोगों ने घर–बार छोड़ने वालों को जगह दी और उनकी मदद की वही वास्तव में एक–दूसरे के संरक्षक–मित्र हैं।47

अतः जब हराम (वर्जित) महीनें बीत जाएँ, तो मुशरिकों (बहुदेववादियों) को कत्ल करो। जहाँ पाओ पकड़ो और घेरो और हर घात में उनकी खबर लेने के लिए बैठो। फिर अगर वे तौबा कर लें और नमाज कायम करें और जकात दें तो उन्हें छोड़ दो। अल्लाह क्षमाषील और दयावान है।48 और अगर मुषरिकों (बहुदेववादियों) में से र्कोइ व्यक्ति शरण माँगकर तुम्हारे पास आना चाहे तो, उसे शरण दे दो, यहाँ तक कि वह अल्लाह की वाणी सुन ले। फिर उसके सुरक्षित स्थान पहुँचा दो। यह इसलिए करना चाहिए कि ये लोग ज्ञान नहीं रखते।49 क्या तुम न लड़ोगे ऐसे लोगों से जो अपनी प्रतिज्ञा भंग कर रहे हों और जिन्होंने रसूल को देश से निकाल देने का निश्चय किया था।50 युद्ध करो किताब वालों में से उन लोगों के विरुद्ध जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान नहीं लाते और जो कुछ अल्लाह और उसके रसूल ने राम ठहराया है, उसे हराम नहीं करते और सत्यधर्म को अपना धर्म नहीं मानते। यहाँ तक कि अपने हाथ से जिजया (जजिया) दें और छोटे बनकर रहें।51

ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें, ये सब एक–दूसरे के साथी हैं। भर्लाइ का हुक्म देते और बुराई से रोकते हैं, नमाज

v DVwj&fnl Ecj] 2023 (o'kZ&4 vad&14)

कायम करते हैं, जकात देते हैं और अल्लाह व उसके रसूल की आज्ञापालन करते हैं।52 वास्तविकता यह है, कि अल्लाह ने ईमान वालों में उनकी जान और उनके माल जन्नत (स्वर्ग) के बदले खरीद लिए हैं। वे अल्लाह के मार्ग में लड़ते और मारते व मरते हैं। उनसे अल्लाह के जिम्मे एक पक्का वादा है तौरात, इंजील और कुरआन में। और कौन है जो अल्लाह से बढक़र अपने वादे को पूरा करने वाला हो? अतः खुशियाँ मनाओ अपने उस सौदे पर, जो तुमने अल्लाह से चुका लिया है, यही सबसे बड़ी सफलता है।53 वास्तविकता यह है, कि तुम्हारा रब वही ईश्वर है, जिसने आसमानों और जमीन को छः दिनों में पैदा किया, फिर राजसिंहासन पर विराजमान होकर विश्व का इन्तजाम चलता रहा।54 वही है जिसने सूरज को प्रकाशमान बनाया और चाँद को चमक दी और चाँद के घटने–बढ़ने की मंजिलें ठीक–ठीक निश्चित कर दी, ताकि तुम उससे वर्षों और तारीखों के हिसाब मालूम करो। अल्लाह ने सब कुछ सत्यानुकूल ही पैदा किया है।55 शुरू में सारे इन्सान एक ही समुदाय के थे, बाद में उन्होंने विभिन्न धारणाएँ और पंथ बना लिए और अगर तेरे रब की ओर से पहले ही एक बात निश्चित न कर ली गई होती, तो जिस चीज में वे परस्पर विभेद कर रहे हैं, उसका फैसला कर दिया जाता56 और हमने मूसा और उसके भाई को संकेत दिया, कि मिस्र में कुछ घर अपनी कौम के लिए प्राप्त कर लो और अपने उन घरों को किबला ठहरा लो और नमाज कायम करो और ईमान वालों को खुशखबरी दे दो।57 हम इसके पहले मूसा को भी अपनी निशानियों के साथ भेज चुके हैं। उसे भी हमने आदेश दिया था, कि अपनी कौम को अंधेरों से निकालकर प्रकाश में ला।58

वह अल्लाह ही है, जिसने आसमानों को ऐसे सहारों के बिना कायम किया, जो तुमको नजर आते हैं। वह राजसिंहासन पर विराजमान हुआ और उसने सूरज और चाँद को एक नियम पाबंद बनाया।59 हमने (अल्लाह ने) इंसानों को सड़ी हुई मिट्टी के सूखे गारे से बनाया।60 दिल को छूने वाले प्रमाण और बाह्य जगत और अन्तरात्मा के परिलक्षित खुले–खुले साक्ष्यों से समझाया जाता है, कि बहुदेववाद लक्ष्यहीन और एकेश्वरवाद ही सत्य है।61 तुम्हारा खुदा बस एक ही खुदा है। मगर जो लोग आखिरत (परलोक) को नहीं मानते, उनके दिलों में इनकार बसकर रह गया है और वे घमण्ड में पड़ गए हैं।62 अल्लाह का आदेश है, कि "दो खुदा न बना लो, खुदा तो बस एक ही है। अतः तुम मुझी से डरो"।63 अल्लाह ने जो कुछ तुम्हारे लिए हराम (अवैध) किया है, वह है मुरदार और खून और सुअर का गोश्त और वह जानवर जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो। हाँ, भूख के मजबूर और विकल होकर अगर कोंइ इन चीजों को खाले, बिना इसके कि वह ईश्वरीय नियम के उल्लंघन का इच्छुक हो या आवश्यकता की सीमा से आगे बढ़े, तो यकीनन अल्लाह माफ करने वाला दयावान है।64

वे चीजें हमने विशेष रूप से यहूदियों के लिए अवैध (हराम) ठहराई थी, जिसका उल्लेख इससे पहले हम तुमसे कर चुके हैं और यह उन पर हमारा जुल्म न था, बल्कि उनका अपना ही जुल्म था, जो अपने ऊपर कर रहे थे।65

हमने इससे पहले मूसा को किताब दी थी और उसे बनी इसराईल के लिए मार्गदर्शन का साधन बनाया था। इस ताकीद के साथ कि मेरे सिवा किसी को अपना कार्य–साधक न बनाना।66 तू अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य न बना, नहीं तो तिरस्कृत और असहाय बैठा रहा जाएगा।67 तेरे रब ने फैसला कर दिया है, कि तुम लोग किसी की बन्दगी न करो, मगर सिर्फ उसकी। माँ–बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो।68 यह है मरयम का बेटा ईसा और यह है उसके बारे में वह सच्ची बात जिसमें लोग शक कर रहे हैं।69 अल्लाह का यह काम नहीं कि वह किसी को अपना बेटा बनाए। वह पवित्र जात है। वह जब किसी बात का निर्णय करता है, तो कहता है, कि हो जा, और बस वह हो जाती है।70 जो लोग ईमान लाए और यहूदी हुए और साबिइ और ईसाइ और मजूस और जिन लोगों ने साक्षी ठहराया, इन सबके बीच अल्लाह कियामत के दिन फैसला कर देगा, हर चीज अल्लाह की नजर में है।71 और तुम्हारे लिए चौपाए हलाल (वैध) किए गए, सिवाय उन चीजों के जो तुम्हें बर्ताइ जा चुकी है। अतः मूर्तियों की गन्दगी से बचो, झूठी बातों से परहेज करो।72 हर समुदाय के लिए हमने कुरबानी का एक तरीका निर्धारित कर दिया है, ताकि लोग उन जानवरों पर अल्लाह का नाम लें, जो उसने उनको प्रदान किए हैं।73

व्यभिचारिणी औरत और व्यभिचारी मर्द दोनों में से हर एक को सौ कोड़े मारो और उन पर तरस खाने की भावना अल्लाह के धर्म के विषय में तुमको न सताए, अगर तुम अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान रखते हो और उनको सजा देते समय ईमानवालों का एक गिरोह (समूह) उपस्थित रहे।74 व्यभिचारी विवाह न करे, मगर व्यभिचारिणी के साथ या बहुदेववादी औरतों के साथ। और व्यभिचारिणी के साथ विवाह न करे मगर व्यभिचारी या बहुदेववादी। और यह हराम कर दिया गया है ईमानवालों पर। और जो लोग पाक दामन औरतों पर तोहमत लगाएँ, फिर चार गवाह लेकर न आएँ, उनको अस्सी कोड़े मारो और उनकी गवाही कभी स्वीकार न करो, और वे खुद ही गुनहगार हैं।75 और जो लोग अपनी बीबियों पर दोषारोपण करें और उनके पास खुद उनके सिवा दूसरे कोंइ गवाह न हों; तो उनमें से एक व्यक्ति की गवाही चार बार अल्लाह की कसम खाकर दें, कि वह सच्चा है।76 नापाक औरतें नापाक मर्दों के लिए हैं और नापाक मर्द नापाक औरतों के लिए। पाक औरतें पाक मर्दों के लिए हैं और पाक मर्द पाक औरतों के लिए।77

ऐ लोगों जो ईमान लाए हो, शैतान के पदचिन्हों पर न चलो। उसका अनुसरण कोईकरेगा, तो उसे अश्लीलता और बुराई

का ही आदेश देगा। अगर अल्लाह का अनुग्रह और उसकी दयालुता तुम पर न होती, तो तुममें से कोई व्यक्ति पाक न हो सकता। मगर अल्लाह ही जिसे चाहता है पाक कर देता है और अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है।78 ऐ नबी ईमान वाले पुरुषों से कहो कि अपनी निगाह बचाकर रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें।79 और ऐ नबी, ईमान वाली औरतों से कह दो कि अपनी निगाह बचाकर रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें और अपना बनाव–श्रृंगार न दिखाएँ सिवाय उसके जो खुद ही जाहिर हो जाए और अपने दोनों (वक्षस्थलों) पर अपनी ओढ़नियों के आँचल डाले रहें। ये अपना बनाव–श्रृंगार न जाहिर करें; मगर इन लोगों के सामने पति, बाप, पतियों के बाप, अपने बेटे, र्भाइ, भाइयों के बेटे, बहनों के बेटे, अपने मेल–जोल की औरतों, अपने लौंडी–गुलाम, वे अधीन मर्द जो किसी और तरह का प्रयोजन (गर्ज) न रखते हों और वे बच्चे जो औरतों की छिपी बातों से अभी परिचित न हुए हों। वे अपने पाँव जमीन पर मारती र्हुइ न चला करें कि अपना श्रृंगार उन्होंने छिपा रखा हो; वह लोगों को मालूम हो जाए।80

वह परलोक का घर तो हम उन लोगों के लिए खास कर देंगे, जो जमीन में अपनी बड़ाई नहीं चाहते और न बिगाड़ पैदा करना चाहते हैं और परिणाम की भर्लाइ डर रखने वालों के ही लिए हैं।81 हमने इनसान के साथ ताकीद की है, कि अपने माँ–बाप के साथ अच्छा व्यवहार करें।82 (किताबवालों) हमारा पूज्य और तुम्हारा पूज्य एक ही है और हम उसी के मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।83 अल्लाह ही सृष्टि का आरंभ करता है, फिर वही उसकी पुनरावृत्ति करेगा, फिर उसी की ओर तुम पलटाए जाओगे।84 उसकी निशानियों में से है, कि उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया। फिर यकायक तुम इंसान हो कि फैलते जा रहे हो।85 और उसकी निशानियों में से यह है कि उसनें तुम्हारे लिए तुम्हारी ही सहजाति की बीबियाँ बनाई, ताकि तुम उनके पास शान्ति प्राप्त कर सको और तुम्हारे बीच प्रेम और दयालुता पैदा कर दी। यकीनन इसमें बहुत–सी निशानियाँ हैं, उन लोगों के लिए जो सोच–विचार करते हैं।86 नबी की पत्नियों, तुम में से जो कोई प्रत्यक्ष अश्लील कर्म करेगी, उसे दोहरा अजाब दिया जाएगा। अल्लाह के लिए यह बहुत आसान काम है।87 किसी ईमानवाले मर्द और किसी ईमानवाली औरत को यह हक नहीं है, कि जब अल्लाह और उसका रसूल किसी मामले का फैसला कर दे, तो फिर उसे अपने उस मामले में खुद फैसला करने का अधिकार बाकी रहे। जो र्कोइ अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी करे तो वह स्पष्टतः पथभ्रष्टता में पड़ गया।88

लोग तुमसे पूछते है, कि कियामत की घड़ी कब आएगी? कहो उसका ज्ञान तो अल्लाह को ही है। तुम्हें क्या खबर, शायद कि वह करीब ही आ लगी हो।89 ये इंकार करने वाले कहते हैं कि "हम हरगिज इस कुरान को न मानंगे और न इससे पहले आई हुई किसी किताब को स्वीकार करेंगे। काश! तुम देखते इनका हाल उस समय जब ये जालिम अपने रब के सामने खड़े होंगे। उस समय ये एक–दूसरे पर आरोप लगाएँगे।90

वस्तुतः इस्लामिक विधिशास्त्र के परम्परागत स्रोतों के रूप में कुरआन, हदीस, इज्मा व कियास का नाम लिया जाता है। मुस्लिम जगत इस्लाम के नियम, प्रवचन, शिक्षा, मार्गदर्शन या ज्ञान को अपने जीवन में आत्मसात करता है। 'कुरआन' इस्लामिक विधि का सबसे पहला व महत्त्वपूर्ण स्रोत है, क्योंकि इस्लाम के पैगंम्बर मुहम्मद साहब का मक्का व मदीना से जन्म–जन्मांतर का संबंध होने के कारण उनके माध्यम से अवतरित र्हुइ, कुरआन की आयतें संज्ञानित होना मुस्लिमों के लिए अल्लाह की धार्मिक नीति–विष्वास की जड़ में हैं। इन आयतों को हम तीन भागों में विभक्त कर सकतें हैं– 1. नैतिक सिद्धांत 2. मानव आचरण के नियम तथा 3. सीधे तौर पर इस्लाम के विधिक मामलों के विषय। 'हदीस' या सुन्ना का इस्लामिक विधि के स्रोत के रूप में दूसरा स्थान है तथा मोहम्मद साहब की परम्पराओं, रीति–रिवाजों तथा वचनों से संबंधित है। इस संबंध में उनकी पुत्री फातिमा व बारह इमामों के वचन भी अति महत्त्वपूर्ण है। 'इज्मा' के अन्तर्गत बहुमत द्वारा लिए गये निर्णय आते है। इसमें पाँच न्याय व्यवस्थायें दी गयी हैं–1. हनफी स्कूल की विधि में इस्लामिक जूरी के जनमानस के माध्यम से किए गए समझौते, 2. सफी स्कूल के विधि शास्त्र के अन्तर्गत पूरे समुदाय तथा बड़ी संख्या में जनमानस के समझौते, 3. मलिकी स्कूल के अन्तर्गत इस्लाम की पहली राजधानी मदीना के सभी निवासियों के समझौते, 4. हनबलि स्कूल विधि व्यवस्था में मोहम्मद साहब के करीबी लोगों के माध्यम से हुए समझौते व 5. उसुली विधि व्यवस्था में केवल उलेमा के सर्वसम्मति से मुहम्मद साहब के समकालीन या शिया इमामों के लिए गये निर्णयों की बाध्यता है। 'कियास' के अन्तर्गत शरियत न्यान शास्त्र में मिशाल के तौर पर बड़े अदब से उपयोग किया जाता है।

संदर्भ सूची

1. कुरआन मजीद, अनु. हि. मौलाना मुहम्मद फारूक खाँ, अल. कुरआन इन्स्टीट्यूट, लखनऊ, पृ.14, 21, 22.

2. कुरआन मजीद, पृ. 14.

3. कुरआन 34.28 और 7.158, कुरआन मजीद, पृ. 14.

4. कुरआन मजीद, पृ. 5,30.

5. सूरा अलबकरा के पारा–1, आयत–10, कुरआन मजीद, पृ. 36.

6. पारा–1, आयत–43.

7. पारा–1, आयत–44, कुरआन मजीद, पृ. 41.

8. पारा–1, आयत–47.

9. पारा–1, आयत–54, कुरआन मजीद, पृ. 41, 42.

10. कुरआन, अल्–बकरा 2.1.62, कुरआन मजीद, पृ. 43.

11. कुरआन,अल्–बकरा 2.1.113, कुरआन मजीद, पृ. 52.

12. कुरआन, सूरा अल्–बकरा 2.2.221, कुरआन मजीद, पृ. 72.

v DVwj&fnl Ecj] 2023 (o'kZ&4 vad&14)

13. कुरआन, सूरा अल–बकरा 2.2.223, कुरआन मजीद, पृ. 72.
14. कुरआन, अल–बकरा 2.2.228, कुरआन मजीद, पृ. 73.
15. कुरआन, अलबकरा 2.3.274, कुरआन मजीद, पृ. 84.
16. कुरआन, सूरा आले इमरान 3.3.5, कुरआन मजीद, पृ. 90.
17. कुरआन, आले इमरान 3.3.28, कुरआन मजीद, पृ. 93.
18. कुरआन, आले इमरान 3.3.52, कुरआन मजीद, पृ. 97.
19. कुरआन, आले इमरान 3.4.110, कुरआन मजीद, पृ. 105.
20. कुरआन, आले इमरान 3.4.113, कुरआन मजीद, पृ. 106.
21. कुरआन, आले इमरान 3.4.118, कुरआन मजीद, पृ. 106.
22. कुरआन, आले इमरान 3.4.169, कुरआन मजीद, पृ. 113.
23. कुरआन, आले इमरान 3.4.186, कुरआन मजीद, पृ. 116.
24. कुरआन, सूरा–आले इमरान 3.4.196, कुरआन मजीद, पृ. 117.
25. कुरआन, सूरा–अल–निसा 4.4.1, कुरआन मजीद, पृ. 121.
26. कुरआन, अल निसा 4.4.4, कुरआन मजीद, पृ. 121.
27. कुरआन, अनु–निसा 4.4.11, कुरआन मजीद, पृ. 123, 124.
28. कुरआन, अन्–निसा 4.4.12, कुरआन मजीद, पृ. 124.
29. कुरआन, अन्–निसा 4.4.12, कुरआन मजीद, पृ. 124.
30. कुरआन मजीद, अलनिसा 34.5.124, कुरआन मजीद, पृ. 149.
31. कुरआन, अल–माइदा 5.6.5, कुरआन मजीद, पृ. 167.
32. कुरआन, अल्–माइदा 5.6.6, कुरआन मजीद, पृ. 168.
33. कुरआन, अल्–माइदा 5.6.18, कुरआन मजीद, पृ. 171.
34. कुरआन, अल्–माइदा 5.6.51, कुरआन मजीद, पृ. 179.
35. कुरआन मजीद, अल्–माइदा 5.6.64, कुरआन मजीद, पृ. 181.
36. कुरआन, अल्–माइदा 5.6.75, कुरआन मजीद, पृ. 183.
37. कुरआन, अल्–माइदा 5.6.120, कुरआन मजीद, पृ. 191.
38. कुरआन, अल्–अनआम 6.8.132, कुरआन मजीद, पृ. 214.
39. कुरआन, अल्–अनआम 6.8.142, कुरआन मजीद, पृ. 216.
40. कुरआन, अल्–अनआम 6.8.143.
41. कुरआन, अल्–अनआम 6.8.144, कुरआन मजीद, पृ. 216, 217.
42. कुरआन, सूरा अल्–आराफ 7.8.4, कुरआन मजीद, पृ. 224.
43. कुरआन, मजीद, अल्आराफ 7.8.40, कुरआन मजीद, पृ. 229.
44. कुरआन मजीद, अल्आराफ 7.9.128, कुरआन मजीद, पृ. 241.
45. कुरआन, अल्अनफाल 8.9.15, कुरआन मजीद, पृ. 259.
46. अल अनफाल 8.10.65, कुरआन मजीद, पृ. 267.
47. कुरआन, अनफाल 8.10.72, कुरआन मजीद, पृ. 269.
48. कुरआन, अत्–तौबा 9.10.5, कुरआन मजीद, पृ. 276.
49. कुरआन, अत् तौबा 9.10.6, कुरआन मजीद, पृ. 276.
50. कुरआन मजीद, अल् तौबा 9.10.13, कुरआन मजीद, पृ. 277.
51. कुरआन, अल् तौबा 9.10.29, कुरआन मजीद, पृ. 280.
52. कुरआन, अल्–तौबा 9.10.71, कुरआन मजीद, पृ. 288.
53. कुरआन, अत्–तौबा 9.11.111, कुरआन मजीद, पृ. 295.
54. कुरआन, युनुस 10.11.3, कुरआन मजीद, पृ. 302.
55. कुरआन, युनुस 10.11.5, कुरआन मजीद, पृ. 302.
56. कुरआन, युनुस 10.11.19, कुरआन मजीद, पृ. 305.
57. कुरआन, युनुस 10.11.87, कुरआन मजीद, पृ. 314.
58. कुरआन, इबराहीम 14.13.5, कुरआन मजीद, पृ. 367.
59. कुरआन, अर रअ़द 13.13.2, कुरआन मजीद, पृ. 358.
60. कुरआन, अल–हिज्र 15.14.26, कुरआन मजीद, पृ. 377.
61. कुरआन, अल–तह्ल 16.परिचय.1, कुरआन मजीद, पृ. 384.
62. कुरआन, अन्–नह्ल 16.14.22, कुरआन मजीद, पृ. 387.
63. अल्लाह, अन्–नह्ल 16.14.51, कुरआन मजीद, पृ. 390.
64. कुरआन, अल्–नह्ल 16.14.115, कुरआन मजीद, पृ. 399, 400
65. कुरआन, अन–नह्ल 16.14.118, कुरआन मजीद, पृ. 400.
66. कुरआन, बनी इसर्राइल 17.15.2, कुरआन मजीद, पृ. 404.
67. कुरआन, बनी इसर्राइल 17.15.22, कुरआन मजीद, पृ. 408.
68. कुरआन, बनी इसर्राइल 17.15.23, कुरआन मजीद, पृ. 408.
69. कुरआन, मरयम 19.16.34, कुरआन मजीद, पृ. 443.
70. कुरआन, मरयम 19.16.35, कुरआन मजीद, पृ. 443.
71. कुरआन, अल्–हज 22.17.17, कुरआन मजीद, पृ. 483.
72. कुरआन, अल्–हज 22.17.30, कुरआन मजीद, पृ. 485.
73. कुरआन, अल्–हज 22.17.34, कुरआन मजीद, पृ. 486.
74. कुरआन, अन्–नूर 24.18.2, कुरआन मजीद, पृ. 508.
75. कुरआन, अन्–नूर 24.18.3,4. कुरआन मजीद, पृ. 508.
76. कुरआन, अल्–नरू 24.18.6, कुरआन मजीद, पृ. 509.
77. कुरआन, अन्–नूर 24.18.26, कुरआन मजीद, पृ. 512.
78. कुरआन, अल्–नरू 24.18.21, कुरआन मजीद, पृ. 512.
79. कुरआन, अन्–नूर 24.18.30.
80. कुरआन, अन्–नूर 24.18.31, कुरआन मजीद, पृ. 513–515.
81. कुरआन, अल्–कसम 28.20.83, कुरआन मजीद, पृ. 566.
82. कुरआन, अल्–अन्कबूत 29.20.8, कुरआन मजीद, पृ. 570.
83. कुरआन, अल्–अनकबूत 29.21.46, कुरआन मजीद, पृ. 575.
84. कुरआन, अर–रूम 30.21.11, कुरआन मजीद, पृ. 583.
85. कुरआन, अर–रूम 30.21.20.
86. (कुरआन, र्अ–रूम 30.21.21, कुरआन मजीद, पृ. 583, 384.
87. कुरआन, अल्–अहजाब 33.22.30, कुरआन मजीद, पृ. 606.
88. कुरआन, अल्–अहजाब 33.22.36, कुरआन मजीद, पृ. 607.
89. कुरआन, अल्–अहजाब 33.22.63, कुरआन मजीद,पृ. 612.
90. कुरआन, सबा 34.22.31. कुरआन मजीद,पृ. 618.

v DVwaj&fnl Ecj] 2023 (o'kZ&4 vad&14)

खजुराहो : काम ऊर्जा का राजपथ

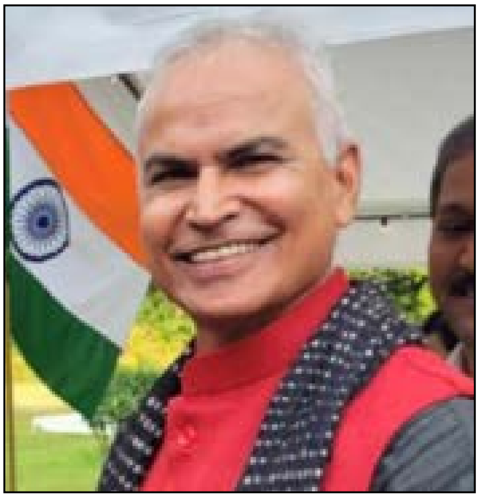

रामा तक्षक
नीदरलैंड

मुझे ठीक से ध्यान है कि पहली बार जब मैं 1991 में मेरी पत्नी के साथ खजुराहो गया था तब मेरी पत्नी ने खजुराहो पर लिखी गई एक पुस्तक खरीद कर मुझे उपहार स्वरूप दी थी। उन्होंने इस पुस्तक के भीतरी पन्ने पर कलम से लिखा था "यह खजुराहो है, खजुराहो ! जीवन की पूरी समझ यहाँ पत्थर में खड़ी है।" इन पँक्तियों के नीचे उनके हस्ताक्षर हैं। आज भी सँजोए हूँ उस प्यार की धरोहर पुस्तक को। बात ही कुछ ऐसी है। खजुराहो जगह ही कुछ ऐसी है।

इन पत्थर की मूर्तियों को देखने पर लगता है जैसे जीवित हैं। यह कलाधर की कारीगरी है कि इन पत्थरों में प्रेम झर रहा है। इनमें प्रेम करने की क्षमता है। प्रेम असीम है। जितना भी जानो लगता है कम है। ज्यादा जानने की तीव्र ईच्छा होती है। मन्दिरों के प्राँगण से बाहर जाने की ईच्छा नहीं होती। मन्दिर से बाहर निकलो तो पैर पीछे की तरफ पड़ते हैं। यहाँ कुछ ऐसा है जो परिपूर्ण है। परिपूर्ण को जानने की राह है। उसे जानने का घटता मौन रास है।

जब भी खजुराहो में होता हूँ तो मैं हर बार मन्दिरों में सुबह सुबह घूमने जाता हूँ। पश्चिमी समूह के मन्दिरों के प्राँगण में पहुँचते ही एक हजार वर्ष पूर्व की स्थिति मेरे समक्ष जीवन्त हो उठती है। शरद सुबह की सुहानी धूप में, सावन की फुहारों बीच या जेठ की दुपहरी में भी मूर्तिकारों, मजदूरों व निष्णात कलाधर समूह के अपने अपने काम में व्यस्त होना, छैनी हथोड़ों की टक टक, धम धम की गूँज मेरे कानों में सुनाई पड़ती है। ऐसा एक दृश्य इस आँगन में पहुँचते ही मेरे समक्ष उपस्थित हो जाता है। समय अतीत में दौड़ने लगता है। इस कर्माधार ऊर्जा का कम्पन चहुँओर अपना साम्राज्य बना लेता है। इसी दृश्य में मुख्य कलाधर का चिंतन, मूर्तिकारों को निर्देश, कौन सा पत्थर किस आकार का, किस स्थान विशेष में लगेगा। किस पत्थर को कौन सा मूर्तिकार, किस मानवीय भाव को उकार कर आकार देगा। यह सब कुछ ही क्षणों में मेरे इर्दगिर्द, मुझे घेर लेता है।

यह सब अनुभव की आंखों से देखकर, एक शाश्वत प्रश्न भी मेरे मस्तिष्क में कौंधता है कि इस विशेष मन्दिर कला मन्दिर निर्माण के पीछे आखिर किस व्यक्ति की सोच रही होगी ? ये मन्दिर घने जँगल में क्यों निर्मित हुए ?

मेरे देखे यह तो निश्चित है कि खजुराहो के मन्दिरों को तराशने में, निपुण कलाधर की जीवन के प्रति पैनी दृष्टि ने इन भव्य मन्दिरों को अथक परिश्रम कर, निर्माण किया है। मुझे इन मूर्तियों की भव भंगिमाओं एवम् सम्भोग के अन्तरंग भावों को देखकर लगता है कि किसी विदुषी का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है। इसीलिए मानव मन की इतनी बारीकियों को पत्थर पर तराशा जा सका।

जब जब मैं इन मन्दिरों के चौतरफ़ा घूमकर मूर्तियों को निहारता हूँ तो लगता है कि ये मूर्तियाँ मुझे दर्पण दिखा रही हैं। एक भिन्न ऊर्जा वर्तुल बनकर ऊर्ध्व की ओर दौड़ने लगती है। यही ऊर्जा मूर्तियों के शान्त पत्थरों में भी है और यही ऊर्जा मेरी देह में भी है। मेरी देह और मूर्ती दोनों एक ही अस्तित्व की इकाई हैं। दो होकर भी एक हैं। कोई रिक्तता मुझे घेर लेती है। इसी शून्य का दायरा अपना अनन्त फैलाव बना लेता है। इस फैलाव की कोई परिधि नहीं है। अस्तित्व का यही सच्चा स्वरूप है। अस्तित्व प्रेम से ही बना है। वही उसका सूत्र है। प्रेम अस्तित्व का धागा है। अस्तित्व को प्रेम से ही जाना जा सकता है।

कहते हैं कि जब महात्मा गाँधी को खजुराहो के मन्दिरों के बारे में पता चला तो उन्होंने कहा कि इन मन्दिरों को कीचड़ से ढ़कवा दो। इस बात को सुनकर रविन्द्रनाथ टैगोर ने तुरन्त हस्तक्षेप करते हुए कहा कि ऐसा न करो। यह कला है। कला के छोर को पकड़ कर ही जीवन को समझा जा सकता है। कृपया कला को कीचड़ से न ढ़को। शायद इसी कारण इन मन्दिरों को कीचड़ से नहीं ढ़का गया। खजुराहो जैसे मन्दिर धरती पर कहीं भी नहीं हैं। ये मन्दिर अनुपम हैं। किसी भी मन्दिर से इनकी तुलना नहीं की जा सकती है। खजुराहो में मंदिरों में हजारों हजारों सुंदर मूर्तियाँ हैं। अधिकांश नग्न हैं और सम्भोगरत हैं। बहुत ही लुभावनी हैं।

खजुराहो के मन्दिरों के विषय में एक बहुत बड़ा भ्रम भी है कि खजुराहो के मन्दिर केवल सम्भोग का ही संदेश देते हैं। प्रथमदृष्टया मन्दिरों की कामरत मूर्तियों को देखकर ऐसा लग तो सकता है। जबकि ऐसा कदापि, कदापि नहीं है। इन मन्दिरों के निर्माण का उद्देश्य कामुक बुद्धि या समझ तक सीमित नहीं है। इन कामरत मूर्तियों में जीवन दर्शन का एक गहन उपदेश है, एक सहज मार्गदर्शन है – कामुक डोर के सहारे समाधिस्थ होने की राह पकड़ने का।

जीवन का अपना धर्म है। उसे किसी लेबल की आवश्यकता नहीं है। चाहे जिस धर्म का मानने वाला पर्यटक यहाँ आये। जब दर्शक इन मूर्तियों के समक्ष खड़ा होता है तो गहन चैतन्य की प्रतिच्छाया अनवरत रुप से दर्शक को घेर लेती है। दर्शक जीवन में एक ठहराव

का अनुभव करता है। आपका रौंया रौंया पुलकित हो उठता है। आपकी देह का कतरा कतरा आपसे बतियाता है। दर्शक जीवन की प्रतिध्वनि से रुबरु होता है। यही साक्षात है अस्तित्व का। दर्शक को लगता है मुझे जहाँ होना चाहिए वहाँ आ पहुँचा हूँ।

खजुराहो की कामरत प्रतिमाएँ जीवन के एक तथ्य को बहुत ही सहज ढ़ंग से रूपायित करती हैं कि मानव जीवन में काम बहुत ही शक्तिशाली ऊर्जा है। इस शक्तिशाली ऊर्जा का दमन या नियन्त्रण कोई उपाय नहीं है अपितु जीवन व समाज के सामने प्रश्न यह है कि इस वेग को साधा कैसे जाये ?

व्यक्ति की वय के अनुसार हारमोन्स अपना काम करेंगे ही। प्रकृ ति अपना निर्माण करेगी ही। देह के माध्यम से प्रकृति स्वयं को अभिव्यक्त करेगी ही। स्वस्थ शरीर में हार्मोन्स जोर मारेंगे और मन को इस ऊर्जा की अभिव्यक्ति की राह तलाश करने का प्रयास करेंगे। प्रश्न यह है कि क्या आप इस ऊर्जा के साक्षी बन सकते हैं, इस ऊर्जा के साक्षी बन वाहक बन सकते हैं ? क्या आप इस ऊर्जा को पहचान सकते हैं ? समझ सकते हैं ? इस प्रक्रिया में यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण तथ्य है जिसका उत्तर आपके जीवन की सुगम्य बनाने में सहायक हो सकता है।

स्त्री व पुरुष देह की प्रकृति काम के तल पर बहुत कुछ भिन्नता लिए हुए है। पुरुष काम के तल पर संसृति के सृजन अपने शुक्राण ुओं को रोपित करना चाहता है और यह प्रक्रिया पुरुष के जीवन में एक रिक्तता लिए हुए है।

यही कारण है कि जब पुरुष अपनी कामवासना को नहीं सहेज पाता तो वह मानसिक और शारीरिक रूप से कुंठित और बीमार होने लगता है और यही सीढ़ी आगे चलकर अपराधों को जन्म देती है।

हाँ, यह ऊर्जा चूँकि स्त्री और पुरुष दोनों ही देह में समानान्तर व पूरक रूप में प्रवाहित होती रहती है। अतः आत्मीय प्रेम सम्बन्धों के माध्यम से, दर्पित कर, इसे सरल और सहज रूप से समझा और साक्षीभाव से, इसकी पूर्णता में जीया जा सकता है।

ऐसे भी लोग हैं जो विवाह नहीं कर पाते या अपनी काम ऊर्जा को आत्मीय प्रेम सम्बन्ध के माध्यम से अभिव्यक्ति नहीं दे पाते। ऐसे व्यक्तियों से बात करने पर पता चलता है कि बहुत से ऐसे व्यक्ति जब स्त्रियों के मध्य होते हैं तो स्त्रियों का स्नेहपूर्वक प्रेमपूर्ण व्यवहार उनकी काम ऊर्जा को समझने व उसके साक्षी होने का सर्वाधिक सुअवसर होता है। ऐसी स्थिति भी पुरुष को स्वयं को समझने में बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है। बशर्ते कि व्यक्ति स्वयं एवम् परिवेश के प्रति सजग एवम् ईमानदार हो।

मूलतः परिवार में माँ, बहिन व बेटियों का प्यार पुरूष के व्यक्तित्व को सँवारने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह सब बहुत सहज ही घटता है। उनका पावन स्नेह पुरुष को उसके मन, उसकी काम ऊर्जा को समझने, संचरित करने व संतुलित करने में सहयोगी बन पड़ता है। पुरूष जीवन में समझ का एक संतुलन सधने लगता है।

सामान्यतः स्त्रियाँ शारीरिक सम्बन्ध सन्तानोत्पत्ति की चाहत, प्रियतम का प्रेम पाने, अपने प्रियतम की ख़ुशी व कभी कभी अपने प्रियतम से पहुँच बनाने, उनका सहयोग पाने, उनकी मानसिक उपस्थिति को वर्तमान में सहेजने का कारक भी बनती है। वैसे भी स्त्रियों को मित्रता, प्रेम और आत्मीय सम्बन्ध बहुत पसन्द हैं। आमतौर पर देखने में आता है कि महिलाओं का मन आत्मीयता, देखभाल, लाड चाव, दुलार व सुरक्षा भाव की ओर उन्मुख होता है। कामवासना प्राथमिक नहीं होती। महिलाओं का जीवन के प्रति यही दृष्टिकोण भावी सम्बन्धों का आधार होता है।

एक वयस्क स्त्री पुरुष का मिलन कामोर्जा को समझने में भरपूर सहयोगी हो सकता है। विवाहसूत्र में बँधना भी एक रास्ता है। शर्त एक ही है कि आप एक दूसरे को समर्पित हों तभी प्रेम की गहराईयों को जाना जा सकेगा। काम ऊर्जा प्रेम की राह है। एक राजपथ है। जब आप पूर्ण समर्पण के साथ काम के राजपथ पर चलेंगे तो पूरा अस्तित्व आपके साथ होगा।

जब आप इस राह पर होंगे तो आपके गहरे में रुपान्तरण घटेगा। आपकी दृष्टि बदलेगी। आपके जीवन जीने का तरीका भी बदलेगा। गहन प्रेम की अवस्था में काम ऊर्जा, एक स्वयं साध्य, साधन बन जायेगी। फिर इस ऊर्जा को आप संगीत में लगायें या नृत्य में। इसे चित्रकला में लगायें या बागवानी में कोई फर्क नहीं पड़ता। रुपान्तरण की यह घटना आपको गहरे में बदल देगी। आपका मन काम की पकड़ से मुक्त हो सकेगा।

काम दमित न हो। काम मन को विकृत न करे। इस हेतु काम की ऊर्जा के प्रति सजग होना ही एकमात्र महत्तर कदम है। शारीरिक श्रम, खेलना, तैरना, साइकिल चलाना, नृत्य करना ये सब कार्य आपकी काम ऊर्जा को सर्जनात्मक दिशा दे सकते हैं। ध्यान की विभिन्न विधियाँ भी इसी क्रम में देह ऊर्जा को पहचानने व साक्षी होने में सदैव सहायक बनी रहती हैं।

इस बात का ध्यान रहे की काम ऊर्जा का दमन मन को विकृत बना देता है। दमित काम अपने विसर्जन का मार्ग ढूढ़ता है। कालान्तर में यही दमित वासना व्यक्ति को आपराधिक प्रवृत्तियों में धकेल देती है। क्रोध, हिंसा, बलात्कार आदि दमित काम के विसर्जन का परिण ाम हो सकते हैं।

काम ऊर्जा को समझ व राह देना स्त्रियों के लिए सहज है। वे जब भी इसका भान करती हैं तो स्वयं को किसी छोटे मोटे कार्य की ओर मुड़ जाती हैं। जब ऐसा नहीं घटता तो विरह के अँगारों को भी झेलने का दम रखती हैं। मेरे अनुभव में, पुरुषों की स्थिति काम ऊर्जा को राह देने में थोड़ी मुश्किल की सी है। मानसिक तौर पर, पुरुष शारीरिक बल के उपरांत भी, कमजोर है। शायद यही तथ्य पुरुष ऊर्जा को क्रोध, हिंसा में धकेल देता है। पौरूष से जीवन का राजपथ छूट जाता है।

खजुराहो के मन्दिर यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व धरोहर हैं। ये मन्दिर बलुआ पत्थर से बने हैं। यह भूरे रंग का बलुआ पत्थर मुलायम होता है। इसे तरासना कठोर पत्थर के मुकाबले आसान है। खजुराहो की इन मूर्तियों को तरासने के बाद मोटे चमड़े घिसाव

किया गया है। मूर्ती के एक एक भाव को कड़ी मेहनत से पत्थर पर उतारने व उसकी घिसाई करने में उसे कलाधर ने अपनी जी जान से सींचा है। इसीलिए प्रत्येक मूर्ती जीवन्त है। जीवन की आभा लिए हुए है, मनमोहक है।

जीवन की ऊर्जा फूल की सुगन्ध सी है। उसे कोई छू नहीं सकता। हाँ, उसकी अनुभूति हो सकती है। मन के देखे यही ऊर्जा भावदशा है। जो साक्षीभाव से समझने योग्य है। स्वयं को पढ़ने का यही एक तरीका है। इसके साक्षी हो जाओ। यह भावदशा तुम्हारी ही बनायी है। तुम ही इसके साक्षी हो सकते हो। तुम ही इसके मालिक हो।

रूप और आकार अस्तित्व की अभिव्यक्ति हैं। हम सब इसी अभिव्यक्ति की इकाई हैं। इस अभिव्यक्ति के प्रति साक्षी भाव से तुम अस्तित्व के प्रति खुल जाओगे। यह स्वीकारोक्ति तुम्हारे लिए सुख के सारे दरवाजे खोल देगी। महादेव पार्वती का आलिंगनबद्ध समाधिस्थ स्वरूप भी यही साक्षी भाव है। इस समाधिस्थ स्वरूप में कहीं द्व नहीं है। इस स्वरूप में द्व को तो मिटना ही पड़ेगा। यहाँ सब एकाकार है। अस्तित्व के साथ है। एक है।

खजुराहो एक साफ सुथरा छोटा सा स्थान है। जिसकी आबादी पुरानी बस्ती, सेवाग्राम, विद्याधर कालोनी, मंजूर नगर में बसी हुई है। साफ सुथरा होने के साथ साथ यहाँ शान्ति है तथा खजुराहो का जीवन मूलतया पर्यटन पर निर्भर है।

खजुराहो के मन्दिरों का निर्माण चँदेल वँश के द्वारा 985 ई.स. से 1050 ई. स. में करवाया गया था। ऐतिहासिक तथ्यों की बात माने तो बारहवीं सदी तक खजुराहो में 85 मन्दिर थे। जो 20 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले हुए थे।

आक्रमणकारियों के कारण खजुराहो का आकार सिकुड़ गया। 1182 में शाकम्भरी के चाहमान और 1202 में कुतुबुद्दीन ऐबक के आक्रमण ों के कारण चँदेल खजुराहो को छोड़कर महोबा, अजयगढ़ और कालिंजर की ओर कूँच कर गए। इसके बाद 1485 में सिकन्दर लोदी ने खजुराहो पर आक्रमण कर कई मन्दिरों को तहस नहस कर दिया। सोलहवीं शती के आते आते इन मन्दिरों को घने जँगल ने ढ़क लिया और खजुराहो के ये मन्दिर लोगों की नजरों से ओझल हो गये।

आखिर सी.जे. फ्रेन्कलिन ने 1819 में सेना के सर्वेक्षण के दौरान खजुराहो को घने जँगलों में फिर से ढूँढ़ निकाला। तत्पश्चात ब्रिटिश सेना के कप्तान टी.एस. बर्ट ने 1838 में खजुराहो पहुँचे। 1852 से 1855 के बीच खजुराहो आने वाली मुख्य्य हस्तियों में से एक थे एल्गजेंडर कन्निघंम।

इन मन्दिरों का निर्माण चँदेल वंश के उदीयमान होते ही प्रारम्भ हो गया था। यह निर्माण कार्य अनवरत रुप से चलता रहा जब तक बुन्देलखण्ड अस्तित्व में रहा।अधिकतर मन्दिरों का निर्माण चँदेल राजा यशोवर्मन व राजा धँग के समय में हुआ। लक्ष्मण मन्दिर राजा यशोवर्मन के समय का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। विश्वनाथ मन्दिर राजा धँग के शासनकाल की कहानी कहता है वहीं कन्दारिया महादेव राजा विद्याधर के शासनकाल में बना। यह मन्दिर सबसे बड़ा मन्दिर है और सबसे लोकप्रिय भी मन्दिर है। मतंगेश्वर मन्दिर में हर सुबह और शाम को आरती होती है।

यह दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि इनमें से आज केवल पच्चीस मन्दिर ही शेष हैं जो छः वर्ग किलोमीटर में फैले हुए हैं। ये सभी मन्दिर अपने निर्माता व उनके आराध्य की कहानी भी कहते हैं । इन मन्दिरों की बाहरी दीवारों में मूर्तियाँ प्रचुर मात्रा में हैं। इन मूर्तियों को बहुत बारीकी से तराशा गया है। ये मूर्तियाँ प्रतीकात्मक दृष्टि से प्राचीन भारतीय कला की अभिव्यक्ति का अनुपम उदाहरण हैं।

खजुराहो शिव शक्ति का एक धाम है। केदारनाथ, काशी और गया धाम की पँक्ति में एक शिरोमणि धाम। खजुराहो का उदय और यहाँ की मूर्तीकला अध्ययन का गहन विषय है। इस पर अभी बहुत अध्ययन होना शेष है।

शिवशक्ति का स्थान होने के नाते खजुराहो हनीमून के लिए श्रेष्ठ स्थान है। भारतीय परम्परा के अनुसार प्रतिवर्ष लाखों युगल परिणय सूत्र में बँधते हैं। इन नव विवाहित युगलों के लिए नये जीवन की शुरुआत में खजुराहो की हनीमून यात्रा नवविवाहित जीवन का तीर्थ सिद्ध हो सकती है। इस यात्रा को जीवन का तीर्थ बनाने के लिए भारतीय ट्रेवल एजेंटस को, खजुराहो की होटल एसोसिएशन के साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता है। ये ट्रेवल एजेन्टस चाहे महानगरों में हों या फिर छोटे शहरों में। नवविवाहित युगलों को खजुराहो से साक्षात कराने यानी व्यक्ति को स्वयं से साक्षात कराने व पर्यटन को प्रोत्साहित करने की भी अपार सम्भावनाएँ लिए हुए है।

बुन्देलखण्ड के इतिहास, कला व निर्माण को देखें तो इस क्षेत्र में पर्यटन की अपार सम्भावनाएँ हैं। विशेषतः खजुराहो जैसे स्थान के लिए दरवाजे से दरवाजे तक की सेवा नवविवाहित जोड़ों को दी जानी चाहिए। आज हर मद्यमवर्गीय भारतीय परिवार इस यात्रा खर्च को वहन करने में सक्षम भी है। इससे बुन्देलखण्ड में पर्यटन को बहुत बढावा मिल सकता है।

भारत सरकार व मध्यप्रदेश की सरकार के विभिन्न संसथानों को आपस में तालमेल कर गर्मियों में मन्दिरों के खुलने का समय मध्य रात्रि तक किया जाने से ग्रीष्म ऋतु में भी नव विवाहित युगलों को आकर्षित कर सकने में सक्षम है। सुरक्षा की दृष्टि से मन्दिरों में रात्रिकालीन प्रवेश केवल पँजीकृत नवविवाहित युगल को ही दिया जाय। साथ ही प्रवेशार्थियों की पँजीकरण प्रक्रिया अग्रिम ऑनलाइन हो ताकि सुरक्षा व्यवस्था करना सहज हो सके।

खजुराहो की पहली यात्रा से लेकर अब तक मैं अनेक बार खजुराहो गया हूँ। अब भी जाता हूँ। यहाँ हर दिन एक नया दिन है। मन्दिरों के प्राँगण में एक शान्त, नूतन, निर्जन, नितान्त, पत्थरों में गढ़ा गया उत्सव अपनी कथा लिए खड़ा है। इस सबको बँद आँखों से भी आत्मसात किया जा सकता है। मैंनें भी किया है और आप भी कर सकते हैं। आगरा में पत्थर का ताजमहल है और खजुराहो में जीवन का राजमहल है। जिसमें जीवन का राज उत्कीर्ण है। मानव का पूरा मनोविज्ञान है। खजुराहो काम ऊर्जा के राजपथ का द्वार है। बस देखने भर की क्षमता चाहिए।

v DVwj&fnl Ecj] 2023 (o'kZ&4 v ad&14)

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी ग़ाज़ियाबाद

मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज मोहन नगर गाजियाबाद की भारतीय भाषा, संस्कृति एवं कला प्रकोष्ठ, अमृत मंथन वेलफेयर सोसायटी गाजियाबाद एवं माधवी फाउंडेशन, लखनऊ के संयुक्त तत्वाधान में "मूल्यपरक शिक्षा और साहित्यःअंतर्संबंध एवं प्रासंगिकता"विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन आज दिनांक 13 दिसंबर 2023 से महाविद्यालय के सभागार में किया गया।प्रथम दिन के उद्घाटन सत्र का शुभारंभ महाविद्यालय के सचिव श्री विनीत गोयल जी एवं संगोष्ठी की आयोजक डॉ0 निशा सिंह (प्राचार्या, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज) के द्वारा कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ0 इंद्रजीत शर्मा (समाजसेवी, न्यूयॉर्क) मुख्य अतिथि डॉ0 रमा शर्मा (संपादक– हिंदी की गूंज, जापान) विशिष्ट अतिथि डॉ0 ओमप्रकाश प्रजापति (प्रधान संपादक–ट्रू मीडिया समूह, दिल्ली),व डॉ0 सुनीता चंदाला(शिक्षाविद,यूएसए, कैलिफोर्निया), बीज वक्ता डॉ0 मिथिलेश दीक्षित (माधवी फाउंडेशन लखनऊ की संस्थापक व अध्यक्षा)व अन्य अतिथि गणों के स्वागत द्वारा किया गया।

इसके पश्चात प्राचार्या महोदया द्वारा सभी अतिथि गणों का परिचय कराते हुए स्वागत भाषण दिया गया। इस अवसर पर बीज वक्ता ने अपना उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए कहा कि शिक्षा व साहित्य में घनिष्ठ संबंध है। शिक्षा ज्ञान की प्रकाशिका होती है। उच्च मानवीय मूल्यों से समन्वित शिक्षा द्वारा आत्मबोध एवं परमात्म बोध तक संभव है। विशिष्ट अतिथि डॉ0 सुनीता चंदाला ने कहा कि मूल्यपरक शिक्षा द्वारा मनुष्य श्रेष्ठ जीवन पद्धति को अपनाता है और अपने संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करता है अतः हम सभी को अपने मूल्यों का आत्मबोध होना अत्यंत आवश्यक है। विशिष्ट अतिथि डॉ0 ओमप्रकाश प्रजापति ने कहा कि मूल्यपरक शिक्षा समाज में नैतिकता को बढ़ाती है तथा विद्यार्थियों में कौशल, सामाजिकता व सांस्कृतिकता की भावना को जाग्रत करती है। मूल्यपरक शिक्षा पर आधारित साहित्य विश्व में सामंजस्य व सहयोग हेतु अत्यंत आवश्यक है। मुख्य अतिथि महोदया ने हिंदी भाषा व मूल्यपरक शिक्षा के महत्व से सभी को अवगत कराया। कार्यक्रम के अध्यक्ष ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक परिस्थितियों से नियन्त्रित जीवन–मूल्यो की पुनः प्रतिष्ठा में शिक्षण संस्थाओं का अपना विशिष्ट योगदान रहा है।अतः जीवन–मूल्यों की शिक्षा की आवश्यकता अपरिहार्य है। मूल्यपरक शिक्षा के द्वारा ही हम अपनी भावी पीढ़ी को भविष्य में आने वाली चुनौतियों का सामना करने योग्य बना सकते है अतः समय–समय पर ऐसी संगोष्ठीयों का आयोजन हमारे समाज के लिए नितांत आवश्यक है।इस अवसर पर संगोष्ठी के आयोजक डॉ. मिथिलेश दीक्षित का ट्रू मीडिया दिल्ली तथा हिन्दी की गूँज जापान की ओर से सम्मान किया गया।

उद्घाटन सत्र के पश्चात तकनीकी सत्र आरंभ किया गया।तकनीकी सत्र प्रथम व में मूल्य शिक्षा का महत्व, मूल्य का साहित्य पर प्रभाव, शिक्षा एवं मानवीय मूल्य संप्रेषण के विविध आयाम,मूल्यपरक शिक्षा के विकास में सोशल मीडिया की भूमिका आदि विषयों पर अनेक शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षा व विषय विशेषज्ञ डॉ0 कल्पना दुबे (एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, एमएमएच कॉलेज, गाजियाबाद)रहीं। इसके पश्चात द्वितीय सत्र का आरंभ किया गया जिसमें वैश्विक परिप्रेक्ष्य में वर्तमान शिक्षा प्रणाली का स्वरूप, सामाजिक परिवर्तन में मूल्य परक शिक्षा एवं साहित्य की भूमिका तथा शिक्षा और साहित्यः संप्रेषण और आधुनिक तकनीक आदि अनेक विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। द्वितीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षा डॉ0 सुभाषिनी शर्मा (एसोसिएट प्रोफेसर, रसायन विभाग,एमएमएच कॉलेज गाजियाबाद) रहीं। इस अवसर पर सभी विभागों के विभागाध्यक्ष,प्रवक्ता गण,अनेक शिक्षाविद तथा शोधरत छात्र– छात्राएं उपस्थित रहे।

प्राचार्या,
मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज,
मोहन नगर, गाजियाबाद

हरिद्वार में भागीरथी साहित्य सम्मान–2023' से सम्मानित किये गये साहित्यकार

हरिद्वार। सनातन धर्म के प्रमुख तीर्थ स्थल, हर की पौड़ी के नजदीक श्री नीलकंठ धाम के सभागार में टू मीडिया ग्रुप की ओर से दो दिवसीय टू मीडिया हरिद्वार साहित्य महोत्सव –2023 का भव्य आयोजन किया गया। महोत्सव के पहले दिन, 16 दिसंबर 2023 को देश– विदेश के अनेक शहरों से पधारे साहित्यकार, हर की पौड़ी पर माँ गंगा की आरती में शामिल हुए और हर की पौड़ी पर श्री गंगा सभा के अध्यक्ष ने टू मीडिया हरिद्वार साहित्य महोत्सव के साहित्यकारों को पुष्पहार एवं पुष्पगुच्छ भेट कर स्वागत किया। दूसरे दिन 17 दिसंबर, 2023 को हरिद्वार के प्रसिद्ध श्री नीलकंठ धाम के सभागार में माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्वलित एवं शंखनाद कर साहित्य, कला, संस्कृति, शिक्षा एवं पत्रकारिता पर विचार– विमर्श हेतु एक गोष्ठी आयोजित की गई तथा उसके बाद विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले साहित्यकारो को भागीरथी साहित्य सम्मान 2023 से नवाजा गया। इस सम्मान समारोह में–दिल्ली, हरियाणा, नोएडा, गाज़ियाबाद, बंगलौर, लखनऊ, हरिद्वार, उतराखंड, प्रतापगढ़ तथा उत्तर प्रदेश के शहरों से पधारे साहित्यकारों को सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह के कार्यक्रम को तीन सत्रों में बांटा गया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. अशोक मैत्रेय ने की। श्री अशोक गुप्ता (मुख्य अतिथि), डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति (स्वागत अध्यक्ष), श्रीमती रमा शर्मा (जापान), सुश्री उषा किरण, डॉ. सुनीता चंदाला (शिक्षाविद, यूएसए, कैलिफोर्निया), डॉ. सूक्ष्म लता महाजन और श्री ओमप्रकाश शुक्ल विशिष्ट अतिथि रहें। इस मौके

पर डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति को श्री इन्द्रजीत शर्मा, डॉ. कविता मल्होत्रा (संस्थापक– वात्सल्य), श्री ओमप्रकाश शुक्ल, डॉ. मनोज कामदेव, डॉ. सूक्ष्म लता महाजन, डॉ. अर्चना गर्ग ने सम्मानित किया। इस अवसर पर स्व. श्री पवन जैन (संस्थापक– आगमन) के जन्मदिवस के मौके पर श्री अशोक गुप्ता, डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति एवं तमाम साहित्यकारों ने स्व. श्री पवन जैन को पुष्प अर्पित किये, इस मौके पर श्री अशोक गुप्ता (संस्थापक– किआन फाउंडेशन) ने श्री विनोद पराशर, श्री भूपेंद्र राघव, डॉ. सूक्ष्म लता महाजन, सुश्री उर्वी उदल को किआन सारस्वत पुरस्कार, ग्यारह सौ रूपए राशि भेट कर सम्मानित किया, इस सत्र का मंच संचालन– श्रीमती उषा श्रीवास्तव ने किया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. संजय जैन (अध्यक्ष) ने की। पंडित नमन (मुख्य अतिथि), डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति (स्वागत अध्यक्ष), डॉ. मनोज कामदेव, श्री विवेक बादल बाजपुरी, श्री सतेन्द्र सिंह, श्रीमती अपर्णा थपलियाल, सरोज शर्मा तथा श्रीमती फोज़िया अफजाल (विशिष्ट अतिथि) रहें। मंच संचालन–श्रीमती पूजा श्रीवास्तव ने किया। अंतिम सत्र की अध्यक्षता श्री विनोद पाराशर ने की। श्री हरेंद्र पंडित (मुख्य अतिथि), श्री भूपेन्द्र राघव, श्री एस.पी. दीक्षित, डॉ. कीर्ति रतन 'रतन', श्री देवेंद्र प्रकाश शर्मा, डॉ. अर्चना गर्ग (विशिष्ट अतिथि), मधु बाला रुस्तगी, डॉ. कविता मल्होत्रा रहे। मंच संचालन– श्रीमती पूजा श्रीवास्तव ने किया। इस अवसर पर ट्रू मीडिया के संपादक डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति ने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि महान राजा भगीरथ गंगा नदी को अपने पूर्वजों को मुक्ति दिलवाने के लिए स्वर्ग से पृथ्वी तक लाये थे। हरिद्वार को 'गंगाद्वार' व 'हर की पौड़ी' भी कहा जाता है। यह हिन्दुओं के सात पवित्र स्थलों में से एक है। मान्यता है कि चार स्थानों पर अमृत की बूंदें गिरी थीं। वे स्थान हैंः– उज्जैन, हरिद्वार, नासिक और प्रयाग। इन चारों स्थानों पर बारी–बारी से हर 12 वें वर्ष महाकुम्भ का आयोजन होता है। भक्तों का मानना है कि वे हरिद्वार में पवित्र गंगा में एक डुबकी लगाने के बाद स्वर्ग में जा सकते हैं। आज हरिद्वार का केवल धार्मिक महत्व ही नहीं है बल्कि यह एक आधुनिक सभ्यता का मंदिर भी है। ऐसे पवन पवित्र स्थल पर स्नान करना, साँस लेना, सम्मान प्राप्त करना मानो जीवन के स्वप्न पूरे होने जैसा है।ट्रू मीडिया हरिद्वार साहित्य महोत्सव –2023 में जिन साहित्यकारों को साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए 'भागीरथी साहित्य सम्मान–2023' से नवाजा गया, उनमें शामिल थे –श्री विनोद पाराशर, श्री देवेन्द्र प्रकाश शर्मा, डॉ अशोक मैत्रेय, सुश्री भावना शर्मा, श्री संदीप सिंहानिया प्रजापति, श्री एस. पी. दीक्षित, श्रीमती उषा श्रीवास्तव, डॉ. अर्चना गर्ग, श्रीमती उर्वी ऊदल, श्रीमती अपर्णा थपलियाल, डॉ.सूक्ष्मलता महाजन, डॉ. मनोज कामदेव, श्रीमती अंजना जैन, श्रीमती कीर्ति रतन, श्रीमती रमा शर्मा, (जापान),डॉ. सुनीता चंदाला, श्री भूपेंद्र राघव, श्रीमती पूजा श्रीवास्तव, श्रीमती सुशीला देवी, डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति, श्री अशोक कुमार, पंडित नमन, श्री हिमांशु शुक्ल, डॉ.संजय जैन, श्री विवेक बादल बाजपुरी, श्री अशोक गुप्ता, श्री विनोद महाजन सरल, श्री गिरीश चावला, सुश्री प्रभा दीपक शर्मा, श्री शिवशंकर लोध राजपूत, श्री महेश प्रजापति, श्री ज्ञानेंद्र शर्मा प्रयागी, श्री हरेन्द्र पंडित, श्री सुरेन्द्र सिंह रावत, श्री नीरज कुमार, फोज़िया अफजल फिजा, श्री ओमप्रकाश शुक्ल ओम, डॉ. कविता मल्होत्रा, श्रीमती ऋतू रस्तोगी, श्री अंकुर रस्तोगी, श्रीमती बबीता झा, श्रीमती अर्चना झा, श्री सतेन्द्र सिंह, श्रीमती संगीता वर्मा, श्रीमती अर्चना मेहता, श्रीमती ईशा भारद्वाज, सुश्री नीलम गुप्ता, सुश्री मधु बाला रुस्तगी आदि सम्मानित हुए।

हिंदी की गूंज पानीपत में

हम सभी भारतवासियों के लिए गर्व की बात है कि टोक्यो जापान से निकलने वाली हिन्दी की गूंज की प्रथम एकमात्र पत्रिका की संरक्षिका एवं मुख्य संम्पादिका रमा शर्मा जी का भारत के हरियाण ाा प्रदेश पानीपत में आगमन हुआ।वह हिन्दी साहित्य को बढ़ावा देने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील हैं।

हम सभी के लिए हर्ष और गौरव का विषय यह है कि उन्होंने विदेशों में हमारी मातृभाषा हिंदी का प्रचार करने के लिए नारी कल्याण समिति की प्रधान कंचन सागर को पानीपत इकाई का प्रभारी बनाया है, कंचन सागर जी ने अपने साथ सरोज आहूजा जी को हिन्दी की गूंज पत्रिका की सदस्या बना कर जोड़ा।कंचन सागर जी के प्रयासों से पानीपत से ज्योत्सना गर्ग जी और नीलम मेहता जी को हिन्दी की गूंज परिवार में सम्मिलित किया गया फिर देहरादून की अंशु जैन जी को सदस्या बनाया गया।

रमा शर्मा जी ने कंचन सागर जी को गुणों का सागर कहा और उन्हें उन के प्रयासों के लिए बधाई भी दी। साथ सरोज आहुजा जी और ज्योत्सना गर्ग जी को मोमेंटो देकर सम्मानित किया।

यूट्यूब पर कविताएँ और कहानियाँ सुना कर हिन्दी को विदेशों में लोकप्रिय बनाने के प्रयास किए जा रहें हैं।

इसके अतिरिक्त अन्य शहरों से भी हिन्दी की गूंज पत्रिका की सदस्यता के लिए सम्मानित किया गया।

अब रमा जी द्वारा हिन्दी की गूंज पत्रिका के साथ साथ पंजाबी की गूंज पत्रिका का भी ज़ोर शोर से प्रचार किया जा रहा है। उनके द्वारा किया जाने वाला यह प्रयास सराहनीय है।

जिस लगन और उत्साह से रमा जी इस कार्य में जुटी है और हम सभी भारतवासियों को जोड़ने का कार्य कर रही हैं उसके लिए हम सभी दिल से उनका आभार प्रकट करते हैं।जो उन्होंने हिंदी हमारी मातृभाषा का प्रचार करने का बीड़ा उठाया है उन्हें इस साहसिक कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त हो और जिस उद्देश्य से इस सपने को लेकर वह आगे बढ़ी है,उनका वह सपना शीघ्र साकार हो,यही हम कामना करतें हैं।

कवर पृष्ठ

आन्या रॉय

आयु–11 वर्ष

कक्षा–7

स्कूल– माउंट कार्मल स्कूल, नई दिल्ली

v DVwj &fnl Ecj] 2023 (o'kZ&4 vad&14)

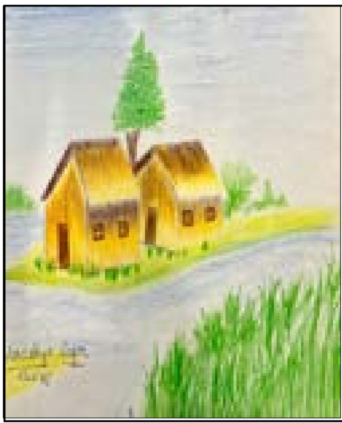
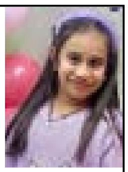

आराध्या सागर
कक्षा–4
आयु–9 वर्ष

ईशाना
कक्षा– 8
आयु–14 वर्ष

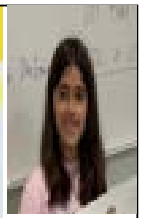

नीना गायत्री बदलानी, अमेरिका

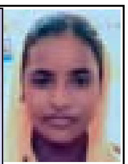

जसविंदर कौर

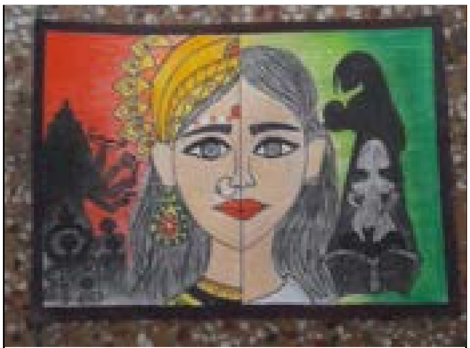

वैष्णवी पांडेय
प्रयागराज

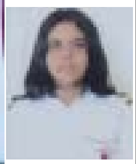

खुशी कौशाल
कक्षा–10
अंबाला

शिव्या पटेल (कक्षा 5)

जल है तो कल है"
कितनी खुबसूरत है यह पंक्ति
किसी ने सच ही कहा है –
कल–कल करता जल है,
जल है तो जीवन हर पल है,
जल है तो कल है।
जल संचय ही एक विकल्प है,
जल संग्रह ही हमारा संकल्प है।
बचाना जल हमें हर पल है,
जल है तो कल है।
कितनी स्वच्छंद नदियों की धार है,
करना जल प्रदूषण पर प्रहार है,
जल है तो जीवन एक उपहार है।
जल है तो जीवन हर पल है,
जल है तो कल है। मिश्रा

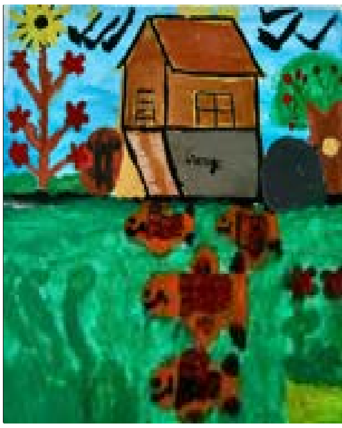
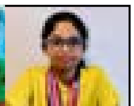

ध्वनि गुप्ता
कक्षा चतुर्थ
आयु दस वर्ष

अथर्व अमर देशमुख

आर्यन अतुल देशमुख

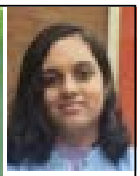

वाणी झा

हिंदी की गूँज

हिन्दी साहित्य परिषद कोलकाता,
रजिस्ट्रेशन न. IV - 190300567/2022

हिन्दी साहित्य परिषद कोलकाता, भारत
रजिस्ट्रेशन न. IV - 190300567/2022
दिनांक : 05.12.2023 - मंगलवार प्रात 11 बजे से रात्रि 7 बजे तक

हिन्दी साहित्य परिषद कोलकाता, भारत
रजिस्ट्रेशन न. IV - 190300567/2022
दिनांक : 05.12.2023

PROFESSIONAL STUDIES

टू मीडिया
हरिद्वार साहित्य महोत्सव

टू मीडिया

वात्सल्य

विश्व हिन्दी दिवस
अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन एवं संकल्प यात्रा